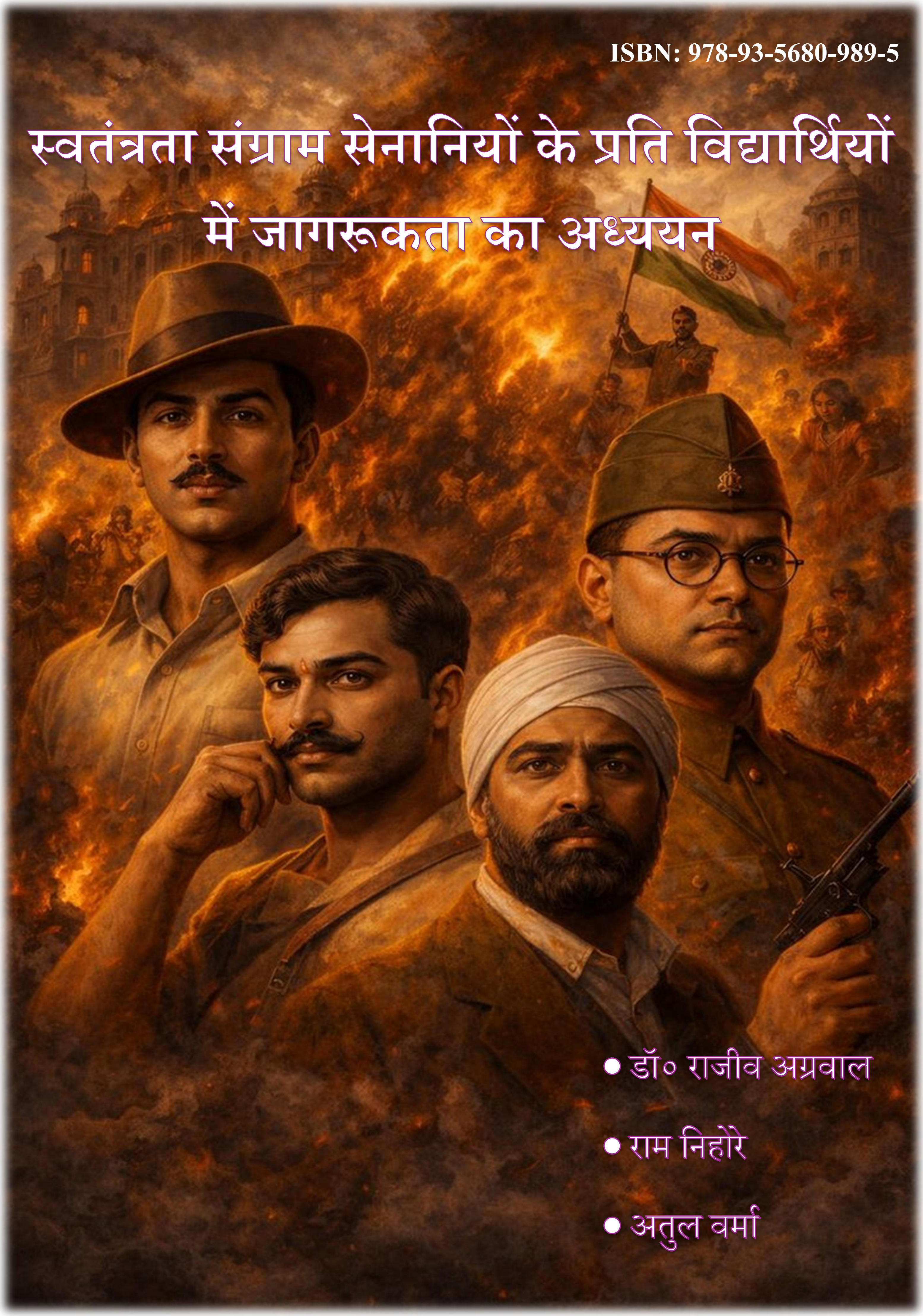
ISBN: 978-93-5680-989-5

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन



- डॉ० राजीव अग्रवाल
- राम निहोरे
- अतुल वर्मा

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर

अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

राम निहोरे

बी०एस–सी०, एम०एड०

अतुल वर्मा

बी०ए०, बी०एड०

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

डॉ० राजीव अग्रवाल

राम निहोरे

अतुल वर्मा

E-book संस्करण: 2026

मूल्य: ₹99

ISBN: **978-93-5680-989-5**

प्रकाशक-

अतुल वर्मा

केन कैनाल रोड, अत्रीनगर

अतर्रा, जिला-बाँदा (उ०प्र०)

मो-+91-6387722688

ई-मेल: atul.ver2208@gmail.com

प्राक्कथन

आकाश में कितने ही तारे चमकते हैं किंतु व्यक्ति की आंखें ध्रुव तारे को खोजती है, उपवन में कितने ही पुष्प विकसित होते हैं, किन्तु दृष्टि सुकोमल और सुगंध भरे गुलाब पर ही जाकर ठहरती हैं, उसी प्रकार इतिहास में अनेक लोग जन्म लेतें हैं परन्तु याद उन्हीं को किया जाता है, जिन्होंने देश के हित में अपना जीवन कुर्बान करके देश की आजादी का बिगुल बजाकर हमें स्वतंत्रता दिलायी। ये स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हमारे भारतीय नागरिकों के लिए प्रेरणा के स्रोत के रूप में आज भी जाने जाते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन** है। इस पुस्तक को 6 भागों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'अध्ययन का परिचय' है जिसमें शिक्षा विकास की प्रक्रिया, शिक्षा में इतिहास का स्थान, इतिहास शिक्षण की समस्याएं, समस्या का प्रादुर्भाव, समस्या कथन, अध्ययन का औचित्य, समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में सम्बंधित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है, जिसके अंतर्गत ऐतिहासिक विरासतों से सम्बंधित कतिपय शोध अध्ययन की समीक्षा एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय में चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की ऐतिहासिक सर्जना के अंतर्गत उनके देशभक्ति की भावनाओं का वर्णन किया गया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन का वर्णन किया गया है।

षष्टम अध्याय के अंतर्गत स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता, महत्व, चुनौतियां और समाधान, शोध का निष्कर्ष एवं उपायदेयता तथा भावी शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध–प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाये। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से हो पूर्ण सकता है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रन्थ सूची मैं उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः अनुभवी विद्वतगण त्रुटियों को अवगत कराने का कष्ट करें जिससे अगले संस्करण में त्रुटियों को दूर किया जा सके, हम अत्यंत आभारी रहेंगे।

डॉ० राजीव अग्रवाल

राम निहोरे

अतुल वर्मा

अनुक्रमणिका

द्वितीय सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

तृतीय चित्रकूट के सेनानी

चतुर्थ अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

प्रथम अध्याय

* अध्ययन परिचय *

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

प्रस्तावना

किसी भी देश की पहचान उस देश के सांस्कृतिक और पुरातात्विक विकास से होती है। भारत में भी वैदिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अनेक शहरों, मंदिरों और स्थलों इत्यादि की खोज की जा चुकी है, जिन्होंने इस देश के महत्व को विश्व स्तर पर कई गुना बढ़ाया है। भारत एक जीवंत और विविध सांस्कृतिक, विशाल भूगोल और इतिहास से जुड़ा हुआ देश है। देश की ऐतिहासिक उपलब्धियों के सबूत अभी भी वास्तुकला, विरासत स्थलों और परंपराओं के पूजा और अध्ययन में दिखाई देते हैं। इन विरासत स्थलों में से कुछ बहुत अधिक वैश्विक और राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित करते हैं। हालांकि, इन विरासत स्थलों को शहरीकरण की जोखिम, आर्थिक विकास और अप्रत्याशित परिवर्तन के निहितार्थ का सामना करना पड़ता है। विश्व धरोहर स्थलों, प्राचीन स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों का संरक्षण राष्ट्रीय महत्व को बनाये रखने का एक महत्वपूर्ण साधन है और पर्यटन के विकास, जो आर्थिक विकास के प्रमुख **श्रोत** में से एक है को बढ़ावा देने में मदद करता है।

चित्रकूट सभी तीर्थों का तीर्थ है। हिंदू आस्था के अनुसार, प्रयागराज (आधुनिक नाम इलाहाबाद) को सभी तीर्थों का राजा माना गया है; किन्तु चित्रकूट को उससे भी ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है। किंवदंती है कि जब तक अन्य तीर्थों की तरह चित्रकूट, प्रयागराज नहीं पहुंचे तब प्रयागराज को चित्रकूट की उच्चतर पदवी के बारे में बताया गया तथा प्रयागराज से अपेक्षा की गयी की वह चित्रकूट जाएँ, इसके विपरीत किचित्रकूट यहाँ आयें। ऐसी भी मान्यता है कि प्रयागराज प्रत्येक वर्ष पयस्विनी नदी में स्नान करके अपने पापों को धोने के लिए आते हैं। यह भी कहा जाता है कि जब प्रभु राम ने अपने पिता का श्राद्ध समारोह किया तो सभी देवी-देवता शुद्धि भोज (परिवार में किसी की मृत्यु के तेरहवें दिन सभी सम्बन्धियों और मित्रों को दिया जाने वाला भोज) में भाग लेने चित्रकूट आए। वे इस स्थान की सुंदरता को देखकर मोहित हो गए थे। भगवान राम की उपस्थिति से इसमें एक आध्यात्मिक आयाम जुड़ गया।

इसलिए वे वापस प्रस्थान करने के लिए तैयार नहीं थे। कुलगुरु वशिष्ठ, भगवान राम की इच्छा के अनुसार रहने की उनकी इच्छा को समझते हुए विसर्जन (प्रस्थान) मंत्र को बोलना भूल गए। इस प्रकार सभी देवी देवताओं ने इस जगह को अपना स्थायी आवास बना लिया और वहां हमेशा उपस्थित रहते हैं। आज भी यहां तक कि जब एक अकेला पर्यटक भी प्राचीन चट्टानों, गुफाओं, आश्रमों और मंदिरों की विपुल छटा बिखरे हुए इस स्थान में पहुंचता है तो पवित्र और आध्यात्मिक साधना में लगे ऋषियों के साथ वह अनजाने में ही खुद को पवित्र संस्कारों और ज्ञान प्राप्ति के उपदेशों और कृतियों से भरे माहौल में खो जाता है और एक अलग दुनिया के आनंद को प्राप्त करता है। विश्व के सभी हिस्सों से हजारों तीर्थ यात्री और सत्य के साधक इस स्थान में अपने जीवन को सुधारने और उन्नत करने की एक अदम्य इच्छा से प्रेरित होकर आश्रय लेते हैं।

भारतीय साहित्य और पवित्र ग्रन्थों में प्रछयात, वनवास काल में साढ़े ग्यारह वर्षों तक भगवान राम, माता सीता तथा श्रीराम के अनुज लक्ष्मण की निवास स्थली रहा चित्रकूट मानव प्रसिद्ध है। एक पर्यटक यहाँ के खूबसूरत झरने, चंचल युवा हिरण और नाचते मोर को देखकर रोमांचित होता है, तो एक तीर्थयात्री पयस्विनी / मन्दाकिनी में डुबकी लगाकर और कामदगिरी की धूल में तललीन होकर अभिभूत होता है। प्राचीन काल से चित्रकूट क्षेत्र ब्रह्मांडीय चेतना के लिए प्रेरणा का एक जीवंत केंद्र रहा है। हजारों भिक्षुओं, साधुओं और संतों ने यहाँ उच्च आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त की है और अपनी तपस्या, साधना, योग, तपस्या और विभिन्न कठिन आध्यात्मिक प्रयासों के माध्यम से विश्व पर लाभदायक प्रभाव डाला है। प्रकृति ने इस क्षेत्र को बहुत उदारतापूर्वक अपने सभी उपहार प्रदान किये हैं, जो इसे दुनिया भर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम बनाता है। अत्री, अनसुइया, दत्तात्रेय, महर्षि मार्कंडेय, सारभंग, सुतीक्षण और विभिन्न अन्य ऋषि, संत, भक्त और विचारक सभी ने इस क्षेत्र में अपनी आयु व्यतीत की और जानकारों के अनुसार ऐसे अनेक लोग आज भी यहाँ की विभिन्न गुफाओं और अन्य क्षेत्रों में तपस्यारत हैं। इस प्रकार इस क्षेत्र की एक आध्यात्मिक सुगंध है, जो पूरे वातावरण में व्याप्त है और यहाँ के प्रत्येक दिन को आध्यात्मिक रूप से जीवंत बनाती है।

प्राचीन काल से ही चित्रकूट का एक विशिष्ट नाम और पहचान है। इस स्थान का पहला ज्ञात उल्लेख वाल्मीकि रामायण में है जो कि पहले कवि द्वारा रचित सबसे पहला महाकाव्य माना जाता है। एक अलिखित संरचना

के रूप में, विकास के इस महाकाव्य को, पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक परंपरा द्वारा सौंप दिया गया था। जैसा कि वाल्मीकि, जो राम के समकालीन (या उनसे पहले) माने जाते हैं, और मान्यता है कि उन्होंने राम के जन्म से पहले ही रामायण का निर्माण किया गया था, से इस स्थान की प्रसिद्धि व पुरातनता को अच्छी तरह से निरूपित किया जा सकता है। महर्षि वाल्मीकि चित्रकूट को एक महान पवित्र स्थान के रूप में चित्रित करते हैं, जो महान ऋषियों द्वारा बसाया गया है और जहाँ बंदर, भालू और अन्य विभिन प्रकार के पशु-पक्षी और वनस्पतियां पाई जाती हैं। ऋषि भारद्वाज और वाल्मीकि दोनों इस क्षेत्र के बारे में प्रशंसित शब्दों में बोलते हैं और श्रीराम को अपने वनवास की अवधि में इसे अपना निवास बनाने की सलाह देते हैं, क्योंकि यह स्थान किसी व्यक्ति की सभी इच्छाओं पूर्ण करने और उसे मानसिक शांति देने में सक्षम था। जिससे वह अपने जीवन में सर्वोच्च लक्ष्यों को प्राप्त कर सके। भगवान राम स्वयं इस जगह के मोहक प्रभाव को मानते हैं। रामोपाख्यान' और महाभारत के विभिन्न स्थानों पर तीर्थों के विवरण में चित्रकूट एक को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

1.1 शिक्षा: विकास की प्रक्रिया

शिक्षा ही मानव विकास का मूल आधार है | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य अपनी शारीरिक मानसिक, संवेगात्मक एवं आध्यात्मिक शक्तियों को अनुशासित करता है। इस प्रकार मनुष्य के स्वानुशासन के विकास में 'शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब से बालक इस संसार में जन्म लेता है, तभी से वह वातावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करना प्रारंभ कर देता। वातावरण एवं पर्यावरण के साथ अनुकूलन स्थापित करने में शिक्षा की महती भूमिका होती है।

प्रारंभिक अवस्था में बालक की सीखने की गति प्राय: कम होती है। धीरे-धीरे जब बच्चा बड़ा होता है तो वह वातावरण से कुछ नए अनुभव अर्जित करता है और उसके फल स्वरूप उसका व्यवहार परिवार एवं समाज तथा समुदाय के अनुकूल हो जाता है। बालक के अनुभव का यह क्रम दिन-प्रतिदिन बढ़ता रहता है, जिसके परिणामस्वरूप उसका व्यवहार संयमित होने लगता है शिक्षा के द्वारा ही एक असभ्य, अविकसित, अपरिपक्व मानव, सुसभ्य एवं सुविकसित इंसान के रूप में परिवर्तित हो जाता है | शिक्षा केवल मानव जाति के व्यवहार में परिवर्तन लाने तक ही सीमित नहीं है " अपितु उसका चारित्रिक विकास भी करती है संसार के अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य पर शिक्षा का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है क्योंकि मनुष्य एक विवेकशील एवं बुद्धिमान प्राणी है शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य

के पशुवत व्यवहार में परिवर्तन करके उसे एक सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। सामाजिक प्राणी बनने की प्रक्रिया में परिवार विद्यालय, समाज तथा समुदाय बालक की सहायता करते हैं। बालक की शिक्षा के विकास में प्राथमिक माध्यमिक तथा उच्च स्तर पर अलग-अलग कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं, जिससे बालक के सर्वागीण विकास के उद्देश्य की प्राप्ति आसानी से की जा सके। बालक की शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है | उच्च माध्यमिक शिक्षा स्तर पर ही बालक की शैक्षिक व्यावसायिक एवं सामाजिक परिपक्वता की प्राप्ति होती है, जो उसके आगे आने वाले भविष्य की दिशा निर्धारित करती है। समाज की आर्थिक व्यवस्था चार प्रकार की श्रेणियों में विभक्त रही है ब्राह्मण वर्ग से अपेक्षा की जाती थी कि वह समुदाय को पुरोहित, चिंतक, लेखक, विधायक, धार्मिक नेता तथा पथ प्रदर्शक देंगे।

क्षत्रिय वर्ण समाज को योद्धा शासक प्रशासक, वैश्य समाज को उत्पादक, कृषक, शिल्पकार, व्यापारी देते थे। शूद्र वर्ण छोटे-छोटे कार्यों के लिए भाँति भाँति की नौकरियाँ करते थे | इस प्रकार की प्रणाली में धर्म चिंतन तथा विद्या को सर्वश्रेष्ठ स्थान दिया गया | सामाजिक व्यवस्था जन्म के आधार पर नहीं, अपितु व्यक्ति क्षमता व आंतरिक व्यवस्था के आधार पर निर्धारित की गई | वर्णों के आधार पर तदनुरूपी चार पुरुषार्थ स्थापित किए गए जो उस समय की दार्शनिक सोच के द्योतक हैं- ब्राह्मण-मोक्ष, क्षत्रिय काम, वैश्य अर्थ, शूद्र-धर्म कालांतर में यही वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिणत हुई तथा जातीय संघर्ष का जन्म हुआ जो आज के सूचना तकनीकी युग में भी यह संघर्ष उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यमान है, चाहे वह राजनीति में हो, शिक्षा में हो, या शासन में हो, यह राष्ट्र निर्माण में बाधा स्वरूप है। इस सामाजिक विघटन को दूर करने के लिए समाज में ऐसी शिक्षा का होना नितांत आवश्यक है जो हमें संकीर्ण सोच से ऊपर उठाकर वैश्विक स्तर तक पहुंचा सके, और इस सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी युग में एक सकारात्मक सोच का विकास कर सके। वर्तमान समय में उच्च माध्यमिक शिक्षा की जो स्थिति है उसमें कुशल शिक्षक के साथ वर्तमान तकनीकी भी महत्वपूर्ण भूमिका में होती है, क्योंकि उच्च माध्यमिक शिक्षा के संदर्भ भारत की स्थिति अभी निराशाजनक है |

1.2 शिक्षा में इतिहास का स्थान

इतिहास-लेख के शासन एवं श्रोत से दो चीजों का बोध होता है।

(1) इतिहास के विकास एवं क्रिया पद्धति का अध्ययन।

(2) किसी विषय के इतिहास सम्बन्धित एकत्रित सामग्री।

इतिहासकार इतिहास शास्त्र का अध्ययन विषयवार करते हैं। भारत का इतिहास, जापानी साम्राज्य का इतिहास आदि। जैसे- इतिहास के मुख्य आधार युगविशेष और घटनास्थल के वे अवशेष हैं जो किसी न किसी रूप में प्राप्त होते हैं। जीवन की बहुमुखी व्यापकता के कारण स्वल्प सामग्री के सहारे विगत युग अथवा समाज का चित्रनिर्माण करना दुःसाध्य है। सामग्री जितनी ही अधिक होती जाती है उसी अनुपात से बीते युग तथा समाज की रूपरेखा प्रस्तुत करना साध्य होता जाता है। पर्याप्त साधनों के होते हुए भी यह नहीं कहा जा सकता कि कल्पनामिश्रित चित्र निश्चित रूप से शुद्ध या सत्य ही होगा। इसलिए उपयुक्त कमी का ध्यान रखकर कुछ विद्वान कहते हैं कि इतिहास की संपूर्णता असाध्य सी है, फिर भी यदि हमारा अनुभव और ज्ञान प्रचुर हो, ऐतिहासिक सामग्री की जाँच पड़ताल को हमारी कला तर्कप्रतिष्ठित हो तथा कल्पना संयत और विकसित हो तो अतीत का हमारा चित्र अधिक मानवीय और प्रामाणिक हो सकता है। सारांश यह है कि इतिहास की रचना में पर्याप्त सामग्री, वैज्ञानिक ढंग से उसकी जाँच, उससे प्राप्त ज्ञान का महत्व समझने के विवेक के साथ ही साथ ऐतिहासिक कल्पना की शक्ति तथा सजीव चित्रण की क्षमता की आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास न तो साधारण परिभाषा के अनुसार विज्ञान है और न केवल काल्पनिक दर्शन अथवा साहित्यिक रचना है। इन सबके यथोचित सम्मिश्रण से इतिहास का स्वरूप रचा जाता है।

इतिहास न्यूनाधिक उसी प्रकार का सत्य है जैसा विज्ञान और दर्शनों का होता है। जिस प्रकार विज्ञान और दर्शनों में हेरफेर होते हैं उसी प्रकार इतिहास के चित्रण में भी होते रहते हैं। मनुष्य के बढ़ते हुए ज्ञान और साधनों की सहायता से इतिहास के चित्रों का संस्कार उनकी पुनरावृत्ति और सुसंस्कृत होती रहती है। प्रत्येक युग अपने-अपने प्रश्न उठाता है और इतिहास से उनका समाधान ढूंढता रहता है। इसीलिए प्रत्येक युग समाज अथवा व्यक्ति इतिहास का दर्शन अपने प्रश्नों के दृष्टिबिंदुओं से करता रहता है। यह सब होते हुए भी साधनों का वैज्ञानिक अन्वेषण तथा निरीक्षण, कालक्रम का विचार, परिस्थिति की आवश्यकताओं तथा घटनाओं के प्रवाह की बारीकी से छानबीन और उनसे परिणाम निकालने में सतर्कता और संयम की अनिवार्यता अत्यंत आवश्यक है। उनके बिना ऐतिहासिक कल्पना और कपोलकल्पना में कोई भेद नहीं रहेगा।

इतिहास की रचना में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि उसमें जो चित्र बनाया जाए वह निश्चित घटनाओं और परिस्थितियों पर दृढ़ता से आधारित हो । मानसिक काल्पनिक अथवा मनमाने स्वरूप को खड़ा कर ऐतिहासिक घटनाओं द्वारा उसके समर्थन का प्रयत्न करना अक्षम्य दोष होने के कारण सर्वथा वर्जित है। यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि इतिहास का निर्माण बौद्धिक रचनात्मक कार्य है अतएव अस्वाभाविक और असंभाव्य को प्रमाणकोटि में स्थान नहीं दिया जा सकता। इसके सिवा इतिहास का ध्येय विशेष एवं यथावत् ज्ञान प्राप्त करना है। किसी विशेष सिद्धांत या मत की प्रतिष्ठा, प्रचार या निराकरण अथवा उसे किसी प्रकार का आंदोलन चलाने का साधन बनाना इतिहास का दुरुपयोग करना है। ऐसा करने से इतिहास का महत्व ही नहीं नष्ट हो जाता, वरन् उपकार के बदले उससे अपकार होने लगता है ,जिसका परिणाम अंततोगत्वा भयावह होता है।

1.3 इतिहास शिक्षण की समस्याएं

इतिहास शिक्षण की वास्तविक संरचना को समझने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

- **इतिहास का डरावना ज्ञान**

एक सामान्य इतिहास शिक्षक आमतौर पर अपने विषय में ज्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है और वह इतिहास के अपने ज्ञान के पूरक के लिए बहुत उत्साही नहीं है जो उसने कॉलेज की उम्र में हासिल किया है। उसे न तो पढ़ने में दिलचस्पी है और न ही सैर-सपाटे में। वह स्कूल में खुद को वैज्ञानिक तरीके से प्रशिक्षित करने के लिए इच्छुक नहीं है। आम तौर पर ऐतिहासिक तथ्यों के बारे में उनकी गलत धारणाएं हैं और इससे विनाशकारी स्थिति पैदा होती है। इस तरह के शिक्षक से विद्यार्थियों को विकृत तथ्य प्रस्तुत करने की संभावना होती है और इस प्रकार उनके व्यक्तित्व को विकृत किया जा सकता है।

० विश्व इतिहास का ज्ञान खो देता है

आमतौर पर हमारे स्कूलों में इतिहास के शिक्षकों में विश्व इतिहास के ज्ञान की कमी पाई जाती है। ज्ञान की इस कमी के कारण वे ऐतिहासिक तथ्यों को उनके वास्तविक प्रभाव में देखने में विफल होते हैं। दुनिया के किसी भी हिस्से में

हर सामाजिक या राजनीतिक आंदोलन का प्रभाव पूरी दुनिया पर पड़ता है, इसलिए किसी के लिए भी अपने देश के इतिहास से काफी हद तक निपटना संभव नहीं है। इस प्रकार विश्व इतिहास का ज्ञान किसी भी सफल इतिहास शिक्षक के लिए जरूरी है, इसके बिना उसका शिक्षण अपूर्ण रहेगा।

० धार्मिक या सामाजिक पूर्वाग्रह

अधिकांश शिक्षक ऐसे पूर्वाग्रह से ग्रस्त हैं और इससे पीड़ित कोई भी व्यक्ति इतिहास का सही ज्ञान नहीं दे सकता है। यदि कोई हिंदू शिक्षक कट्टर है और नस्लीय पूर्वाग्रह रखता है तो वह मुसलमानों के इतिहास को सही और निष्पक्ष रूप से नहीं सिखा सकता है। वह निश्चित रूप से शिक्षण में बेईमान होंगे क्योंकि उनके लिए यह समझाना काफी मुश्किल होगा कि मुसलमान कैसे हिंदू शासकों पर विचार करते हैं। अन्य धर्मों के शिक्षक के लिए भी ऐसी ही स्थिति होगी।

० राष्ट्रीय पूर्वाग्रह

इतिहास के शिक्षण में राष्ट्रीय पूर्वाग्रह उतना ही हानिकारक है जितना कि धार्मिक या नस्लीय पूर्वाग्रह। "मेरा देश, सही या गलत" एक निंदा का नारा है। देशभक्ति के महान गुण हैं और एक देशभक्ति होनी चाहिए लेकिन देशभक्ति और राष्ट्रीय पूर्वाग्रह के अलग-अलग अर्थ हैं। एक सच्चा देशभक्त अपने देश की कमजोरियों को देखता है और स्वीकार करता है जबकि राष्ट्रीय पूर्वाग्रह रखने वाला व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय पूर्वाग्रह से पीड़ित इतिहास का एक शिक्षक अपने विद्यार्थियोंको उनके देश की कमजोरियों के बारे में कभी नहीं समझाएगा।

यदि भारत में एक इतिहास के शिक्षक के पास राष्ट्रीय पूर्वाग्रह है, तो वह बच्चों के सामने यह नहीं समझाएगा कि अंग्रेज अपने देश की कमजोरियों के कारण इस देश में अपना शासन करने में सक्षम थे। दूसरी ओर, वह विद्यार्थियोंको बताएगा कि भारतीय शासकों में कोई कमजोरियां नहीं थीं और यह केवल अंग्रेजों की चालाक थी कि वे भारतीयों पर हावी थे। एक इतिहास शिक्षक को देशभक्त होना चाहिए लेकिन उसे कभी राष्ट्रीय पूर्वाग्रह नहीं होना चाहिए, उसे अपने और अपने लोगों में अंतर्राष्ट्रीय समझ विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

० शिक्षण की दोषपूर्ण विधि

हमारे देश में आम तौर पर इतिहास को मृत राजकुमारों और बीती घटनाओं से निपटने के लिए माना जाता है और इस तरह सेशिक्षा निर्जीव हो जाएगी। हालांकि, इतिहास एक जीवित विषय है क्योंकि यहमानव के नाटक या दुनिया के मंच से संबंधित है जो अभी भी बढ़ रहा है। इस नाटक को बच्चों के सामने कक्षा-कक्ष में विषय केरूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके लिए एक इतिहास शिक्षक को सक्रिय औरअनुभव से भरा होना चाहिए|

० सहसंबंध की कमी

इतिहास पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक अन्य विषयों के साथ इतिहास को सहसम्बंधितकरने में विफल होते हैं। चूंकि किसी भी विषय को अलगाव में नहीं पढ़ाया जा सकता है, इसलिए इतिहास को कभी भी इस तरह से नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहास के शिक्षक के लिए भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र, शिल्प या किसी अन्य विषय के साथ सहसम्बंध बनाना हमेशा संभव है।

चित्रकूट जनपद की ऐतिहासिक विरासत

हनुमान धारा

रामघाट

कामदगिरी

भरत मिलाप मंदिर

भरतकूप

स्फटिक शीला

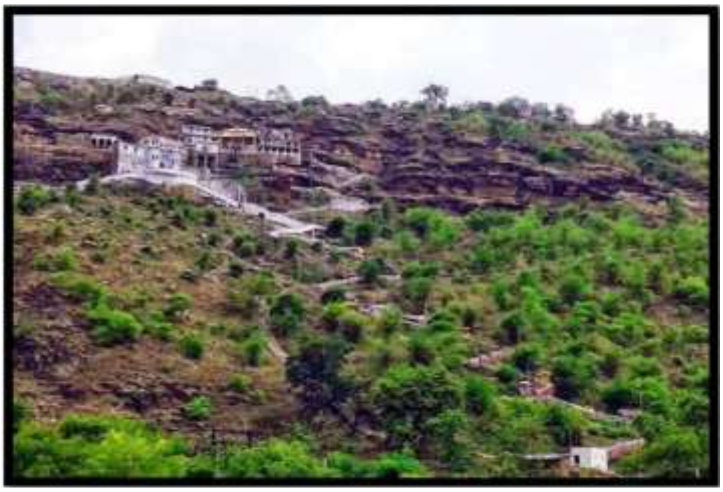
राम दर्शन

सतीअनुसुइया आश्रम

गुप्तगोदावरी आश्रम

गणेश बाग ,आदि

हनुमान धारा -



यह एक विशाल चट्टान के ऊपर स्थित हनुमान मंदिर है। मंदिर तक पहुँचने के लिए कई खड़ी सीढ़ियों की चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। इन सीढ़ियों पर चढ़ते समय चित्रकूट के शानदार दृश्य देखे जा सकते हैं। पूरे रास्ते में हनुमान जी की प्रार्थना योग्य अनेक छोटी मूर्तियां स्थित हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार हनुमान जी के लंका में आग लगा कर वापस लौटने पर इस मंदिर के अंदर भगवान राम, भगवान हनुमान के साथ रहे। यहां भगवान राम ने उनके गुस्से को शांत करने में उनकी मदद की थी। इस स्थान के आगे भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी को समर्पित कुछ और मंदिर हैं।

रामघाट

मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित यह घाट एक शांत तीर्थ स्थल है। इस नदी के किनारे इस स्थान को भगवान राम,



देवी सीता और भगवान लक्ष्मण के साथ संत गोस्वामी तुलसीदास का साक्षात्कार स्थल माना जाता है। यह चित्रकूट के प्रमुख घाटों में से एक है जहाँ अध्यात्मिक व धार्मिक गतिविधियों के कारण भीड़ बनी रहती है। प्रातः काल से यहाँ दर्शनार्थ जाया जा सकता है। नदी के किनारे रंग बिरंगी नौकाओं के सुंदर दृश्यों के साथ यहाँ सायंकाल होने वाली आरती के दर्शन का लाभ अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

कामदगिरी

कामदगिरी, चित्रकूट का आध्यात्मिक केंद्रबिंदु है, जो उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित एक पवित्र पर्वत है। यह न केवल एक भूवैज्ञानिक संरचना है, बल्कि लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का प्रतीक भी है। मान्यता है कि भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास काल का महत्वपूर्ण समय यहीं बिताया था, जिससे इस स्थान की महिमा और बढ़ जाती है। इसी कारण, कामदगिरी को 'कामनाओं का पर्वत' कहा जाता है, जहाँ भक्त अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए लगभग पाँच किलोमीटर की परिक्रमा करते हैं। इस परिक्रमा मार्ग में कई प्राचीन मंदिर स्थित हैं, जिनमें भगवान कामतानाथ का मुख्य



मंदिर प्रमुख है, जिन्हें भगवान राम का ही एक स्वरूप माना जाता है। चित्रकूट के किसी भी कोने से देखने पर यह पर्वत एक धनुषाकार आकृति में दिखाई देता है, जो इसकी विशिष्ट पहचान है। यहाँ वर्ष भर भक्तों का तांता लगा रहता है, लेकिन रामनवमी, दीपावली और अमावस्या के अवसर पर विशेष मेले आयोजित होते हैं, जिनमें भारी संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं। इस प्रकार, कामदगिरी न केवल एक दर्शनीय स्थल है, बल्कि भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का एक जीवंत उदाहरण भी है।

भरत मिलाप मंदिर



भरत मिलाप मंदिर, चित्रकूट के पवित्र स्थलों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह मंदिर उस ऐतिहासिक और भावनात्मक मिलन की स्मृति में बनाया गया है जब

भगवान राम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटने से पूर्व अपने प्रिय भाई भरत से यहीं मिले थे। भरत, जो भगवान राम के वनवास के दौरान उनकी पादुकाओं को सिंहासन पर रखकर राज-काज संभाल रहे थे, राम के वापस आने की खबर सुनकर व्याकुल होकर उनसे मिलने चित्रकूट पहुँचे थे। इस स्थान पर दोनों भाइयों का प्रेम और समर्पण अत्यंत मार्मिक था, और इसी पवित्र भेंट की याद में यह मंदिर स्थापित किया गया है।

यह मंदिर कामदगिरी पर्वत के परिक्रमा मार्ग के निकट स्थित है और श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। मंदिर की वास्तुकला सादगी और भक्ति भाव को दर्शाती है। यहाँ स्थापित मूर्तियाँ भगवान राम और भरत के उस भावपूर्ण मिलन के दृश्य को जीवंत करती हैं। भक्त यहाँ आकर उस अटूट भाईचारे और कर्तव्यनिष्ठा की भावना को महसूस करते हैं। भरत मिलाप मंदिर न केवल एक धार्मिक स्थल है, बल्कि यह पारिवारिक प्रेम और त्याग के उच्च आदर्शों का भी प्रतीक है, जो आज भी लोगों को प्रेरित करता है। चित्रकूट आने वाले तीर्थयात्री इस मंदिर के दर्शन अवश्य करते हैं ताकि उस पवित्र मिलन की भावना को अपने हृदय में संजो सकें।

भरतकूप



भरत कूप, भरतकूप गांव के निकट एक विशाल कुआं है जो चित्रकूट के पश्चिम में लगभग किमी के दूर स्थित है। यह माना जाता है कि भगवान राम के भाई भरत ने अयोध्या के राजा के रूप में भगवान राम को सम्मानित करने के लिए सभी पवित्र तीर्थों से जल एकत्र किया था। भरत, भगवान राम को अपने राज्य में लौटने और राजा के रूप में अपनी जगह लेने के लिए मनाने में असफल रहे। तब भरत ने महर्षि अत्री के निर्देशों के अनुसार वह पवित्र जल इस कुएं में डाल दिया। ऐसीमान्यता है कियहाँ के जल से स्नान करने का अर्थ सभी तीर्थों में स्नान करने के समान है। यहाँ भगवान राम के परिवार को समर्पित एक मंदिर भी दर्शनीय हैं।

स्फटिक शीला



स्फटिक शिला एक छोटी सी चट्टान है, जो रामघाट से ऊपर की ओर मंदाकिनी नदी के किनारे स्थित है। यह ऐसा स्थान माना जाता है जहां माता सीता ने श्रृंगार किया था। इसके अलावा किंवदंतीहै कि यह वहीजगह है जहां भगवान इंद्र के बेटे जयंतने एक कौवा के रूप में माता सीता के पैर में चोंच मारी थी। ऐसा कहा जाता है कि इस चट्टान में अभी भी राम के पैर की छाप है।

राम दर्शन



राम दर्शन मंदिर, एक अनोखा मंदिर है, जहां पूजा और प्रसाद निषिद्ध हैं। यह मंदिर लोगों को मूल्यवान नैतिक पाठ प्रदान करके अभिन्न मानवता में प्रवेश करने में मदद करता है। यह मंदिर सांस्कृतिक और मानवीय पहलुओं का एकीकरण है, जो कभी भी इस मंदिर में जाने पर मन में एक निशान छोड़ता है। मंदिर भगवान राम के जीवन और उनके अंतर व्यक्तिगत संबंधों की जानकारी देता है। परिसर में प्रवेश करने के लिए प्रवेश टिकट की व्यवस्था है।

1.4 समस्या का प्रादुर्भाव

अनुसंधान समस्या की उत्पत्ति प्रायः इस अनुभूति के द्वारा होती है कि किसी क्षेत्र विशेष में किसी कार्य के सुचारू ढंग से संचालन में कोई बाधा है एवं उस बाधा को दूर किया जा सकता है। वस्तुत: आवश्यकता, जिज्ञासा व असन्तोष को आविष्कार की पृष्ठभूमि तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

किसी भी राष्ट्र का इतिहास उसके वर्तमान और भविष्य की नींव होता है। इतिहास जितना गौरवमयी होगा वैश्विक स्तर पर उसका स्थान उतना ही ऊंचा माना जाएगा। देश का यूं तो बीता हुआ कल कभी वापस नहीं आता लेकिन उस काल में बनी इमारतें और लिखे गए साहित्य उन्हें हमेशा सजीव बनाए रखते हैं। यही वजह है कि ऐसी वर्षों पुरानी या यूँ कहें कई सदियों पुरानी ऐतिहासिक इमारतें जो संबंधित राष्ट्र के वर्षों पुरानी इतिहास की गौरव गाथा कहती हैं, उनके संरक्षण का पूरा-पूरा प्रयास किया जाता है। भारत में भी कई ऐतिहासिक मंदिर, पुरास्थल एवं अन्य इमारतें हैं जो स्वयं हमारे विशाल और सम्मानजनक इतिहास की कहानी कहती हैं। लेकिन समय के साथ-साथ इन इमारतों और उनमें रखे गए साहित्य को बहुत नुकसान पहुंचा है । हमने भी परवाह किए बगैर उन अनमोल धरोहरों को मनमाने ढंग से खंडित किया है। यह भी सत्य है कि वक्त रहते यदि हम अपनी भूल को पहचान नहीं पाए तो अपनी विरासत को धीरे-धीरे खो देंगे आज आवश्यकता यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक हो साथ ही आवश्यकता इस बात की भी है कि पुरानी हो चुकी जर्जर इमारतों की मरम्मत की जाए तथा भवनों और महलों को पर्यटन स्थल बना कर उनकी चमक को बनाये रखने का प्रयास किया जाये किताबों और स्मृति चिन्हों को संग्रहालय में जगह दी जाए ,यह तभी सम्भव होगा जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी विरासतों के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होगा। विरासतों को संभाल कर रखना इतना आसान नहीं है इसलिए यूनेस्को द्वारा हर वर्ष विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है जिसका स्पष्ट उद्देश्य इन इमारतों और उनमें रखी गई धरोहरों की देखभाल करना है। ऐसी ही महत्वपूर्ण इमारतों में से एक चित्रकूट स्थित गणेश बाग भी है।

अतः उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत समस्या का चयन किया गया है। इस समस्या के अध्ययन से केवल विद्यार्थियों का ही नहीं अपितु अभिभावक, शिक्षक, समाज तथा राष्ट्र को भी लाभ होगा।

1.5 समस्या कथन

प्रस्तुत अध्ययन का समस्या कथन इस प्रकार है;

गणेश बाग, चित्रकूट की ऐतिहासिक विरासत के प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन।

1.6 अध्ययन का औचित्य

शोधकर्ता को समस्या का चयन करने से पूर्व उसके औचित्य एवं उपयोगिता के सम्बन्ध में विचार कर लेना चाहिये। शोध वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित संज्ञान है। शोध में गहन निरीक्षण का प्रत्यय होता है। इसमें किसी सीमित क्षेत्र की किसी समस्या का सर्वांगीण विश्लेषण होता है। उसकी निरीक्षण प्रक्रिया में वैज्ञानिक निरीक्षण ही क्रमबद्ध सोद्देश्य सुनियोजित होते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में गणेश बाग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है। हमारी ऐतिहासिक विरासतें हमें अतीत के बारे में बहुत कुछ सिखाती और बतलाती है। साथ ही इस ऐतिहासिक विरासत को देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक यहाँ आते हैं। वर्तमान समाज एवं आने वाली पीढ़ियों को ऐतिहासिक स्थलों को देखने की जिज्ञासा होती है। दर्शनीयता, कलात्मकता दृश्यों के प्रति आकर्षण व्यक्ति को बार-बार उस स्थल पर आने की प्रेरणा प्रदान करता है। उन्हें दुर्गम स्थलों गुफाओं, प्राकृतिक दृश्यों को देखने की जिज्ञासा रहती है साथ ही विभिन्न सामाजिक संगठनों, वर्गों, समुदायों के लोग जब किसी स्थान विशेष पर आते हैं तो स्थानीय जनता का उनसे संपर्क होता है। वे उन्हें आवश्यकतानुसार आश्रय, भोजन आदि संसाधनों को उपलब्ध कराते हैं। उनकी हर प्रकार से व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार से उनमें एक दूसरे को समझने व परखने के साथ-साथ उत्तरदायित्व पूर्ण भावना की अनुभूति होती है। किन्तु आज हमारी ऐतिहासिक विरासतों को पर्याप्त संरक्षण एवं लोगों को सही जानकारी न होने की वजह से इनका अस्तित्व समाप्त हो रहा है। इसके आस-पास साफ सफाई न होने से लोगों का रुझान इस ओर कम होता जा रहा है। इस समय कई स्मारक अतिक्रमण का शिकार हो गए हैं। आस-पास बस्ती होने की वजह से इसके अस्तित्व को खतरा हो रहा है। जब तक लोग अपने ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरुक नहीं होंगे तब तक

इन विरासतों को संरक्षण दे पाना मुश्किल होगा। अतः प्रस्तुत अध्ययन इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर किया गया है।

1.7 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

परिभाषीकरण से तात्पर्य अध्ययन की समस्या को चिंतन द्वारा सम्पूर्ण समस्या क्षेत्र से बाहर निकल कर स्पष्ट करना है। प्रस्तुत अध्ययन के शीर्षक में प्रयुक्त कठिन शब्दों की व्याख्या निम्नानुसार है-

चित्रकूट: यह शहर बुंदेलखंड क्षेत्र में स्थित है। इस शहर का नाम यहां पर स्थित अनेको मन्दिरों एवं मूर्तियों के नाम पर है। चित्रकूट भगवान कामतानाथ की तपोभूमि है। यह शहर मन्दाकिनी नदी के तट पर स्थित है। चित्रकूट पूर्व में बांदा जिले के अन्तर्गत आने वाला एक ऐतिहासिक स्थान था जो बाद में बांदा जिले से अलग होकर नया जिला बना। यह शहर जिले का मुख्यालय भी है। चित्रकूट के चारो तरफ अनेक पर्यटन एवं धार्मिक स्थल हैं। यहाँ से करीब 60 किमी की दूरी पर बांदा तथा कालिंजर की दूरी भी लगभग 6 किमी है। चित्रकूट मन्दाकिनी नदी के तट पर बसे होने व यहां पर स्थित मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है, जिनका सैकडो वर्ष पुराना इतिहास रहा है। यहाँ विभिन्न ऐतिहासिक हिन्दू मंदिर हैं। यहाँ की मन्दाकिनी नदी जिले की एक प्रमुख नदी है। यहाँ के प्रमुख ऐतिहासिक मंदिरों में कोठी तालाब का शिव मंदिर, गणेश बाग का शिव गणेश मंदिर, चित्रकूट का कामतानाथ मन्दिर व रामघाट का मतगयेन्द्रनाथ मन्दिर है। यहां पर अनेक ऐतिहासिक स्थल जैसे कर्वी का राजा महल, तरौहा का किला, कोठी तालाब व गणेश बाग आदि प्रमुख हैं। जो कि वर्तमान में पुरातत्व विभाग के अधिकार में है। चित्रकूट बुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्रमुख शहर है। चित्रकूट मुख्यतः प्रकृति की गोद में बसा एक प्राकृतिक स्थान है जहां पर अनेकों तरह के पेड़ पौधे पाए जाते हैं जिनका औषधीय रूप में बहुत महत्व है। यहां पर देश-विदेश से लोग घूमने आते हैं और यहां के मंदिरों एवं प्रकृति की छटा का आनंद लेते हैं। यहां से 35 किलोमीटर की दूरी पर यमुना नदी के तट पर स्थित राजापुर नामक स्थान पर महाकवि तुलसीदास जी का जन्म हुआ था जिन्होंने चित्रकूट में मां मंदाकिनी के तट पर रामचरित मानस नामक महाकाव्य लिखा था। चित्रकूट जिला भगवान राम की स्मृतियों से जुड़ा धार्मिक जिला है। यह अनेक महापुरुषों की जन्म स्थली एवं कर्म भूमि रही है। चित्रकूट एक ऐतिहासिक नगर है, जिसका वर्णन प्राचीन ग्रंथों में भी मिलता है।

क्षेत्रफल: चित्रकूट जनपद का क्षेत्रफल 345 वर्ग किलोमीटर है। चित्रकूट मुख्यालय से | किलोमीटर बांदा रोड में राजा का महल और 3.5 किलोमीटर देवांगना रोड में गणेश बाग, तरौंहा में राजा का किला व ट्रैफिक चौराहा में कोठी तालाब आदि ऐतिहासिक स्थल है।

सीमाएँ: चित्रकूट जनपद के उत्तर में कौशाम्बी, फतेहपुर, दक्षिण में रीवा, सतना (म.प्र.) स्थित है। पूरब में जिला प्रयागराज व पश्चिम में बांदा जिला इसकी राजनैतिक सीमा निर्धारित करते हैं।

विस्तार: विस्तार की दृष्टि से चित्रकूट जनपद उत्तर से दक्षिण 95 किलोमीटर चौड़ा है। यह पूरब में बरगढ, मुर्का, पश्चिम में रौली, भरतकूप, उत्तर में चिल्लीमल, यमुना नदी तथा दक्षिण में रानी कल्यानगढ़ तक फैला है।

प्राकृतिक रचना: चित्रकूट को प्राकृतिक बनावट के अनुसार दो भागों में बाँट सकते हैं। . 1.दक्षिण का पहाड़ी भाग। 2. उत्तर पूर्व का समतल मैदान।

- <u>चित्रकूट का दक्षिणी भूभाग</u> पूरी तरह से पहाड़ी एवं दुर्गम है। यहां पर विभिन्न तरह के पेढ़, पौधों एवं वनस्पतियां पाई जाती हैं जो औषधीय महत्व के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इस भाग में अधिकतर मानिकपुर तहसील का हिस्सा आता है।
- उत्तर पूर्व का समतल मैदान इस भाग में राजापुर, कर्वी तहसीले आती हैं। यहाँ का अधिकतर भाग समतल है। केवल छोटी नदियों व नालों के किनारे ही ऊंचा नीचा है। समतल होने के कारण नहरों से सिंचाई होती है।

वनस्पतियां: जनपद में पर्णपाती वन, -झांखड़, कटीली झाड़ियां, घास प्रमुख रूप से पायी जाती हैं।

पर्वत: चित्रकूट जिले में प्रमुख रूप से विंध्याचल पर्वत माला के कई पर्वत हैं, मुख्य पर्वत इस प्रकार हैं

<u>मड़फा पहाड़</u> : यह पर्वत कर्वी तहसील में स्थित है।

<u>चित्रकूट पर्वत माला:</u> कामदगिरि, हनुमान धारा, जानकी कुंड, लक्ष्मण पहाड़ी और देवांगना

प्रसिद्ध धार्मिक पर्वत हैं।

बाल्मीकि पहाड़: यह पर्वत कर्वी तहसील में प्रयागराज और बांदा राष्ट्रीय राजमार्ग मार्ग पर

नदियाँ; चित्रकूट जिले की महत्वपूर्ण नदियाँ हैं:

यमुना नदी

मंदाकिनी (पयस्विनी) नदी गुंता नदी

बाधिन नदी ओहन/बाल्मीकि नदी

बरदहा नदी ,ये प्रमुख नदियाँ हैं।

1.7.1 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

विकिपीडिया के अनुसार=स्वतंत्रता सेनानी वह व्यक्ति होता है जो किसी स्वतंत्रता संग्राम में संघर्ष करता है।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए वीर पुरुष थे जिन्होंने ब्रिटिश ऑफिसर शासन से देश को आजादी दिलाने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। "स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता के अध्ययन की सार्थकता और महत्व बहुआयामी हैं। यह अध्ययन न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी अत्यधिक प्रासंगिक है।

इसका महत्व निम्नलिखित बिंदुओं से स्पष्ट होता है:

प्रेरणा और आदर्श: स्वतंत्रता सेनानियों की कहानियाँ, उनके बलिदान और निस्वार्थ सेवा युवाओं को प्रेरित करती हैं। उनका जीवन सिखाता है कि किस प्रकार व्यक्तिगत लाभ के बजाय राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा जाए।

ऐतिहासिक समझ: यह अध्ययन हमें अपने देश की आजादी के पीछे के संघर्ष, चुनौतियों और विभिन्न आंदोलनों को समझने में मदद करता है। यह इतिहास केवल तारीखों और घटनाओं का सिलसिला नहीं, बल्कि राष्ट्रनायकों के साहस की गाथा है। देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता: स्वतंत्रता संग्राम में विभिन्न पृष्ठभूमि, धर्मों और क्षेत्रों के लोगों ने मिलकर लड़ाई लड़ी, जो "विविधता में एकता" की शक्ति को दर्शाता है। उनके बारे में जागरूकता नागरिकों में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करती है।

नैतिक मूल्य और नेतृत्व: महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा के सिद्धांत, भगत सिंह का बलिदान, और सरदार पटेल का दृढ़ संकल्प जैसे गुण नेतृत्व, दृढ़ विश्वास और सही के लिए खड़े होने के महत्व पर प्रकाश डालते हैं।

कर्तव्यों के प्रति जागरूकता: स्वतंत्रता हमें उनके बलिदानों के कारण मिली है। इस जागरूकता का अध्ययन हमें अपने अधिकारों के साथ-साथ एक नागरिक के रूप में अपने कर्तव्यों के प्रति भी सचेत करता है, ताकि जिस भारत की कल्पना उन सेनानियों ने की थी, उसे प्राप्त किया जा सके।

सामाजिक न्याय और समानता: कई सेनानियों ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के लिए भी संघर्ष किया। उनके विचारों का अध्ययन हमें एक समावेशी और न्यायपूर्ण

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत लघु शोध में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से तात्पर जिन्होंने चित्रकूट जनपद के उन व्यक्तियों से है जो स्वतंत्रता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1.7.2 विद्यार्थी

विकिपीडिया के अनुसार=विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है ।विद्यार्थी दो शब्दों से बना है विद्या +अर्थी जिसका अर्थ होता है विद्या चाहने वाला। विद्यार्थी को एक शिक्षार्थी या विद्वान के रूप में परिभाषित किया जाता है विशेष रूप से वह स्कूल जाता है विद्यार्थी कक्षा में शिक्षकों और उन छात्रों के साथ जुड़कर अपने शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा- प्रस्तुत लगा शोध में महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय सतना मध्य प्रदेश विद्यार्थियों से तात्पर्य चित्रकूट जनपद यूपी में अवस्थित बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी से संबद्ध विभिन्न महाविद्यालय में अध्यनरत संस्थान विद्यार्थियों से हैं।

1.7.3 जागरूकता

विकिपीडिया के अनुसार- जागरूकता किसी चीज की धारणा या ज्ञान है |

कैंब्रिज डिक्शनरी के अनुसार=किसी चीज के अस्तित्व का ज्ञान या जानकारी अनुभव के आधार पर वर्तमान समय में किसी स्थिति या विषय की समझ| कार्यात्मक परिभाषा=प्रस्तुत लगसोड़ में जागरूकता से तात्पर महाविद्यालय विद्यार्थियों में चित्रकूट जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की जानकारी से है|

1.7.4 अध्ययन

विकिपीडिया के अनुसार- अध्ययन एक कला है जिसमें एक मनुष्य कुछ करने या करवाने आदि बातों को सिखाता है| किसी विषय को सीखने और समझने के लिए दिमाग लगाना विशेष कर पढ़कर अध्ययन कहलाता है।

1.8 अध्ययन के उद्देश्य

शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- चाइनीस स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का अध्ययन करना है।
- चयनित स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता में महाविद्यालय विद्यार्थियों की लिंग के अनुसार अध्ययन करना।
- चयनित स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता संवर्धन के संबंध में सुझाव प्रस्तुत करना।

1.9 अध्ययन के चर

शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्नलिखित चरणों को मुख्य रूप से लिया गया है-

1.9.1 मापदंड चर

चित्रकूट जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता।

1.9.2 वर्गीकरण चर

लिंग- छात्र-छात्राएं

1.10 अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत लघु शोध की परिकल्पना निम्नलिखित है-

- चित्रकूट जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति महाविद्यालय छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

1.11अध्ययन का परिसीमांकन

किसी भी अनुसंधान कार्य में एक महत्वपूर्ण सोपान समस्याओं को सीमांकित करना है। कोई भी शोधकर्ता शोध कार्य के लिए किसी विशेष समस्या ग्रस्त क्षेत्र का चुनाव करती है तथा विस्तृत अध्ययन के स्थान में गहन अध्ययन को वरीयता देता है। समस्या का स्वरुप साधारणत: अधिक व्यापक होता है। समस्या का व्यावहारिक रूप में अध्ययन करने के लिए सीमांकन करना आवश्यक होता है। सीमांकन अध्ययन की चाहरदीवारी होता है। शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सीमांकन किया है:

- प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के अंतर्गत कर्वी नगर में सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन कर्वी नगर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन चयनित विद्यार्थियों के लिंग एवं विद्यालय प्रकारानुसार तुलनात्मक अध्ययनतक सीमित है।
- प्रस्तुत अध्ययन स्मार्टफोन प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन तक सीमित है।

1.12 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता

भारत की कला-संस्कृति एवं इसका इतिहास अत्यंत समृद्ध है एवं हमारी कला-संस्कृति की आधर-शिला हमारे विरासत स्थल हैं। इन स्थलों के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के साथ-साथ इनका व्यापक आर्थिक महत्त्व भी है। हमारी एक बहुत बड़ी समस्या ऐतिहासिक विरासतों को सुरक्षित रखने की भी है। पूरे देश में ऐसी अनगिनत प्राचीन और ऐतिहासिक महत्व की इमारतें हैं जिनकी देखभाल ठीक से नहीं हो रही हैं। कुछ इमारतें तो पूरी तरह उपेक्षित हैं और अगर उन पर ध्यान न दिया गया तो वे गिर जाएँगी। सरकारी विभाग अपनी सीमा और साधनों की कमी के

कारण केवल उन्हीं विरासतों की देखभाल करते हैं जो उनकी सूची में शामिल हैं पर यह काफी नहीं है। देश की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की ज़िम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं है। वरन यह लोगों का मौलिक कर्तव्य भी है। किन्तु यह तभी सम्भव होगा जब लोग अपनी ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूक होगे अतः इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत लघु शोध कार्य किया जा रहा है।

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 जागरूकता से सम्बंधित शोध अध्ययन

2.3 ऐतिहासिक विरासतों से सम्बंधित शोध अध्ययन

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं-- ज्ञान को एकत्र करना, एक- दूसरे तक पहुँचाना और ज्ञान में वृद्धि करना। किसी भी विषय के विकास में विशेष स्थान की प्राप्ति के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धांतों से भलीभांति अवगत होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा शोधकर्ता यह निश्चित कर सकता है कि उसके द्वारा प्रस्तावित शोध से सम्बन्धित विषयों पर विचारणीय कार्य पहले हो चुका है अथवा नहीं।

प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसन्धान में चाहे वह भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में

हो यह सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में, साहित्य का पुनगवलोकन एक अनिवार्य एवं प्रारम्भिक कथन है । सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रति-लेखों, विज्ञप्तियों, प्रकाशित-अप्रकाशित शोध प्रबन्धों आदि से है; जिनके अध्ययन से अनुसन्धानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा निर्मित करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। एक अनुसन्धान दूसरे अनुसन्धान के लिए सहायक सिद्ध होता है। इससे एक तो कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती, दूसरा पूर्व में जिन तथ्यों पर प्रकाश नहीं डाला

गया उन पर प्रकाश डालकर शोधग्रन्थ को महत्वपूर्ण बनाया जा सकता है।

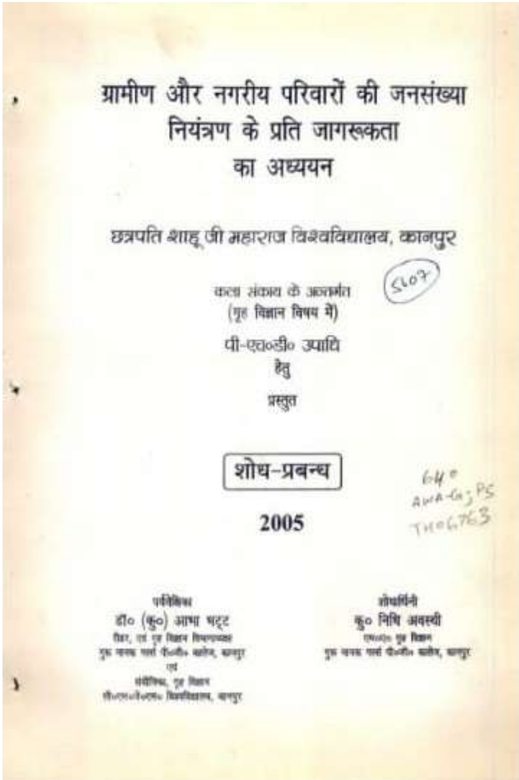
जॉन डब्लू बेस्ट के अनुसार --- ‘‘मान्यता प्राप्त अधिकारियों और पिछले शोध के लेखन का सारांश इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि शोधकर्ता पहले से ज्ञात, अज्ञात और अनुपयोगी से परिचित है।‘‘

पूर्व शोधों का पुनरावलोकन वर्तमान में किए जाने वाले शोध हेतु प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता है। सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोधार्थी को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता है, जहाँ वह अपने क्षेत्र की नवीन समस्याओं से परिचित होता है। वास्तव में सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना वह उचित दिशा में एक कदम भी आगे नहीं

बढ़ा सकता। जब तक उसे यह ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है? किस विधि से कार्य हुआ है? तथा उसके निष्कर्ष क्या रहे हैं? वह अपने शोध कार्य को आगे नहीं जा सकता। अतः सम्बन्धित साहित्य अनुसन्धान के सभी स्तर पर सहायता प्रदान करता है।

2.2 जागरुकता से सम्बन्धित शोध अध्ययन

निधि अवस्थी (2005) ने "ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता का अध्ययन" किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में कानपुर नगर के 400 ग्रामीण तथा 400 नगरीय परिवारों को शामिल किया गया। ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु शोधार्थिनी द्वारा 62 प्रश्नों की स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण परिवारों में आयु जागरूकता को प्रभावित कर रही है। ग्रामीण परिवारों में । 5-25 आयु वर्ग में अधिक जागरूकता प्राप्त हुई है, परन्तु नगरीय परिवारों की जागरूकता पर आयु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है।


ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या
नियंत्रण के प्रति जागरूकता
का अध्ययन

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

कला संकाय के अन्तर्गत
(गृह विज्ञान विषय में)
पी-एच०डी० उपाधि
हेतु
प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2005

डॉ० (कु०) आभा भट्ट

कु० निधि अवस्थी

मधुरिमा मिश्रा (2009) ने "महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता पर एक समाजशास्त्रीय अध्ययन! किया। इस अध्ययन में कानपुर नगर की 400 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि अशिक्षित महिलाओं की तुलना में शिक्षित महिलाएँ पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक थीं।

अर्चना सक्सेना (2010) ने पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं सहभागिता का अध्ययन! किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के 600 व्यक्तियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनममानस की जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित पर्यावरण संरक्षण प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जिसमें कुल 50 प्रश्न रखे गये। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राएँ प्रदूषण उन्मूलन के प्रति अधिक जागरूक हैं, जबकि नौकरी पेशा महिलाओं की तुलना में नौकरी पेशा पुरुष पर्यावरण संरक्षण के प्रति अधिक जागरूक हैं।

योगेश पाठक (2011) ने पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रान्ति, परम्परागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन' किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में वाराणसी मण्डल के 8 ग्रामीण एवं 8 शहरी महाविद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। पर्यावरण जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण मापनी(84 ५४॥) का प्रयोग किया जिसमें कुल 5 कथनों में से 43 सकारात्मक तथा 8 नकारात्मक कथन हैं। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि शहरी छात्राओं के पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण में शहरी छात्रों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक अन्तर है।

लक्ष्मण सिंह (2016) ने 'अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन' किया। इस शोध में न्यादर्श के रूप में उन्होंने अलीगढ़ मण्डल के चार जिलों कासगंज, एटा, हाथरस और अलीगढ़ के 800 शिक्षकों का चयन किया। प्रदत्त संकलन हेतु उन्होंने स्वनिर्मित पर्यावरण जागरूकता मापनी का प्रयोग किया जिसमें 75 प्रश्न रखे गये। शोध के निष्कर्ष रूप में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत महिला एवं पुरुषों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता में अन्तर है। महिला शिक्षकों की तुलना में पुरुष शिक्षक अधिक जागरूक हैं। इसी प्रकार शहरी क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत पुरुषों के पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता महिला शिक्षकों की तुलना में अधिक है।

श्वेता पटेल (2017) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं में वृत्तिक अभिमुखीकरण हेतु जागरूकता कार्यक्रम का प्रभाव: एक अध्ययन' किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने लाडनूं जिले की 200 छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि जागरूकता कार्यक्रम वृत्तिक

अभिमुखीकरण को प्रभावित करता है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर अध्ययन छात्रवृत्ति का अभिमुखीकरण हेतु के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित वृत्तिक अभिमुखीकरण मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली के दो भागों में क्रमश: 38-38 प्रश्न शामिल किए गये। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा निजी विद्यालयों की छात्राओं पर जागरूकता कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली रहा।

आरती खण्डेलवाल (2018) ने 'सिरोही जिले के बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन! किया, जिसमें न्यादर्श के रूप में सिरोही जिले के बी ०एड० कॉलेजों से 400 प्रशिक्षणार्थियों (200 पुरुष एवं 200 महिलाओं) का चयन किया गया। बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित मानवाधिकार जागरूकता प्रमापनी का प्रयोग किया गया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि पुरुष प्रशिक्षणार्थियों एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों के मध्य मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता में स्पष्ट रूप से अन्तर परिलक्षित होता है।

शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी (2018) ने "अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में एड्स के प्रति जागरूकता एवं पर्यावरण ज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन" किया। इस अध्ययन में उन्होंने कानपुर नगर के अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम के माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। एड्स जागरूकता के प्रदत्त संकलन हेतु डॉ० मधु अस्थाना द्वारा निर्मित एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया। इस प्रश्नावली में कुल 52 कथन व प्रश्न हैं, जिनके उत्तर हाँ या नहीं में देना होता है। इस अध्ययन के निष्कर्ष में उन्होंने पाया कि अंग्रेजी तथा हिन्दी माध्यम के छात्रों की एड्स के प्रति जागरूकता छात्राओं की अपेक्षा अधिक है। साथ ही हिन्दी माध्यम की छात्राओं की अपेक्षा, अंग्रेजी माध्यम की छात्राएँ एड्स के प्रति अधिक जागरूक हैं।

विक्रम आनन्द (2019) ने माध्यमिक स्तर के हिन्दी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रतिजागरूकता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविकता का अध्ययन" किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने वाराणसी जनपद के 80 माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 232 हिन्दी शिक्षकों को एवं 696 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूक के प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में उन्होंने पाया कि (CBSE और यूपी बोर्ड के हिन्दी

अध्यापकों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर है। यूपी बोर्ड के हिन्दी अध्यापकों को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने यह भी पाया कि प्रशिक्षित हिन्दी अध्यापक, अप्रशिक्षित हिन्दी अध्यापकों की तुलना में ICT के प्रति अधिक जागरूक हैं।

पूनम राठौर (2020) ने "अनुसूचित पिछड़े एवं सामान्य जाति के स्नातकोत्तर स्तर विद्यार्थियों के मानवाधिकार जागरूकता एवं व्यक्तिगत मूल्य विकास का तुलनात्मक अध्ययन! किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने मेरठ मण्डल के 2 जिलों मेरठ व गाजियाबाद से 720 स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि पिछड़े एवं सामा जाति के विद्यार्थियों में मानवाधिकार जागरूकता स्तर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। साथ ही सामान्य जाति की छात्राओं में मानवाधिकार जागरूकता स्तर छात्रों की अपेक्षा अधिक उच्च है।

अरुण कुमार मिश्र (2007)- ने **"**स्वतंत्रता आंदोलन में बांदा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान**(1857 - 1947)"** शीर्षक पर शोध कार्य किया । इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि-

- नारियां भी इस आंदोलन में पुरुषों से पीछे नहीं रही बांदा के राजकीय कन्या पाठशाला की अध्यापिका सावित्री देवी ने आंदोलन महिलाओं का नेतृत्व किया।
- असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री तथा रामानंद कविया को दो-दो वर्ष की सजा हुई इसके अलावा भी लोग जेल जेल में भी बंद हुए।
- बांदा और हमीरपुर में आंदोलनकारियों का मार्गदर्शन किया
- असहयोग आंदोलन की समाप्ति के पश्चात लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री तथा जनपद के अन्य कांग्रेसी नेता जैसे ही जेल से बाहर आए वैसे ही इन्होंने राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना के लिए कालूराम मासूखराम फॉर्म के गोदान में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की।

दीपक कुमार (2021) ने "विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन किया। इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में उन्होंने बाँदा जनपद के 50 छात्र-छात्राओं का चयन किया। इस अध्ययन में उन्होंने मड़फा दुर्ग की जागरूकता संवर्धन के सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तुत किए-

- मड़फा तक जाने वाले मार्ग में थोड़ी-थोड़ी दूर पर संकेतक लगाए जायें।
- यहाँ पर सीढ़ियों पर रेलिंग लगी होनी चाहिए।
- पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- मड़फा दुर्ग तक आवागमन के साधनों का विकास तीव्र गति से किया जाना चाहिए
- शंकर जी की मूर्ति के पास भंडारा करने के लिए छाया के लिए टीन शेड लगाना चाहिए|

2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के द्वारा शोध प्रबन्ध में उल्लेख किए गए, शोध में अनावश्यक पुनरावृत्ति नहीं होने पाती है। सम्बन्धित साहित्य शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में शोधकर्ता के ज्ञान एवं कुशलता को स्पष्ट करता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित पिछले शोध अध्ययनों की समीक्षा दो भागों में की है। प्रथम भाग में जागरूकता से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया कि **जनसंख्या नियन्त्रण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण उन्मूलन, वृत्तिक, अभिमुखीकरण, मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता, एड्स के प्रति जागरूकता तथा सूचनाएवं संचार प्रौद्योगिकी** के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित अध्ययन पहले किए गये हैं। दूसरे भाग में ऐतिहासिक विरासत से सम्बन्धित पूर्ववर्ती शोधों की समीक्षा की गयी है, जिसमें पाया गया कि **पूर्व में छत्तीसगढ़ की क्षेत्रीय ऐतिहासिकता, महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों, कालिंजर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत, भूरागढ़ दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत तथा मड़फा दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत** से सम्बन्धित अध्ययन किए गये हैं; परन्तु अभी तक कोई भी शोध

कार्य **चित्रकूट जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थी की जागरूकता** के सम्बन्ध में नहीं किया गया है, जिस कारण से शोधकर्ता ने इस विषय को शोध कार्य हेतु चुनने का निश्चय किया।

तृतीय अध्याय

चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

3.1 प्रस्तावना

3.2 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान

3.2.1 राम बहोरी करवरिया

3.2.2 गोदीन शर्मा

3.2.3 युगुल किशोर

3.2.4 रामशरण गर्ग

3.2.5 चंद्रशेखर आजाद

3.3 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

3.4 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रभाव

तृतीय अध्याय

चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी

3.1 प्रस्तावना

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक ऐसा जनांदोलन था, जिसने न केवल देश को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति दिलाई, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और शैक्षिक क्षेत्रों में भी गहरे परिवर्तन लाए। चित्रकूट जनपद, जो उत्तर प्रदेश के बुदेलखंड क्षेत्र में मंदाकिनी नदी के तट पर बसा है, इस संग्राम में एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा। चित्रकूट की ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि ने इसे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय जागरूकता और क्रांतिकारी गतिविधियों का एक प्रमुख स्थल बनाया। इस क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने साहस, समर्पण, और सामुदायिक नेतृत्व के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी।

चित्रकूट के स्वतंत्रता सेनानियों की ऐतिहासिक गर्जना (creation) केवल युद्धक्षेत्र तक सीमित नहीं थी। उन्होंने स्थानीय स्तर पर जनसभाओं, स्वदेशी आंदोलनों, और सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से समाज में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। इन सेनानियों ने शिक्षा को एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उपयोग किया, जिसके माध्यम से उन्होंने युवाओं और विद्यार्थियों में स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, और सामाजिक दायित्व की भावना को प्रेरित किया। चित्रकूट के सेनानियों ने न केवल ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रत्यक्ष संघर्ष किया, बल्कि सामाजिक सुधार, जैसे जातिगत भेदभाव को समाप्त करना और महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना, के लिए भी प्रयास किए।

यह अध्याय चित्रकूट के स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसमें उनके योगदान, उनके कार्यों के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव, और शिक्षा के क्षेत्र में उनकी दीर्घकालिक विरासत पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विशेष रूप से, यह अध्ययन विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करता है, क्योंकि शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीयता और नैतिक मूल्यों का विकास होता है। चित्रकूट के सेनानियों, जैसे राम बहोरी करवरिया, गोदीन शर्मा, युगुल किशोर, रामशरण गर्ग, और चंद्रशेखर आजाद, ने इस क्षेत्र को स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया।

चित्रकूट का भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व इस अध्ययन को और भी प्रासंगिक बनाता है। यह क्षेत्र बुंदेलखंड की क्रांतिकारी परंपराओं का हिस्सा रहा है, जहाँ घने जंगल, पहाड़ियाँ, और गाँव क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए सुरक्षित ठिकाने थे। चित्रकूट की स्थानीय जनता ने सेनानियों को समर्थन प्रदान किया, जिसने उनकी गतिविधियों को और मजबूती दी। इस अध्याय का उद्देश्य इन सेनानियों के योगदान को एक शैक्षिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि उनके कार्यों का विद्यार्थियों की राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना पर क्या प्रभाव पड़ता है।

3.2 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का योगदान

चित्रकूट के स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्रता संग्राम में अपने अनूठे योगदान के माध्यम से इस क्षेत्र को राष्ट्रीय आंदोलन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। इन सेनानियों ने स्थानीय स्तर पर जनता को संगठित किया, स्वदेशी और असहयोग आंदोलनों को बढ़ावा दिया, और ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक और क्रांतिकारी दोनों तरह के प्रयास किए। उनके योगदान ने न केवल स्वतंत्रता की प्राप्ति में मदद की, बल्कि चित्रकूट की सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत किया।

3.2.1 राम बहोरी करवरिया ने चित्रकूट के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वदेशी आंदोलन को गति दी। उन्होंने गाँवों में जनसभाओं का आयोजन किया और स्थानीय लोगों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की प्रेरणा दी। उनकी रणनीति में शिक्षा का उपयोग एक हथियार के रूप में था, जिसके माध्यम से उन्होंने युवाओं को राष्ट्रीय चेतना से जोड़ा। करवरिया ने सामाजिक सुधारों, जैसे जातिगत भेदभाव को समाप्त करने और महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने, पर भी ध्यान दिया।

3.2.2 गोदीन शर्मा ने चित्रकूट में अहिंसक प्रतिरोध और सत्याग्रह के सिद्धांतों को अपनाया। उन्होंने शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में जनसभाओं और जागरूकता अभियानों का नेतृत्व किया। शर्मा ने विशेष रूप से विद्यार्थियों और युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा, जिसके लिए उन्होंने स्कूलों में शैक्षिक गतिविधियों, जैसे नाटकों और चर्चाओं, का आयोजन किया। उनकी यह पहल शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीयता को बढ़ावा देने में सहायक रही।

3.2.3 युगुल किशोर ने चित्रकूट में भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान युवाओं को संगठित किया। उन्होंने जुलूसों, प्रदर्शनों, और जनसभाओं का आयोजन किया, जिनमें उन्होंने लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान किया। युगुल किशोर ने स्थानीय मेलों और सामुदायिक आयोजनों का उपयोग करके स्वतंत्रता संग्राम के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया। उनकी यह रणनीति युवाओं में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में प्रभावी रही।

3.2.4 रामशरण गर्ग ने चित्रकूट में स्वदेशी और शिक्षा के प्रसार पर जोर दिया। उन्होंने स्थानीय समुदायों में जागरूकता अभियान चलाए और स्कूलों में शैक्षिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया। गर्ग का मानना था कि शिक्षित समाज ही स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की नींव रख सकता है। उनकी यह सोच चित्रकूट के शैक्षिक परिदृश्य में दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ गई।

3.2.5 चंद्रशेखर आजाद- जो बुदेलखंड और चित्रकूट के सबसे प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे, ने अपने क्रांतिकारी कृतित्व के माध्यम से इस क्षेत्र को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। उन्होंने काकोरी कांड (1925), सांडर्स हत्या (1928), और अन्य क्रांतिकारी गतिविधियों का नेतृत्व किया। चित्रकूट के जंगल और गाँव उनके लिए सुरक्षित ठिकाने थे, जहाँ वे अपनी रणनीतियाँ बनाते थे। आजाद की गतिविधियों ने चित्रकूट की क्रांतिकारी विरासत को और समृद्ध किया। इन सेनानियों का ऐतिहासिक योगदान चित्रकूट की स्थानीय परिस्थितियों और बुदेलखंड की क्रांतिकारी परंपराओं से गहराई से जुड़ा था। चित्रकूट की भौगोलिक स्थिति, जो घने जंगलों और पहाड़ियों से घिरी है, ने सेनानियों को ब्रिटिश पुलिस से बचने में मदद की। स्थानीय जनता ने उन्हें भोजन, आश्रय, और गोपनीय जानकारी प्रदान की, जिसने उनकी गतिविधियों को और मजबूती दी। इन योगदानों ने चित्रकूट को स्वतंत्रता संग्राम का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनाया।

3.3 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम का सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव

चित्रकूट के स्वतंत्रता सेनानियों का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक रहा। उनके कार्यों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को गति दी, बल्कि चित्रकूट की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान, और समुदायिक एकता को भी मजबूत किया। इन सेनानियों ने अपने अभियानों के माध्यम से सामाजिक सुधार, राष्ट्रीय चेतना, और

सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। सामाजिक दृष्टिकोण से, चित्रकूट के सेनानियों ने समाज में एकता और समानता की भावना को प्रेरित किया। राम बहोरी करवरिया और रामशरण गर्ग जैसे सेनानियों ने जातिगत भेदभाव को समाप्त करने और महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया। उन्होंने स्थानीय समुदायों को यह समझाया कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक आजादी नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और आत्मनिर्भरता का भी लक्ष्य है। उनकी यह सोच चित्रकूट के सामाजिक ढांचे में सकारात्मक परिवर्तन लाई। गोदीन शर्मा और युगुल किशोर ने युवाओं और विद्यार्थियों को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा, जिसने सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया। उन्होंने नाटकों, कविताओं, और सामुदायिक आयोजनों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। इन गतिविधियों ने चित्रकूट के युवाओं में सामाजिक दायित्व और राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल किया। चंद्रशेखर आजाद की क्रांतिकारी गतिविधियों ने चित्रकूट के लोगों में साहस और स्वाभिमान की भावना को जागृत किया। उनकी कहानियाँ स्थानीय लोककथाओं और मौखिक परंपराओं में आज भी जीवित हैं।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण से, चित्रकूट के सेनानियों ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा। चित्रकूट, जो भगवान राम की तपोभूमि के रूप में प्रसिद्ध है, पहले से ही एक सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र था। सेनानियों ने स्थानीय मेलों, धार्मिक समारोहों, और सांस्कृतिक आयोजनों का उपयोग करके स्वतंत्रता संग्राम के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया। उनकी यह रणनीति सांस्कृतिक जागरूकता को बढ़ाने में प्रभावी रही। चित्रकूट की सांस्कृतिक पहचान में सेनानियों की गर्जना ने एक नया आयाम जोड़ा। उनकी गतिविधियों ने चित्रकूट को एक क्रांतिकारी केंद्र के रूप में स्थापित किया, जो बुदेलखंड की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का हिस्सा बना। आजाद जैसे नायकों की कहानियाँ चित्रकूट की सांस्कृतिक परंपराओं में शामिल हो गई हैं, जो स्थानीय समुदायों में गर्व और एकता की भावना को प्रेरित करती हैं।

3.4 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रभाव

चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की ऐतिहासिक गर्जना का शिक्षा के क्षेत्र में गहरा और दीर्घकालिक प्रभाव रहा। उनके कार्यों ने न केवल स्वतंत्रता संग्राम को गति दी, बल्कि चित्रकूट के शैक्षिक परिदृश्य में राष्ट्रीयता, सामाजिक जागरूकता, और नैतिक मूल्यों को भी प्रेरित किया। इन सेनानियों ने शिक्षा को एक शक्तिशाली उपकरण

के रूप में उपयोग किया, जिसके माध्यम से उन्होंने विद्यार्थियों में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता की भावना को जागृत किया।

राम बहोरी करवरिया और रामशरण गर्ग ने शिक्षा के प्रसार पर विशेष जोर दिया। उन्होंने स्कूलों और समुदायों में जागरूकता अभियान चलाए, जिनमें स्वतंत्रता संग्राम, स्वदेशी, और सामाजिक सुधारों के महत्व को समझाया गया। उनकी यह पहल चित्रकूट के शैक्षिक संस्थानों में राष्ट्रीयता के पाठ्यक्रम को समृद्ध करने में सहायक रही। गोदीन शर्मा और युगुल किशोर ने विद्यार्थियों को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ने के लिए नाटकों, कविताओं, और चर्चाओं का आयोजन किया। उनकी यह रणनीति शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय चेतना को बढ़ाने में प्रभावी रही।

चंद्रशेखर आजाद की क्रांतिकारी गतिविधियों और बलिदान ने चित्रकूट के विद्यार्थियों में साहस और स्वाभिमान की भावना को प्रेरित किया। उनकी कहानियाँ स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाई जाती हैं, जो विद्यार्थियों को यह सिखाती हैं कि स्वतंत्रता और सम्मान के लिए लड़ना हर नागरिक का कर्तव्य है। आजाद की आत्म-शिक्षा और नेतृत्व क्षमता विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरणा है, जो यह दर्शाती है कि दृढ़ संकल्प और सीखने की इच्छा से बड़े लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इन सेनानियों का प्रभाव उनके द्वारा प्रेरित मूल्यों में देखा जा सकता है। उनकी गतिविधियों ने विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता, सामाजिक जिम्मेदारी, और नैतिकता की भावना को प्रबल किया। चित्रकूट के शैक्षिक संस्थानों में इन सेनानियों की कहानियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी अपने स्थानीय नायकों से प्रेरणा ले सकें। इसके अतिरिक्त, जागरूकता अभियानों और शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से इन सेनानियों के कार्यों को और अधिक प्रचारित किया जा सकता है।

इन सेनानियों की गर्जना ने चित्रकूट के शैक्षिक परिदृश्य में एक ऐसी विरासत छोड़ी है, जो विद्यार्थियों को अपने इतिहास से जोड़ती है और उन्हें एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है। उनकी यह विरासत शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय और नैतिक मूल्यों को विकसित करने में सहायक है।

अध्याय चतुर्थ

अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

4.2 शोध विधि

4.3 अध्ययनसमष्टि

4.3.1 प्रस्तुत हेतु अध्ययन समष्टि

4.4 प्रतिदर्श चयन

4.4.1 प्रति चयन की विधियाँ

4.4.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

4.5 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

4.5.2 संस्थाओं का चयन

4.6 प्रदत्तों का स्रोत

4.7 प्रदत्तों की प्रकृति

4.8 शोध उपकरण

4.8.1 प्रश्नावली

4.8.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

4.8.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

4.9 परीक्षण का प्रशासन

4.10 परीक्षण का फलांकन

4.11 सांख्यिकी प्रविधियां

4.11.1 प्रतिशत

4.11.2 माध्यम

4.11.3 प्रमाप विचलन

4.11.4 वैषम्यता तथा कुकुदता

4.11.5 सामान्य संभाव्यता वक्र

4.11.6 क्रांतिक अनुपात

4.11.7 दंड आरेख

अध्याय चतुर्थ
अध्ययन विधि एवं प्रक्रिया

4.1 प्रस्तावना

शिक्षा और मनोविज्ञान में शोध अभिकल्पों का विकास अनुसन्धान के निष्कर्षों को निरर्थक रूप से प्रभावित करने वाले बाह्य कारकों के निष्कासन या नियन्त्रण के लिए हुआ। शोध अभिकल्प, समस्या से सम्बन्धित परिकल्पना के कथन से लेकर आँकड़ों के अन्तिम विश्लेषण तक की उन सभी क्रियाओं की योजना या रूपरेखा है, जो शोध प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए की जाती हैं। इस प्रकार यह एक व्यापक कार्ययोजना है, जिसका अन्तिम उद्देश्य अनुसन्धानकर्ता को शोध प्रश्न (समस्या) का एक ऐसा उत्तर (हल) प्रदान करना है, जो यथासम्भव वैध, वस्तुनिष्ठ, परिशुद्ध और किफायती हो।

क्रिर्क (1968) के अनुसार—"प्रायोगिक अभिकल्प, प्रयोज्यों को विभिन्न प्रायोगिक स्थितियों में निर्दिष्ट किए जाने की विशिष्ट योजना है जिसमें सम्बन्धित सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना भी सम्मिलित रहती है।"

"Experimental design is……..a particular type of plan for assigning subject to experimental conditions and the statistical analysis associated with the plan."

—R.E. Kirk: Experimental Design Procedures for Behavioural Science (Brooks), 1968.

डी एन श्रीवास्तव (1994) के अनुसार—"अनुसन्धान अभिकल्प अन्वेषण की विशिष्ट आधारभूत योजना, संरचना और वीर व्यूहनीति है, जिसमें प्रयोज्यों का स्वतन्त्र चर के स्तरों के अनुसार वितरण और स्वतन्त्र चर या चरों की प्रहस्तन प्रक्रियाएँ और सम्बन्धित सांख्यिकीय विश्लेषण की योजना सम्मिलित होती है। इसके द्वारा अनुसन्धान प्रश्नों या परिकल्पनाओं के उत्तर प्राप्त किए जाते हैं और प्रसरण पर नियन्त्रण किया जाता है।"

4.2 शोध विधि

प्रत्येक शोधकर्ता को अधिक विश्वसनीय एवं ठोस परिणामों के प्राप्त हेतु कई विधियों का चयन करना होता है। अनुसंधानकर्ता के द्वारा अनुसंधान के प्रकृति के अनुरूप अनुसंधान के विधि का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक विधि की अपनी कुछ अवधारणाएँ एवं तौर-तरीके होते हैं। शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सर्वेक्षण विधि सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली विधि है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है क्योंकि यह विधि व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर पूरे समूह से सम्बन्धित होती है और इसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि को अपना कर **स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन** करने का प्रयास किया है।

4.2.1 सर्वेक्षण विधि

सर्वेक्षण विधि शोध करने की वह अनुपम विधि है जिसके अन्तर्गत वृहद पैमाने पर आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। सर्वेक्षण विधि में अध्ययनकर्ता जनसंख्या का चयन सुरक्षा पूर्वक करता है। सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी इकाई के वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना होता है।

फेयरचाइल्ड (1944) के अनुसार, "सामान्य शब्दों में एक समुदाय के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके किसी एक पक्ष जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरञ्जन के सम्बन्ध में तथ्यों को व्यवस्थित, संकलित और विश्लेषण करने को ही सर्वेक्षण कहते हैं।"

"A term …….used rather loosely to indicate a more or less orderly and comprehensive gathering and analysis of facts about the total life of a community or some phase of it e.g. health, education, recreation ……. ."

—Fairchild, Dictionary of Sociology.

4.3 अध्ययन समष्टि

अध्ययन जनसंख्या से तात्पर्य अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु वाञ्छित निरीक्षण से सम्बन्धित इकाईयों की कुल संख्या से है। *चित्रकूट जनपद के गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी- चित्रकूट के कुल 100 विद्यार्थी, जिसमें 68 छात्र एवं 32 छात्राएँ हैं।*

4.3.1 प्रस्तुत लघु शोध हेतु अध्ययन समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन की मूल जनसंख्या जिनसे वाञ्छित सूचनाएँ संकलित की गयी हैं, वह हैं— *चित्रकूट जनपद* के महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी।

4.4 प्रतिदर्श चयन

प्रतिदर्श को न्यादर्श भी कहते हैं। प्रतिदर्श जनसंख्या का वह छोटा भाग है, जिसे अनुसन्धानकर्ता के द्वारा वास्तविक अध्ययन के लिए चयनित किया जाता है। प्रतिदर्श जनसंख्या का प्रतिनिधित्व सूक्ष्म-रूप होता है तथा इससे प्राप्त सूचनाओं का समान्यीकरण करके जनसंख्या के बारे में अनुमान लगाया जाता है। प्रतिदर्श के अंग्रेजी पर्याय Sample का उद्भव लैटिन भाषा के Exemplum शब्द से हुआ है जिसका अर्थ है—उदाहरण। इस शाब्दिक अर्थ से भी संकेत मिलता है कि प्रतिदर्श जनसंख्या की कुछ ऐसी इकाईयों का संकलन होता है, जिन्हें जनसंख्या की विशेषताओं को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण स्वरूप चुना जाता है।

इंग्लिश और इंग्लिश (1980) के अनुसार— "प्रतिदर्श जनसंख्या का एक भाग है जो दिए हुए उद्देश्य के लिए सम्पूर्ण जाति का प्रतिनिधित्व होता है। इसलिए प्रतिदर्श पर आधारित निष्कर्ष सम्पूर्ण जाति के लिए वैध होता है।"

"Sample: A part of a population, which for the purpose in hand is taken as representative of the whole population, so that certain conclusions based on the sample will be valid for this whole population."

—*Dictionary of Psychological Terms* , **English & English.**

प्रतिचयन प्रतिदर्श चुनने की विधि है, जिसमें पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाईयों का चुनाव किया जाता है। प्रतिदर्श की इकाईयों को चुनते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि चुना गया प्रतिदर्श उस सम्पूर्ण जनसंख्या या समष्टि (Universe) का प्रतिनिधित्व करे, जिससे वह प्रतिदर्श चुना गया है।

करलिंगर(1973) के अनुसार— "किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधित्व-स्वरूप एक अंश चुन लेने को प्रतिचयन कहते हैं।"

"Sampling is taking any portion of a population or universe, as representative of that population or universe."

—F. N. Kerlinger.

4.4.1 प्रतिचयन की विधियाँ

प्रतिदर्श का चयन किसी न किसी प्रतिचयन विधि द्वारा किया जाता है। प्रतिचयन प्रक्रिया के लिये तकनीकी जानकारी और प्रशिक्षण आवश्यक है। प्रत्येक अध्ययनकर्त्ता प्रतिचयन नहीं कर सकता है। वह प्रतिचयन तभी कर सकता है जब उसे प्रतिचयन पद्धतियों का आवश्यक ज्ञान हों या इस क्षेत्र में उसे प्रशिक्षण प्राप्त हो। प्रतिचयन की विधियों को मुख्यतः दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(I) यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—यादृच्छिक प्रतिचयन विधियों में वे सारी विधियाँ आती हैं, जिसमें किसी न किसी प्रकार का यादृच्छिकरण शामिल होता है। ऐसी विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- संयोगिक प्रतिचयन
- वर्गबद्ध प्रतिचयन
- गुच्छ प्रतिचयन
- द्विस्तर प्रतिचयन

(II) गैर यादृच्छिक प्रतिचयन विधियाँ—गैर यादृच्छिक विधि में प्रतिदर्श के सदस्यों का चुनाव उनकी उपलब्धता और शोधकर्ता की सुविधा पर निर्भर करता है अर्थात् शोधकर्ता प्रतिदर्श में उन्हीं सदस्यों को रखता है जिन्हें वह आसानी से प्राप्त कर सकता है। इससे प्रतिदर्श में अधिक सदस्य लिए जा सकते हैं। इन विधियों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जा सकता है—

- उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन
- अंश प्रतिचयन
- आकस्मिक प्रतिचयन
- **सुविधानुसार प्रतिचयन**
- स्वेच्छानुसार प्रतिचयन

4.5.1.1 सुविधानुसार प्रतिचयन

सुविधानुसार प्रतिचयन का प्रयोग सर्वेक्षणात्मक शोध में किया जाता है जहाँ शोधकर्ता को तथ्य का सस्ता सन्निकटन प्राप्त करना हो। जैसा कि इस विधि के नाम से पता चलता है, इसमें प्रतिदर्श का चयन इसलिए किया जाता है क्योंकि यह सुविधाजनक होता है। इसे **अव्यवस्थित या आकस्मिक प्रतिचयन** भी कहा जाता है, क्योंकि यह विधि उन लोगों पर लागू होती है जो टहलते हुए अचानक मिल जायें या उन लोगों पर लागू होती है जिसकी शोध में विशेष रुचि हो स्वयंसेवकों का उपयोग सुविधानुसार प्रतिचयन का एक उदाहरण है। इस विधि का प्रयोग परिणामों का सकल आकलन प्राप्त करने के लिए प्राथमिक अनुसन्धान प्रयासों के दौरान किया जाता है। इस विधि से प्रतिदर्श का चयन करने में कोई खर्च या समय व्यर्थ नहीं जाता।

प्रदत्त संकलन हेतु **सुविधानुसार प्रतिचयन विधि** का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि कोरोना काल होने के कारण विद्यालयों/महाविद्यालयों का खुलना तथा उनमें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों का भौतिक रूप से आना-जाना अनिश्चित था। अधिकांश अध्ययन-अध्यापन ऑनलाइन माध्यम से हो रहा था। अतः शोधकर्ता द्वारा प्रदत्त संकलन गूगल फॉर्म के माध्यम से करने का निश्चय किया गया, इस हेतु महाविद्यालयों के शिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन के लिए विद्यार्थियों के what's app ग्रुप में गूगल फॉर्म का लिंक प्रेषित कर तथा मोबाइल रखने वाले कुछ विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क कर विद्यार्थियों का न्यादर्श रूप में चयन किया गया।

4.5 लक्षित प्रतिदर्श का चयन

लक्षित न्यादर्श के चयन हेतु निम्नांकित प्रक्रिया का अनुकरण किया गया—

4.5.1 जनपद का चयन एवं न्यायोचितता

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा चित्रकूट जनपद के अन्तर्गत कर्वी ,मऊ ,मानिकपुर तथा राजापुर तहसीलें आती हैं, जिसमें से न्यादर्श के चयन के लिए कर्वी का चुनाव किया गया।

बुन्देलखण्ड में चित्रकूट जनपद की गिनती पिछड़े जिलों में होती है। इस जिले को विकास की मुख्यधारा में लाने हेतु अधिकाधिक शोध कार्य किये जाने की आवश्यकता है, जिसको समझते हुए शोधकर्ता ने अपने

शोध कार्य हेतु चित्रकूट जनपद का चुनाव किया। साथ ही शोधकर्ता जन्म से ही चित्रकूट जनपद निवासी है एवं यहीं रहकर कक्षा 8 तक की शिक्षा पूर्ण की है, जिस कारण शोधकर्ता का इस जनपद से भावनात्मक जुड़ाव भी है। अतः शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श चयन में **सुविधानुसार प्रतिदर्श विधि** को अंगीकृत कर, उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के कर्वी नगर को चयनित किया गया है।

4.5.2 संस्थाओं का चयन

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध चित्रकूट जनपद के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन से सम्बन्धित है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में शोधकर्ता द्वारा कर्वी नगर के दो उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत 100 विद्यार्थियों का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया तथा उन्हें छात्र-छात्राओं में विभाजित किया गया, जिसका विवरण निम्नवत है-

तालिका संख्या 4.6.2.1

न्यादर्श वितरण तालिका

चर	वर्ग	संख्या	कुल संख्या
लिंग	छात्र	68	100
	छात्राएँ	32	

तालिका संख्या 4.6.2.2

लिंग-वार प्रदर्शित को करती तालिका

क्रम संख्या	महाविद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएँ

1.	**गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी- चित्रकूट**	54	20
2.	**जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट**	14	12
योग		**68**	**32**
		100	

4.6 प्रदत्तों का स्रोत

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन के लिए प्राथमिक स्रोत का ही प्रयोग किया है।

शोध में प्रदत्तों का स्रोत निम्न है—

जगतगुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय ,चित्रकूट में अध्यनरत एवं बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी से सम्बद्ध महाविद्यालयों के विद्यार्थी।

4.7 प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के रूप में विद्यार्थियों की जागरूकता जानने हेतु "स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता मापनी" का प्रयोग कर अनुक्रियायें प्राप्त की गयी हैं। तत्पश्चात उपकरण से प्राप्त अनुक्रियाओं का अंकन किया गया, अतः प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक है।

4.8 शोध उपकरण

शोध उपकरण वे उपकरण हैं जिनका उपयोग करके अनुसन्धान में डाटा एकत्र किया जाता है। यह अध्ययन के लिए डाटा संग्रह का साधन बन जाता है। यह विश्वसनीय और सटीक होना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में तथ्यों के संकलन के लिये प्रायोगिक विधि में किसी उपकरण/यन्त्र का उपयोग होता है। इसके साथ-साथ निरीक्षणों का भी सहारा लिया जाता है। लेकिन जब अध्ययन प्रयोगात्मक विधि के अतिरिक्त अन्य वैज्ञानिक विधियों द्वारा किये जाते हैं तो तथ्यों के संकलन में मुख्यतः निम्न उपकरणों का उपयोग करते हैं—

- प्रेक्षण
- साक्षात्कार
- अनुसूची
- **प्रश्नावली**
- समाजमिति
- वैयक्तिक अध्ययन
- व्यक्तिवृत विधि
- वस्तुपरक मापनियाँ
    - (i) निर्धारण मापनी
    - (ii) पदांकन मापनी
    - (iii) चिह्नांकन सूची

- मनोवैज्ञानिक परीक्षण

    (i) बुद्धि परीक्षण

    (ii) अभियोग्यता परीक्षण

    (iii) अभिरुचि सूची

    (iv) व्यक्तित्व परीक्षण

- अभिवृत्ति मापनी

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध में प्रदत्त संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा शोध उपकरण के रूप में **स्वनिर्मित प्रश्नावली** का प्रयोग किया गया है।

4.8.1 प्रश्नावली

प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो शोध समस्या के सम्बन्ध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाइयों से तथ्यों का संकलन करके शोध समस्या का अध्ययन पूर्ण किया जाता है।

गुड और हॉट (1952) के अनुसार, "सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ, प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक, प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है जिसे उत्तर दाता स्वयं भरता है।"

"In general, the word questionnaire refers to a device for securing answers to questions by using a form which the respondent fills in himself."

— Goode and Hatt

लुण्डबर्ग (1957) के अनुसार, "मौलिक रूप से प्रश्नावली उद्दीपकों का वह समूह होता है जिसे शिक्षित लोगों के सामने, इन उद्दीपकों के अन्तर्गत उनके मौखिक व्यवहारों का निरीक्षण करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।"

“Fundamentally, the questionnaire is a set of stimuli to which literate people are exposed in order to observe their verbal behavior under these stimuli.”

—Lundberg

4.8.2 स्वनिर्मित प्रश्नावली की आवश्यकता

शोधकर्ता के समक्ष महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए **कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध न होने के कारण स्व-निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया।** इसका निर्माण अध्ययन के लिए आवश्यक है। इस उपकरण का निर्माण अनुसन्धानकर्त्री ने शोध समस्या के उद्देश्यों एवं समस्या के घटकों को ध्यान में रखकर किया है।

4.8.3 स्वनिर्मित प्रश्नावली निर्माण के सोपान

प्रस्तुत शोध हेतु महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली निर्माण के सोपान निम्नवत हैं—

(i) प्रथम सोपान: सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अनुसन्धानकर्ता द्वारा प्रश्नावली निर्माण से पूर्व सम्बन्धित साहित्य का व्यापक एवं गहन अध्ययन किया गया।

(ii) द्वितीय सोपान: विषय विशेषज्ञों से परामर्श

शोधकर्ता ने प्रश्नावली निर्माण हेतु विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय ली तथा उनके परामर्श से प्रश्नावली के निर्माण के लिए क्षेत्र निर्धारित किये।

(iii) तृतीय सोपान: प्रश्नों का निर्माण

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन हेतु अधिकतम सम्भव प्रश्नों का निर्माण किया गया। इस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता के अध्ययन हेतु 16 प्रश्नों का निर्माण किया गया। समस्या के उद्देश्य एवं न्यादर्श के स्तर के आधार पर संकलन हेतु बन्द प्रश्नावली का चयन किया गया। इनमें कथनों को विकल्पात्मक बनाया गया जिसमें चार विकल्प दिए गये, इन चार में से एक विकल्प को चुनना था।

(iv) चतुर्थ सोपान: विशेषज्ञों की राय

प्रश्नावली निर्माण के पश्चात इसे विशेषज्ञों को दिखाया गया। उनके द्वारा निरर्थक एवं दोहराव वाले प्रश्नों को हटाया गया तथा कुछ नवीन प्रश्न जोड़े गये। अतः सुझावों के पश्चात प्रश्नावली में प्रश्नों को क्रमवार रखा गया तथा अन्तिम रूप से कुल 14 प्रश्न बने।

4.9 परीक्षण का प्रशासन

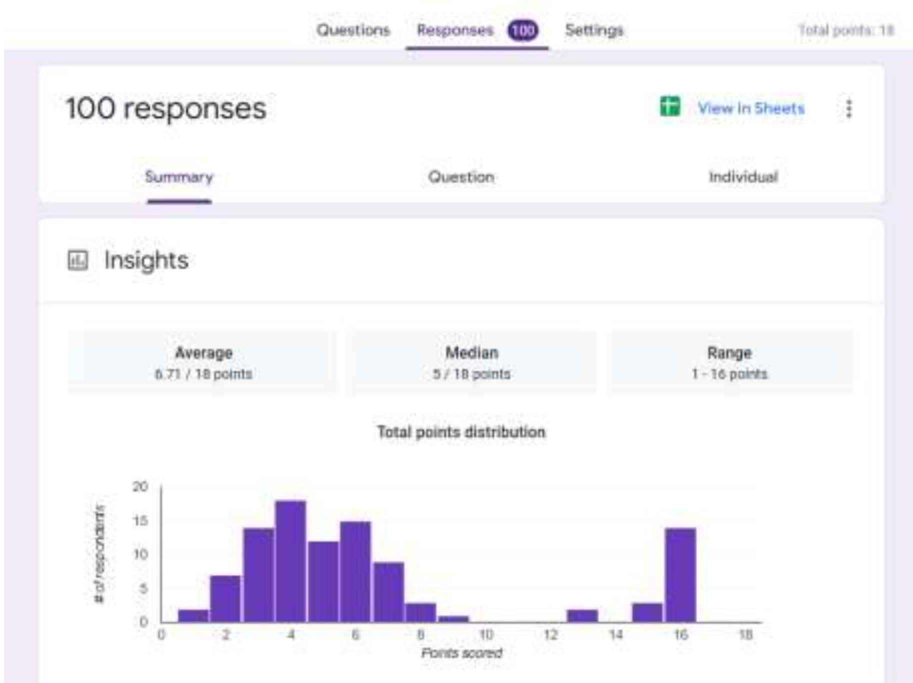
परीक्षण का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन रूप में किया जाना था। इस हेतु सर्वप्रथम शोधकर्ता ने चित्रकूट जनपद के गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्वी- चित्रकूट प्राचार्य से मिलकर उन्हें इस जागरूकता प्रश्नावली के विषय में बताया। उन्होंने इसे प्रशासित करने की अनुमति दी तथा प्रश्नावली के लिंक को अपने व्हाट्स एप नम्बर पर भेजने के लिए कहा तथा उन्होंने इस लिंक को अपने महाविद्यालय के विद्यार्थियों के ग्रुप में भेज दिया।

इसी प्रकार शोधकर्ता ने **जगतगुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय** के कुलसचिव से मिलकर उनसे प्रश्नावली को प्रशासित करने की अनुमति प्राप्त की। उनकी अनुमति से शोधकर्ता ने स्वयं कक्षाओं में जाकर विद्यार्थियों को इस प्रश्नावली के विषय में समझाया तथा अपने समक्ष ही प्रश्नावली को छात्रों के ग्रुप में भेजकर ऑनलाइन भरवाया।

गूगल फॉर्म के माध्यम से विद्यार्थियों के प्रत्युत्तर शोधार्थी को Gmail द्वारा प्राप्त हुए। कुछ विद्यार्थियों ने गूगल फॉर्म को एक से अधिक बार भर दिया। अतः उनके द्वारा भरे गये प्रथम गूगल फॉर्म को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे विद्यार्थियों ने भी गूगल फॉर्म भरा जो शोध हेतु चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत् नहीं थे। ऐसे विद्यार्थियों को पहचानकर शोधकर्ता द्वारा उन्हें न्यादर्श में सम्मिलित नहीं किया गया। न्यादर्श में दिनांक 14/08/2025 तक प्राप्त विद्यार्थियों की अनुक्रियाओं को ही न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार अन्तिम रूप से कुल 100 विद्यार्थियों की न्यादर्श के रूप में अनुक्रियायें प्राप्त हुई।

4.10 परीक्षण का फलांकन

शोधकर्ता ने प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म के माध्यम से क्विज के रूप में किया था जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित था। सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर देने पर 0 अंक प्रदान किया गया। गूगल फॉर्म में response पर क्लिक करने पर वह स्वतः ही उसका फलांकन करके परिणाम प्रस्तुत कर देता है।



4.11 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

सांख्यिकी, गणित की वह शाखा है, जिसमें आँकड़ों का संग्रहण, प्रदर्शन, वर्गीकरण और उसके गुणों का आकलन तथा अध्ययन किया जाता है। सांख्यिकी एक गणितीय विज्ञान है, जिसमें किसी वस्तु/अवयव/तन्त्र/समुदाय से सम्बन्धित आँकड़ों का संग्रह, विश्लेषण, व्याख्या या स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की जाती है।

एम० जी० कैण्डाल के अनुसार—" सांख्यिकी प्रदत्तों के संकलन तथा विश्लेषण और निष्कर्ष निकालने का विज्ञान है।"

"Statistics is the science of collecting, analyzing and interpreting numerical data."

—M.G. Kendall.

स्लिगमैन के अनुसार—"सांख्यिकी वह विज्ञान है जिसमें किसी क्षेत्र विशेष की जानकारी हेतु संख्यात्मक आँकड़ों के संकलन, वर्गीकरण, प्रस्तुतीकरण, तुलना और व्याख्या करने की विधियों का वर्णन होता है।"

"Statistics is the science which deals with the methods of collecting, classifying, presenting, comparing and interpreting numerical data collected to throw some light on any sphere of inquiry."

—Sligman.

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध में प्रश्नावली की सहायता से संग्रहित किए गये आँकड़ों से प्राप्त सूचनाओं का विवेचनात्मक अध्ययन करने से पहले इनको एक निश्चित रूप प्रदान करना था। इसके लिए शोधकर्ता ने सामान्य सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया।

शोध के उद्देश्य तथा आँकड़ों की प्रकृति के आधार पर निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया—

- प्रतिशत
- मध्यमान
- प्रमाप विचलन
- वैषम्यता तथा कुकुदता
- सामान्य सम्भावना वक्र
- क्रान्तिक अनुपात
- दण्ड आरेख

4.11.1 प्रतिशत (Percentage)

प्रतिशत गणित में किसी अनुपात को व्यक्त करने का एक तरीका है। इसे (%) द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रतिशत को ज्ञात करने का सूत्र निम्नवत है—

प्रतिशत(%) = (प्राप्तांक/ पूर्णांक)×100

4.11.2 मध्यमान (Mean)

मध्यमान को समान्तर माध्य या अंकगणितीय माध्य भी कहा जाता है।

किंग के अनुसार—"समंक माला के पदों के योग में उनकी संख्या से भाग देने पर जो अंक प्राप्त होता है उसी को अंकगणितीय माध्य या मध्यमान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

"The arithmetic average may be defined as the sum of aggregate of a series of items, divided by their number."

—W. I. King

मध्यमान प्राप्तांकों का केन्द्रीय मान होता है जो सभी आँकड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। मध्यमान के आधार पर एक समूह की दूसरे समूह से तुलना की जाती है।

मध्यमान की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

यहाँ—

$$\overline{X} = \frac{\sum X}{N}$$

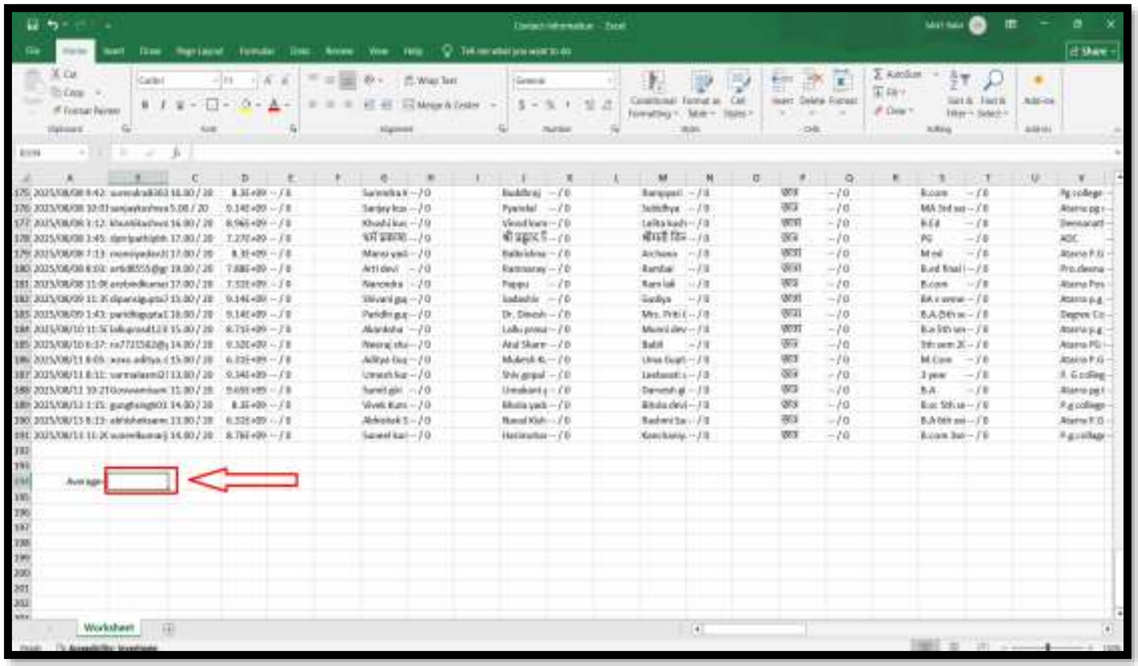
$\bar{x}$ = मध्यमान

$\sum x$ = प्राप्तांकों का योग

N = विद्यार्थियों की कुल संख्या

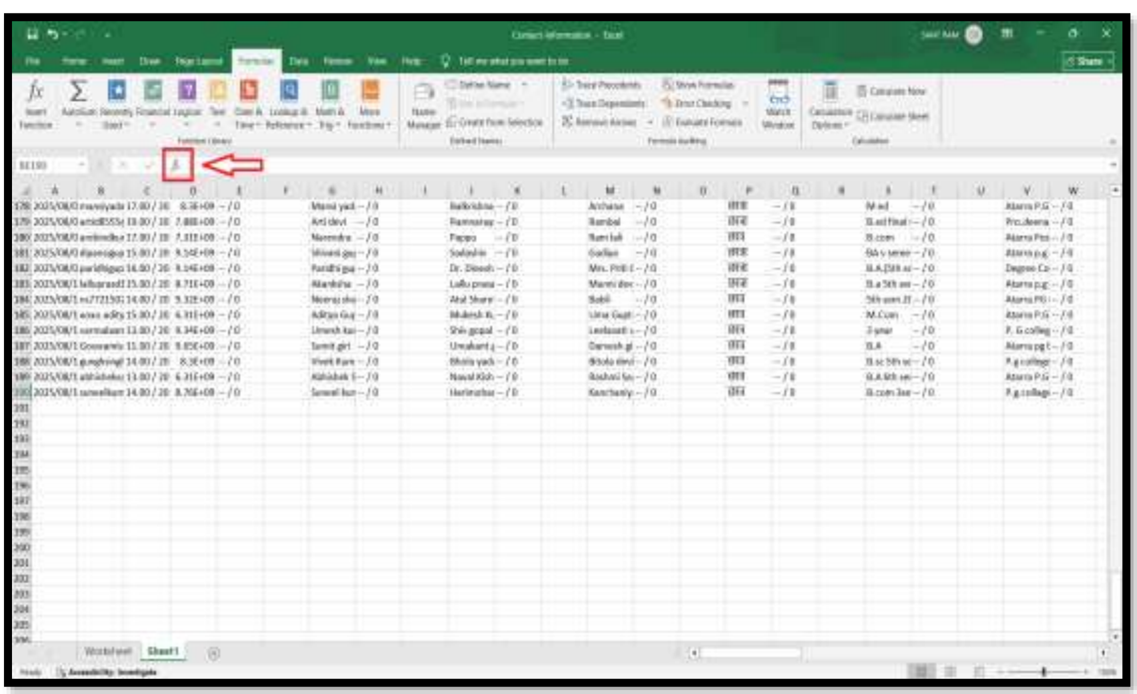
मध्यमान की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) किसी भी संख्या समूह का मध्यमान निकालने के लिए एक्सेल के **AVERAGE** Function का प्रयोग करते हैं। एक्सेल स्प्रेडशीट में संख्याओं को प्रविष्ट करके जहाँ पर एवरेज जानना चाहते हैं, वहाँ पर क्लिक करें।

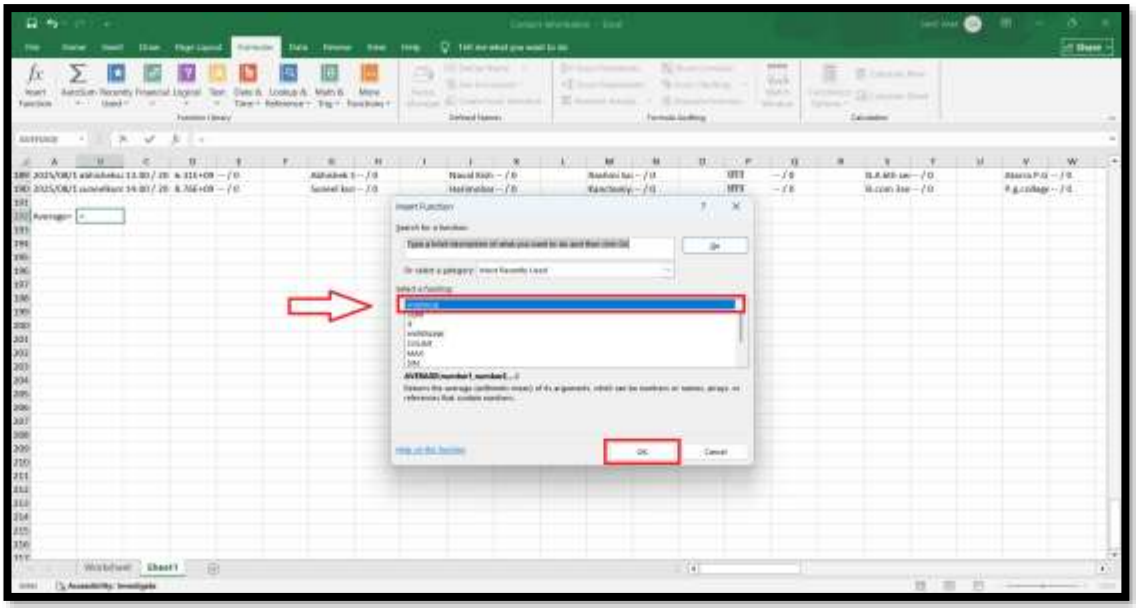


(ii) Formulas में क्लिक करें और 'Insert Function' tab को चुनें।

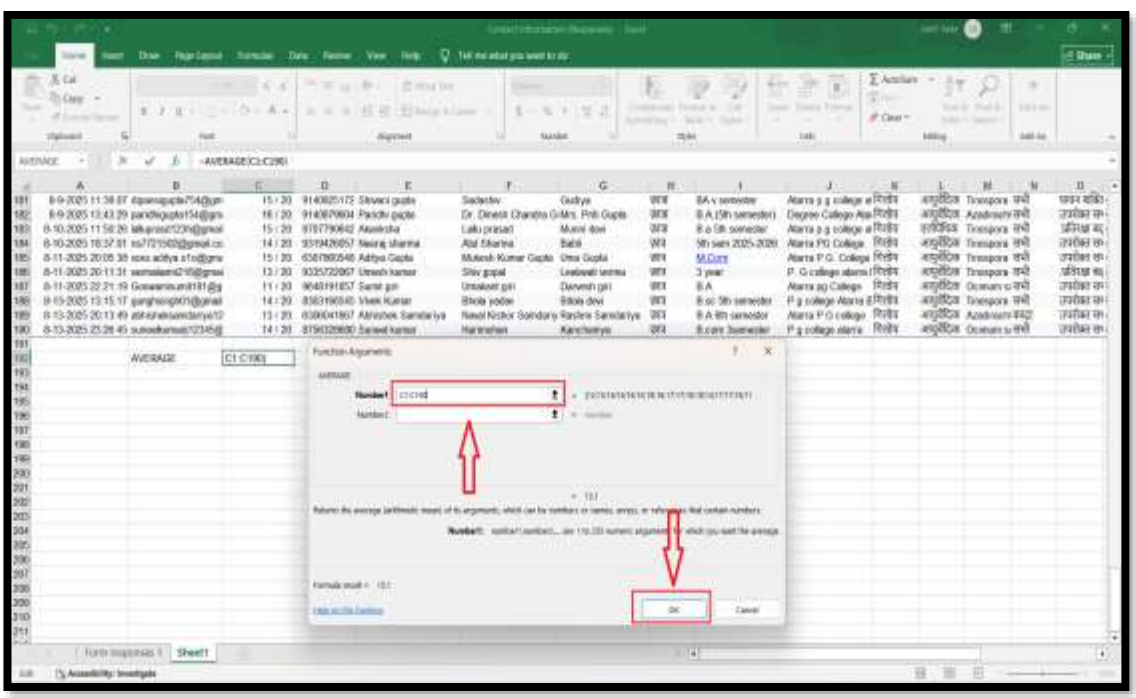
एक्सेल स्प्रेडशीट की row या column में enter करें।



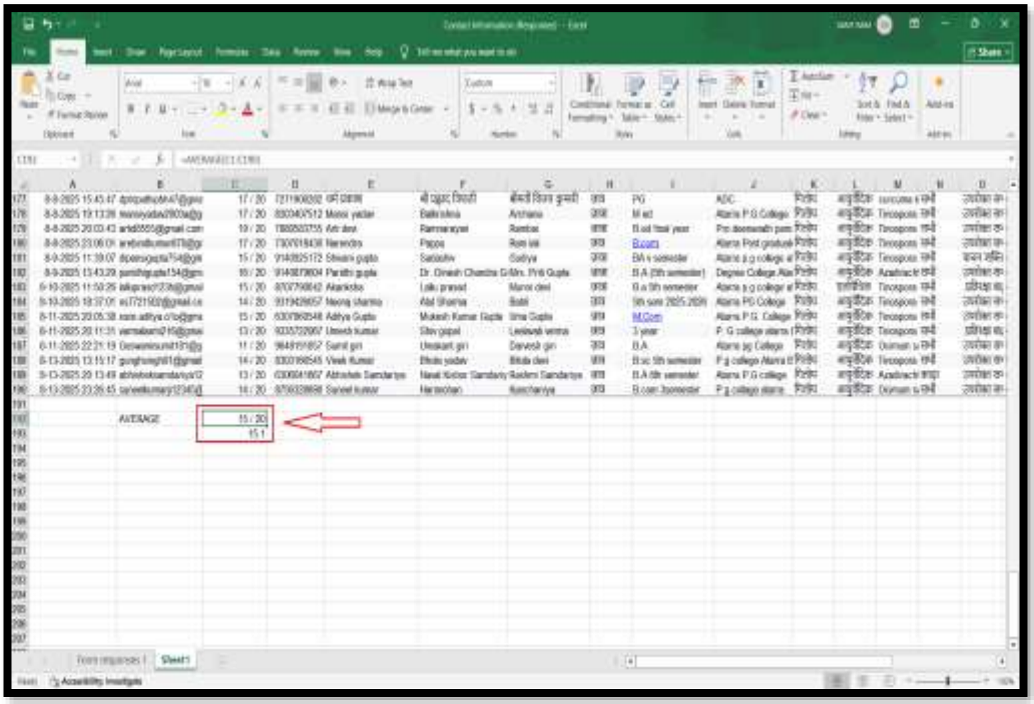
(iii) नीचे स्क्रॉल करें और **AVERAGE** Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए, एक cell range (जैसे—C1:C190) enter करें और ok क्लिक करें।



(v). अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का मध्यमान (average) नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप 'Insert Function' feature process का इस्तेमाल करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे इस सूत्र को type कर सकते हैं—

- Mean- "=AVERAGE (cell range)"

    e.g. "AVERAGE (C1:C190)"

4.11.3 प्रमाप विचलन (Standard Deviation)

प्रमाप विचलन समंक माला के विभिन्न पदों के समान्तर माध्य से लिए गये विचलनों के वर्गों के समान्तर माध्य का वर्गमूल होता है।

एलहान्स के अनुसार— "मानक विचलन अंकगणितीय माध्य से मापे गये विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।"

"Standard deviation is the square root of the arithmetic average of the squares of deviations measured from the mean."

—Elhance.

प्रमाप विचलन को मानक विचलन या प्रामाणिक विचलन भी कहा जाता है। इसका संकेताक्षर **σ** है।

प्रमाप विचलन की गणना करने का सूत्र निम्नलिखित है—

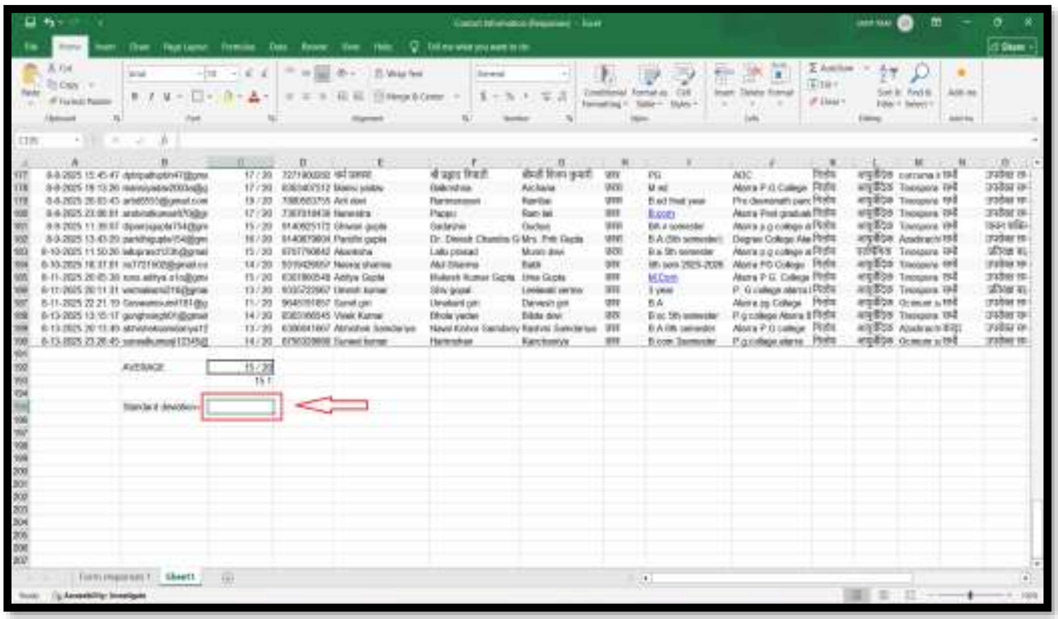
$$\sigma = \sqrt{\frac{\sum (x - \text{mean})^2}{n}}$$

- x is a set of numbers
- mean is the average of the set of numbers
- n is the size of the set
- σ is the standard deviation

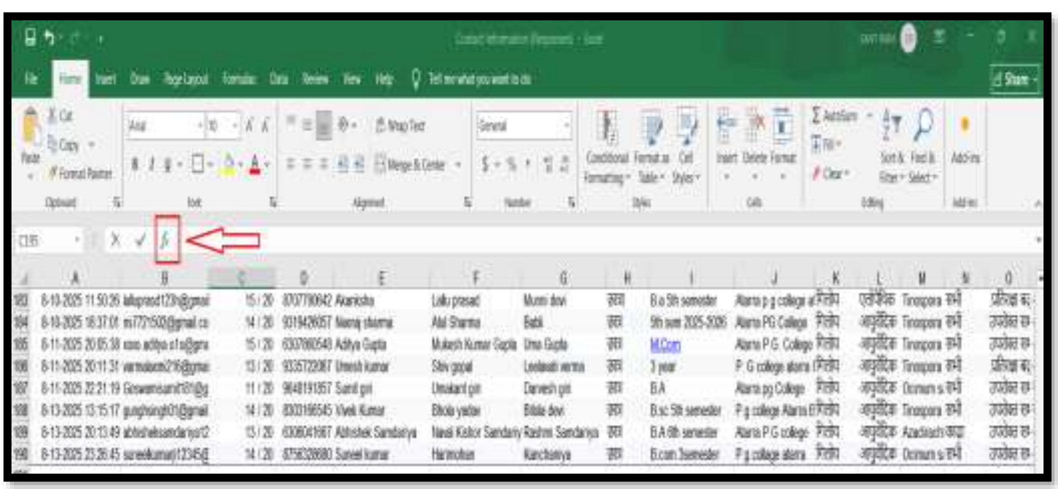
प्रमाप विचलन की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

(i) प्रमाप विचलन की गणना के लिए **STDEVP** Function का प्रयोग करें।

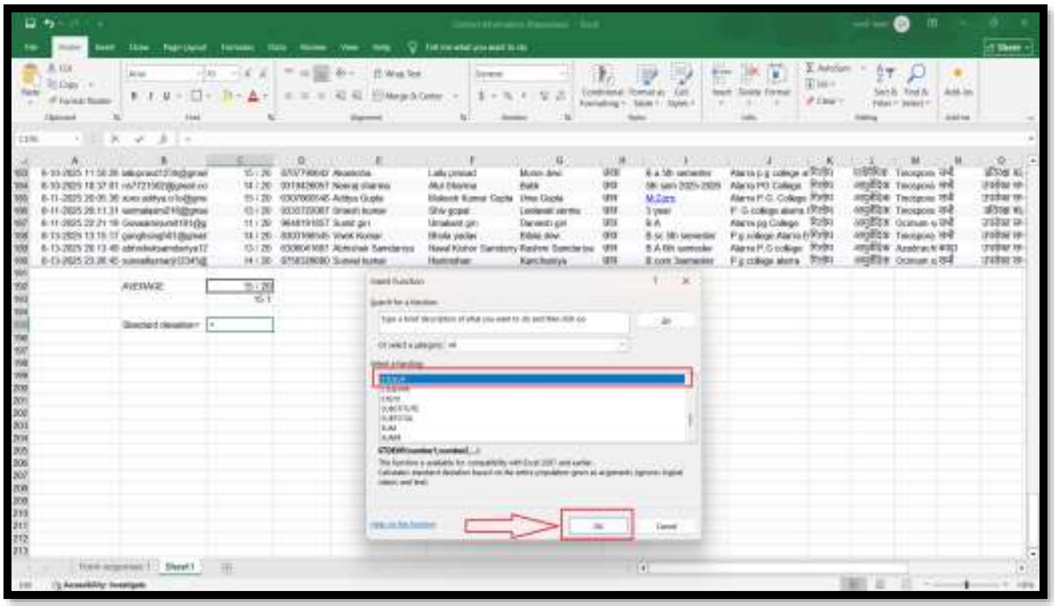
आपके कर्सर को उस जगह पर रखें, आप जहाँ इसे देखना चाहते हैं।



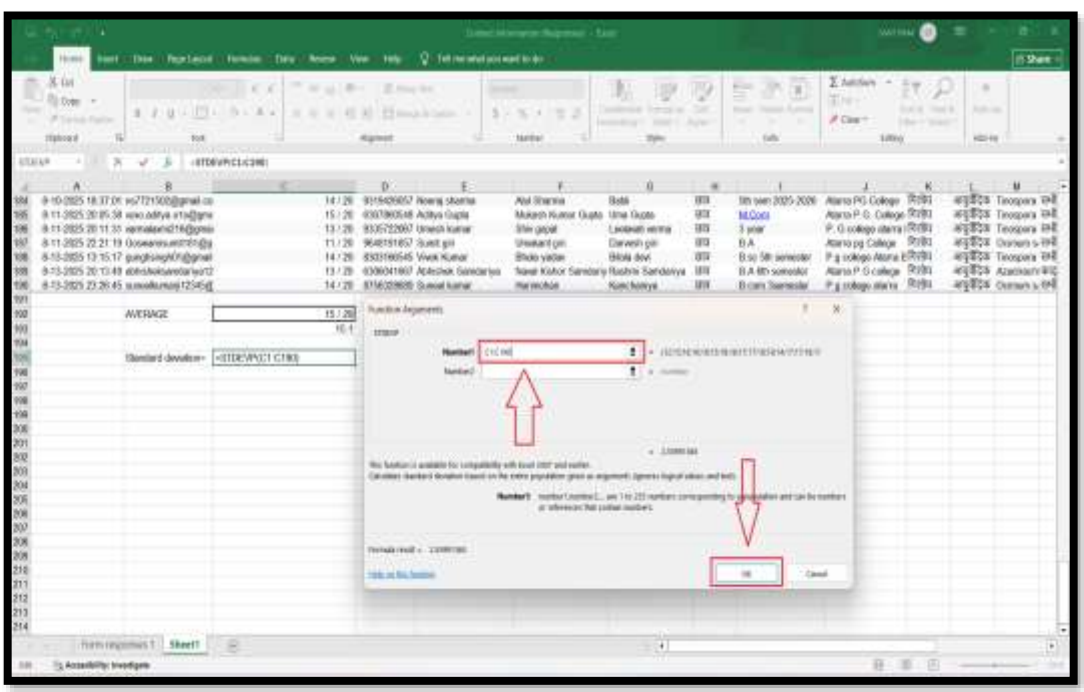
(ii). FORMULAS पर क्लिक करें और एक बार फिर से **Insert Function tab** चुनें।



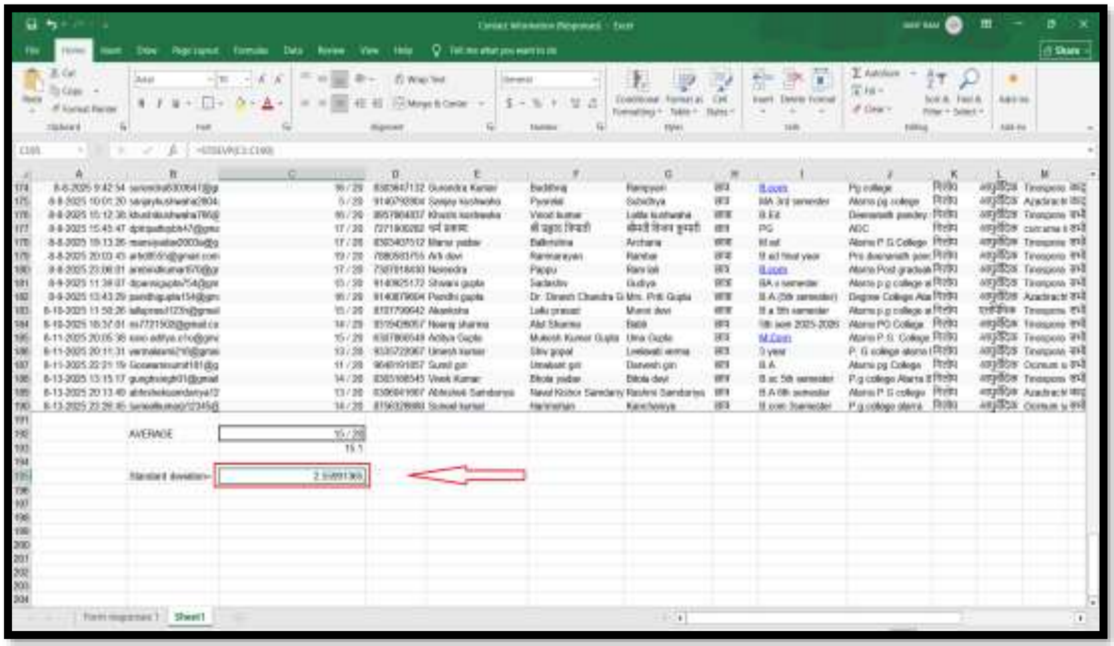
(iii). Dialog box पर scroll down करें और **STDEVP** Function चुनें।



(iv) नम्बर 1 box में आपके नम्बर की लिस्ट के लिए cell range enter करें और ok करें।



(v) अब आपके द्वारा चुनी हुई cell में उस लिस्ट का प्रमाप विचलन नजर आयेगा।



जब आपको इस फंक्शन का प्रयोग करने की आदत हो जायेगी फिर आप Insert Function feature process का प्रयोग करना बन्द कर सकते हैं और इसकी जगह पर cell में सीधे सूत्र को type कर सकते हैं।

- Standard Deviation- "STDEVP (Cell range)

e.g. "STDEVP (C1:C190)"

4.11.4 वैषम्यता तथा कुकुदता (Skewness and Kurtosis)

वैषम्यता से तात्पर्य सामान्य वक्र में होने वाले अपसरण से है, जो किसी जनसंख्या के माध्य और माध्यिका में होने वाले अंतर से उत्पन्न होता है। सामान्य वक्र में माध्य, माध्यिका तथा बहुलांक वक्र की आधार रेखा के मध्य एक ही बिन्दु पर पड़ते हैं तथा इन तीनों का मान भी संख्यात्मक रूप से भी बराबर होता है। इसके फलस्वरूप सामान्य वक्र का चित्र काफी सन्तुलित दिखाई पड़ता है क्योंकि इसका दायाँ और बायाँ भाग समान ढाल वाला और एक दूसरे के बराबर होता है। परन्तु जब वितरण सामान्य न होकर विषम होता है

तो माध्य तथा माध्यिका एक ही बिन्दु पर न पड़कर अलग-अलग पड़ते हैं और प्राप्तांकों का केन्द्रीकरण वितरण के बायीं या दायीं ओर हो जाता है। सामान्य वक्र में माध्य और माध्यिका दोनों बराबर होते हैं इसलिए विषमता शून्य होती है, परन्तु विषम वितरण में माध्य और माध्यिका में अन्तर होता है, यह अन्तर जितना ज्यादा होता है; विषमता उतनी अधिक होती है।

'विषमता' को इन दो 'सूत्रों' द्वारा ज्ञात किया जा सकता है–

(क) $$Sk = \frac{3(\text{माध्य} - \text{मध्यिका})}{\sigma}$$

यहाँ – Sk = विषमता, σ = मानक विचलन।

(ख) $$Sk = \frac{(P_{99} + P_{10})}{2} - P_{50}$$

जहां, SK = विषमता

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{10} = प्रतिशतता 10

P_{50} = प्रतिशतता 50 या मध्यिका

सामान्य वैषम्यता प्रसार

- If skewness is less than -1 or greater than 1, the distribution is highly skewed.
- If skewness is between -1 and -0.5 or between 0.5 and 1, the distribution is moderately skewed.
- If skewness is between -0.5 and 0.5, the distribution is approximately symmetric.

एक 'आवृत्ति वितरण वक्र', प्रसामान्य वक्र की तुलना में कितना **चपटा** अथवा **शिखरीय** है, इसकी जानकारी **कुकुदता** से मिलती है।

'ककुदता या 'कुर्टोसिस' को नीचे दिये गये 'सूत्र' द्वारा निकाला जा सकता है।

$$Ku = \frac{Q}{(P_{90} + P_{10})}$$ (प्रतिशत के आधार पर वक्रता को निकालना।)

जहां, Ku = ककुदता

Q = चतुर्थक विचलन

P_{90} = प्रतिशतता 90

P_{100} = प्रतिशतता 10

सामान्य कुकुदता प्रसार

A standard normal distribution has kurtosis of 3 and is recognized as mesokurtic. An increased kurtosis (>3) can be visualized as a thin "bell" with a high peak whereas a decreased kurtosis corresponds to a broadening of the peak and "thickening" of the tails.

ऑनलाइन वैषम्यता और कुकुदता ज्ञात करने के चरण—

Step 1: सबसे पहले गूगल क्रोम ब्राउज़र को खोलें।



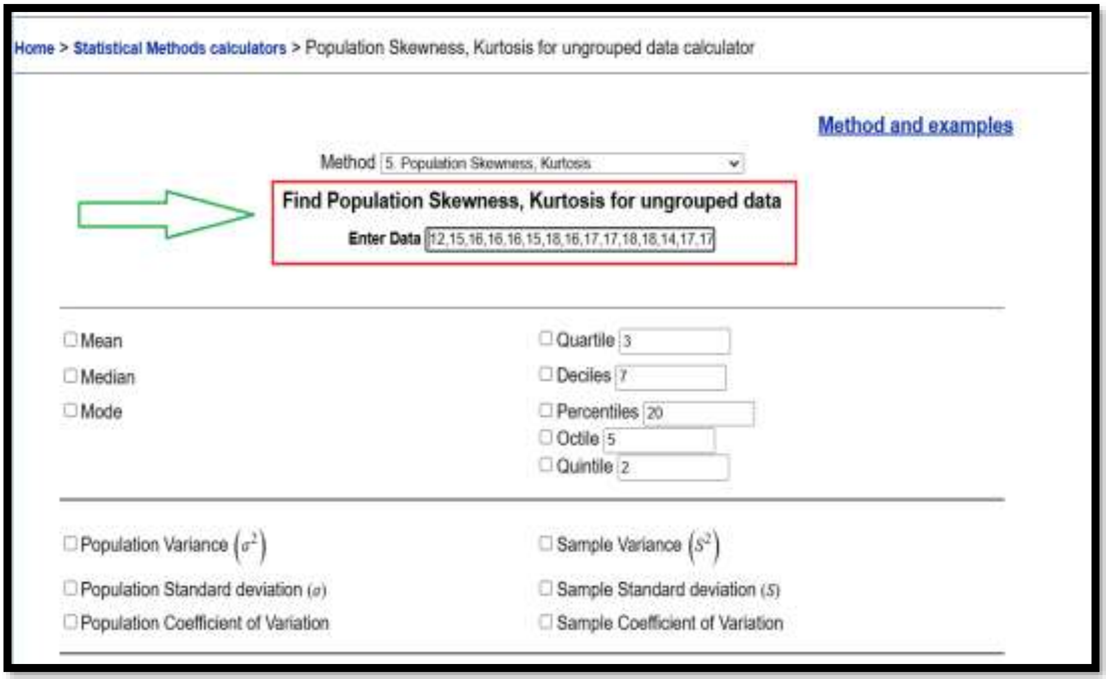
Step 2: Online Skewness and Kurtosis ungrouped data खोजें।



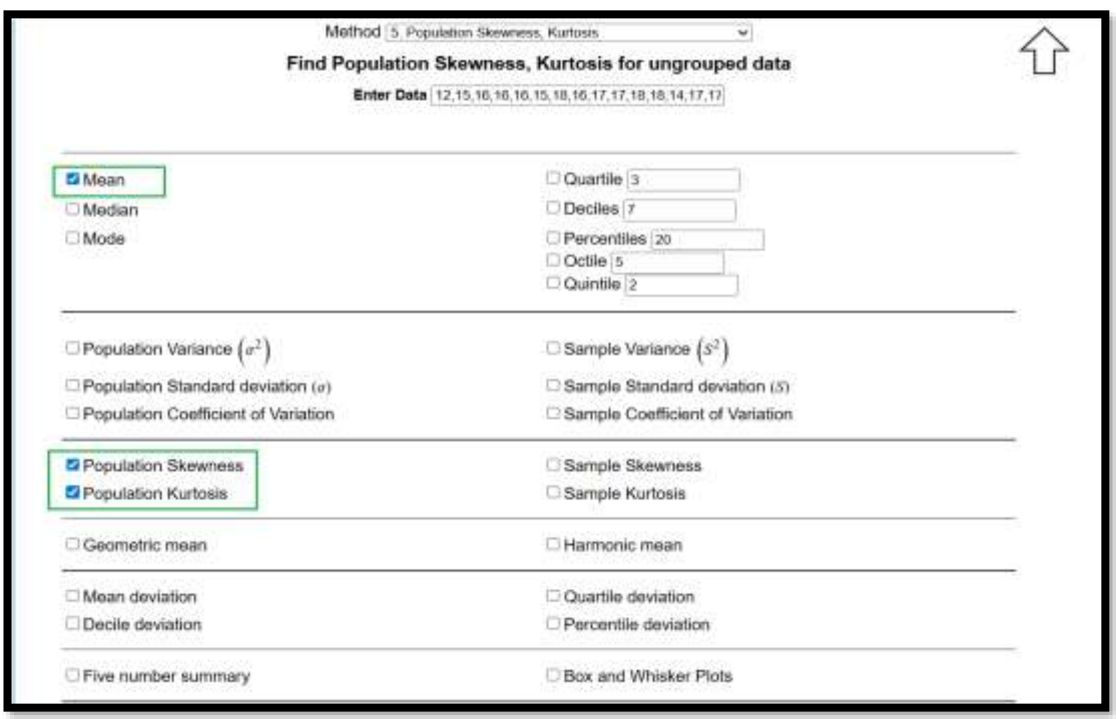
Step 3: पहले सर्च रिजल्ट (A to Z math) को खोलें।



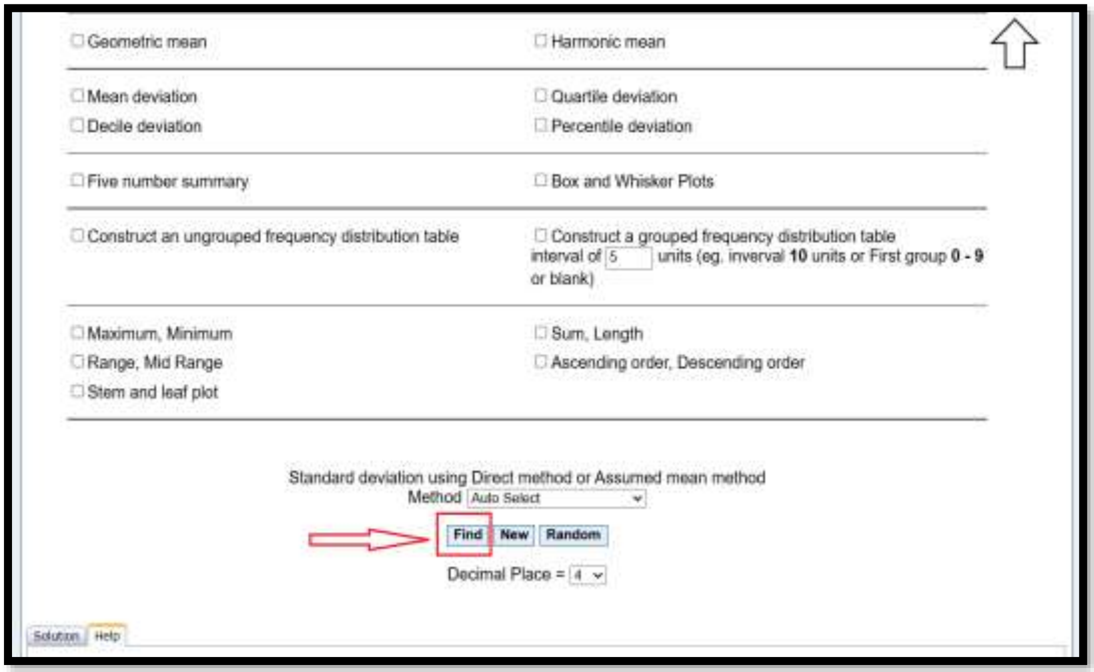
Step 4: Data enter करें।



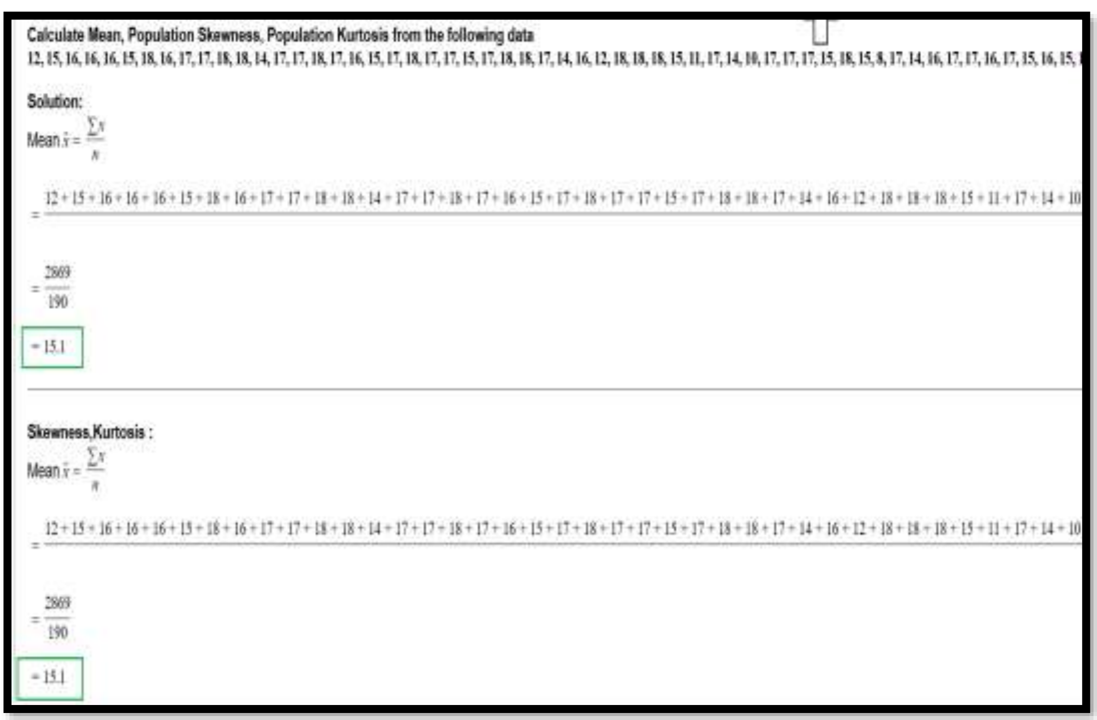
Step 5: Mean, Skewness तथा Kurtosis option को select करें।



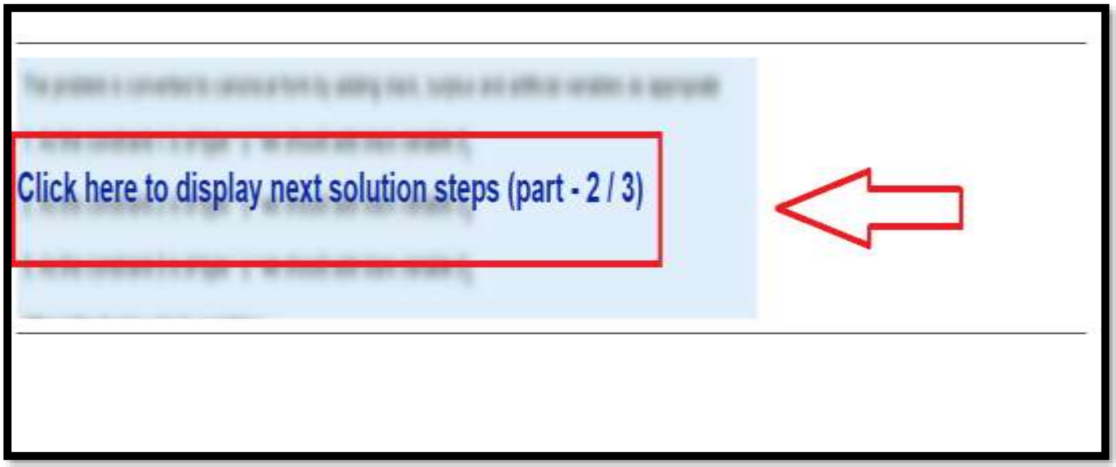
Step 6: Find पर click करें।



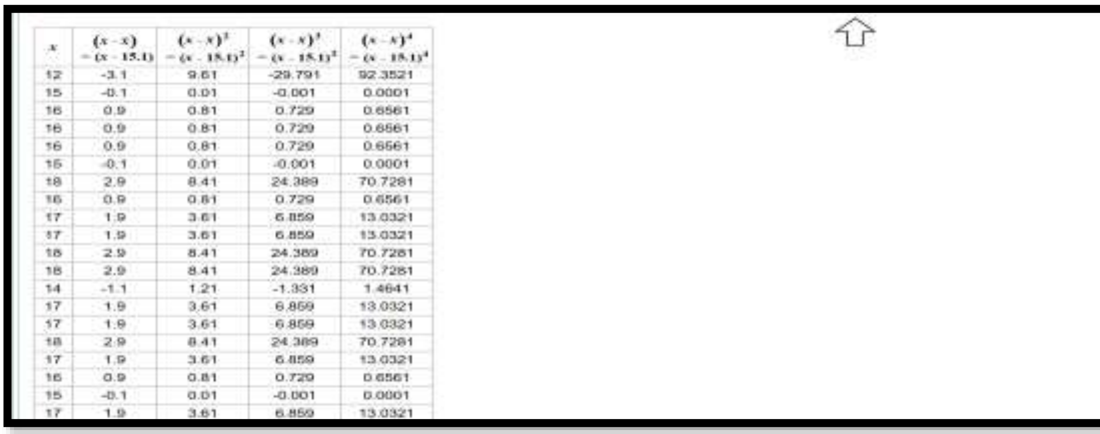
Step 7: आपका Mean का Result आपके सामने Open हो जायेगा।



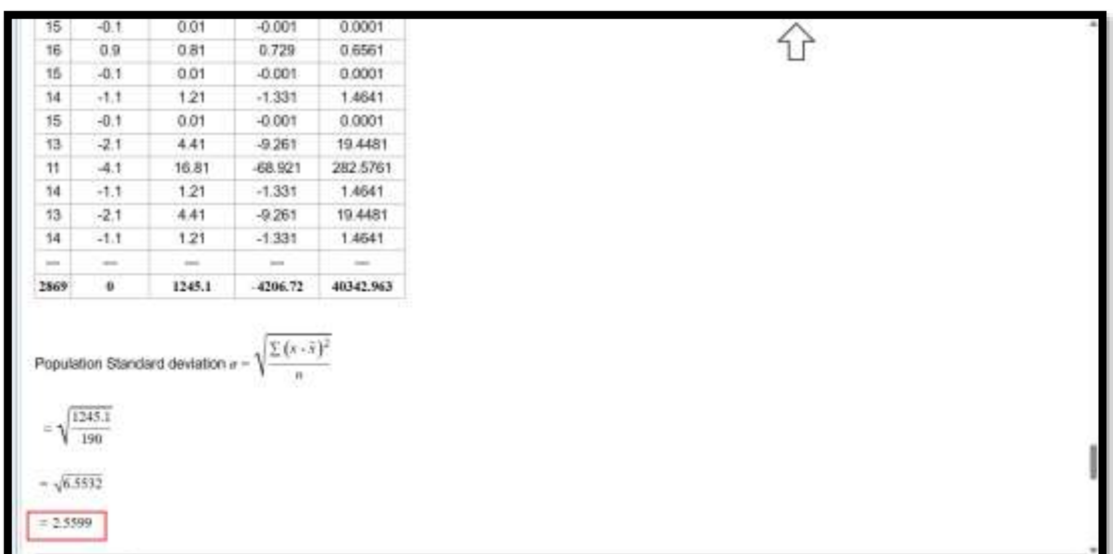
Step 8: Next solution steps (part – 2/3) पर click करें।



Step 9: आपका Population Standard deviation का Result आपके सामने Open हो जायेगा।



x	$(x-\bar{x})$ $=(x-15.1)$	$(x-\bar{x})^2$ $=(x-15.1)^2$	$(x-\bar{x})^3$ $=(x-15.1)^3$	$(x-\bar{x})^4$ $=(x-15.1)^4$
12	-3.1	9.61	-29.791	92.3521
15	-0.1	0.01	-0.001	0.0001
16	0.9	0.81	0.729	0.6561
16	0.9	0.81	0.729	0.6561
16	0.9	0.81	0.729	0.6561
15	-0.1	0.01	-0.001	0.0001
18	2.9	8.41	24.389	70.7281
16	0.9	0.81	0.729	0.6561
17	1.9	3.61	6.859	13.0321
17	1.9	3.61	6.859	13.0321
18	2.9	8.41	24.389	70.7281
18	2.9	8.41	24.389	70.7281
14	-1.1	1.21	-1.331	1.4641
17	1.9	3.61	6.859	13.0321
17	1.9	3.61	6.859	13.0321
18	2.9	8.41	24.389	70.7281
17	1.9	3.61	6.859	13.0321
16	0.9	0.81	0.729	0.6561
15	-0.1	0.01	-0.001	0.0001
17	1.9	3.61	6.859	13.0321



15	-0.1	0.01	-0.001	0.0001
16	0.9	0.81	0.729	0.6561
15	-0.1	0.01	-0.001	0.0001
14	-1.1	1.21	-1.331	1.4641
15	-0.1	0.01	-0.001	0.0001
13	-2.1	4.41	-9.261	19.4481
11	-4.1	16.81	-68.921	282.5761
14	-1.1	1.21	-1.331	1.4641
13	-2.1	4.41	-9.261	19.4481
14	-1.1	1.21	-1.331	1.4641
---	---	---	---	---
2869	**0**	**1245.1**	**-4206.72**	**40342.963**

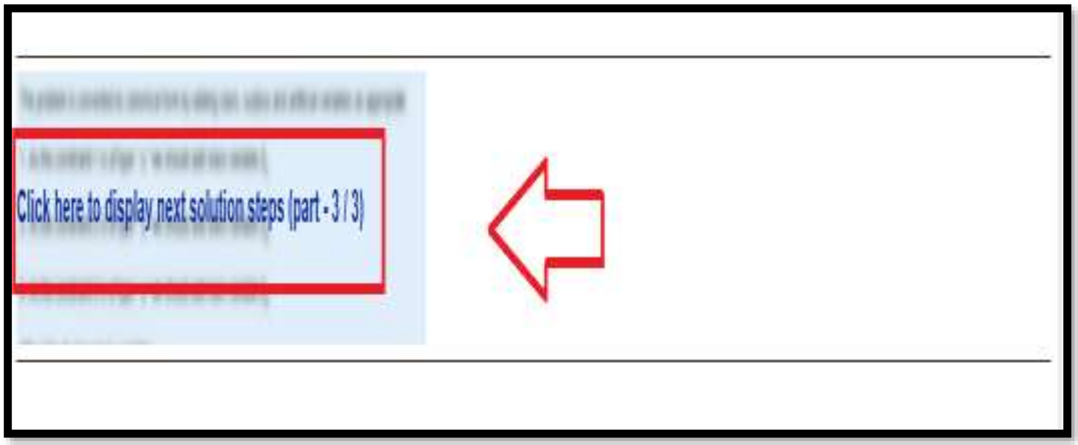
Population Standard deviation $\sigma = \sqrt{\frac{\sum (x-\bar{x})^2}{n}}$

$= \sqrt{\frac{1245.1}{190}}$

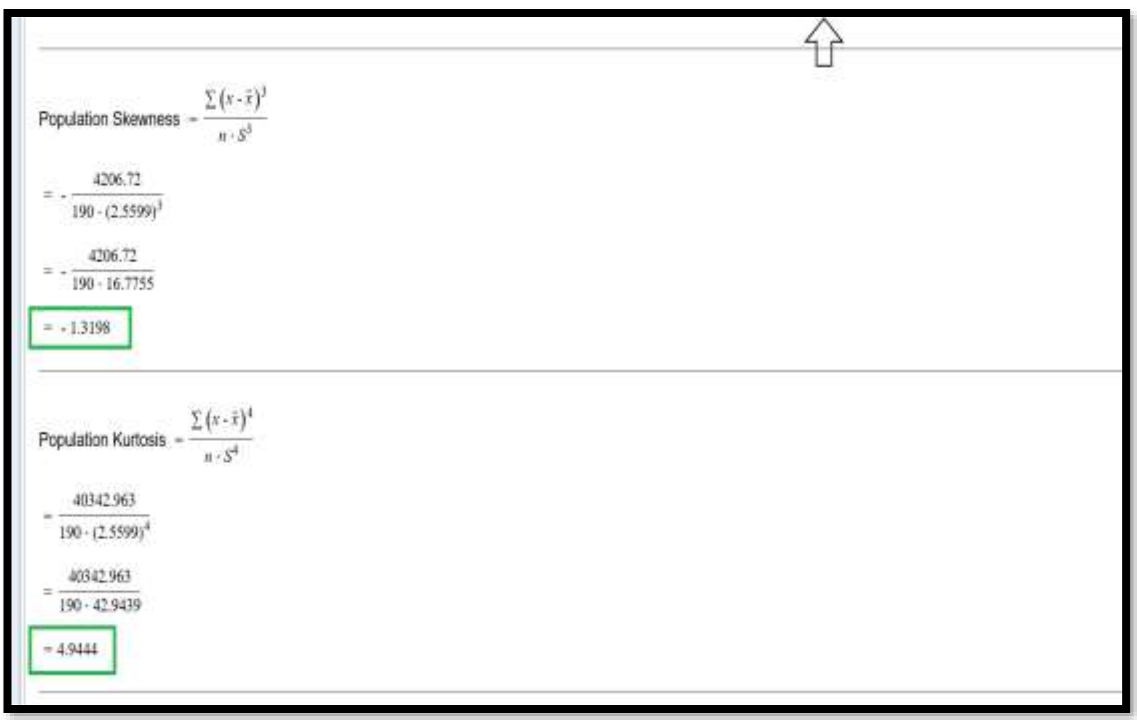
$= \sqrt{6.5532}$

$= 2.5599$

Step 10: Next solution steps (part – 3/3) पर click करें।



Step 9: आपका Population Skewness एवं Population Kurtosis का Result आपके सामने Open हो जायेगा।



4.11.5 सामान्य सम्भाव्यता वक्र (Normal Probability Curve)

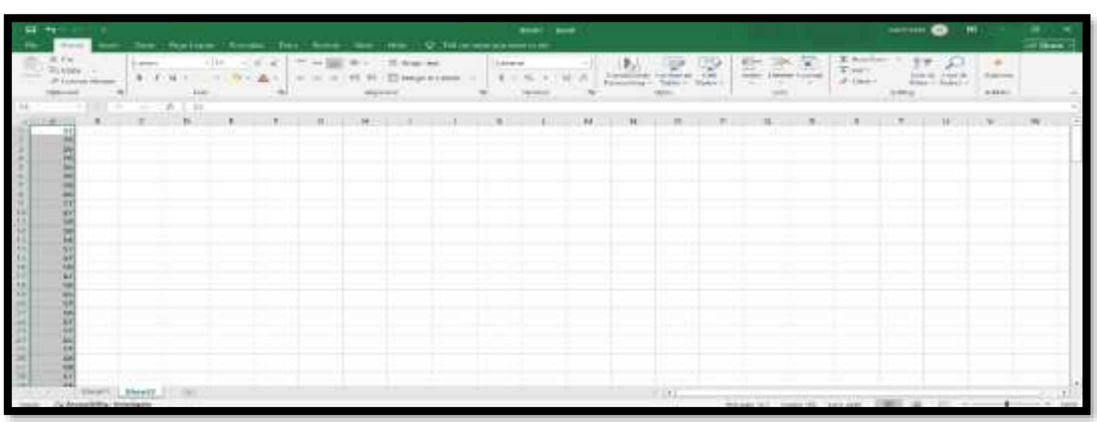
सामान्य सम्भाव्यता वक्र को सामान्य वक्र भी कहते हैं। इसका विकास 'त्रुटि के नियम' के आधार पर हुआ है। इस वक्र के जन्मदाता **ए० डी० मोरे** कहे जाते हैं। वे एक फ्रेंच गणितज्ञ थे और उन्होंने जुएं के खेल में संयोग की घटना की व्याख्या सामान्य सम्भाव्यता के आधार पर की। खगोलविद **कार्ल फ्रेडरिक गॉस** ने भी भौतिक विज्ञान में निरीक्षण सम्बन्धित त्रुटियों की व्याख्या सामान्यता के आधार पर की तथा त्रुटियों का सामान्य वक्र बनाया।

सामान्य वितरण की विशेषता यह होती है कि वितरण के मध्य में सर्वाधिक प्राप्तांक होते हैं तथा क्रमशः दोनों किनारों पर घटते जाते हैं। इसी सामान्य वितरण के आधार पर जो वक्र बनता है, उसे सामान्य वितरण वक्र या सामान्य सम्भाव्यता वक्र या सामान्य वक्र कहते हैं। यह वक्र सममित होता है तथा इसकी ऊँचाई मध्य में सर्वाधिक होती है। दोनों किनारों की ओर इसकी ऊँचाई घटती जाती है परन्तु आधार रेखा को स्पर्श नहीं करती है।

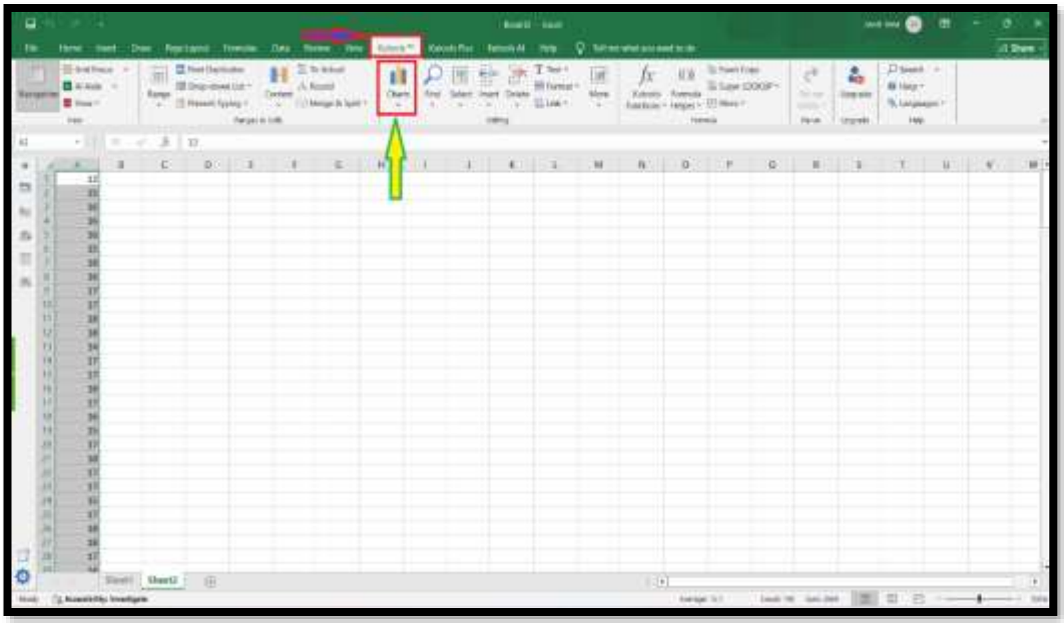
सामान्य सम्भाव्यता वक्र की गणना हेतु एम० एस० एक्सेल के चरण—

Step 1: अपने कंप्यूटर में Kutool for Excel डाउनलोड करके इंस्टॉल कर लें।

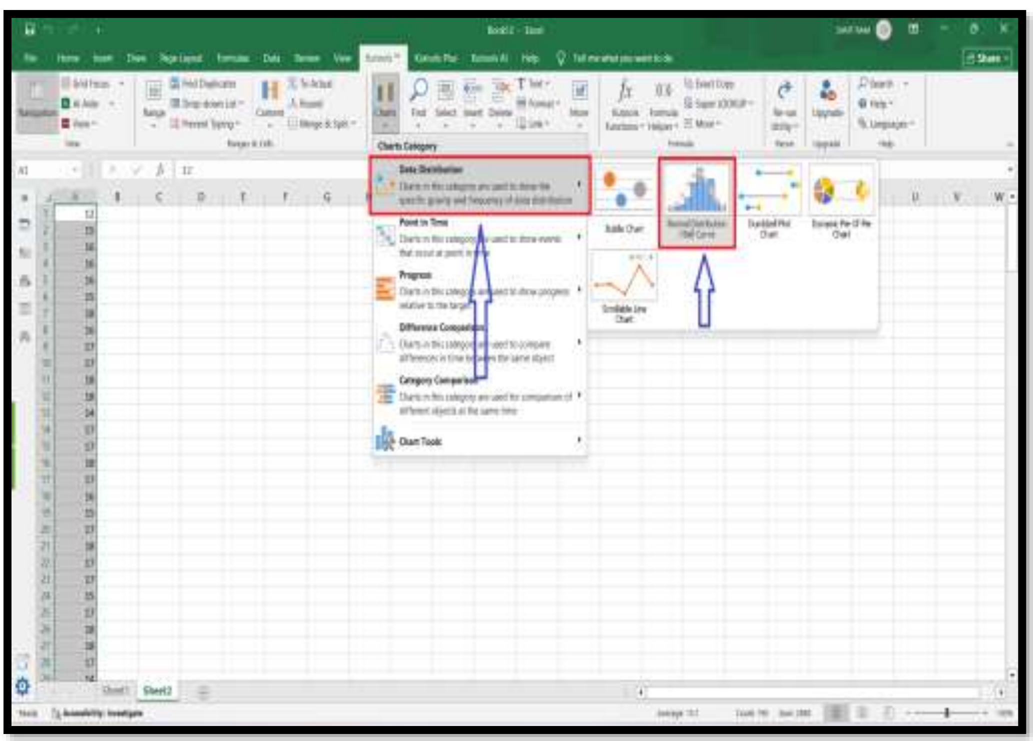
Step 2: Ms Excel में first cell lowest range से लेकर highest range तक data enter करें, तथा पूरा सेलेक्ट कर लें।



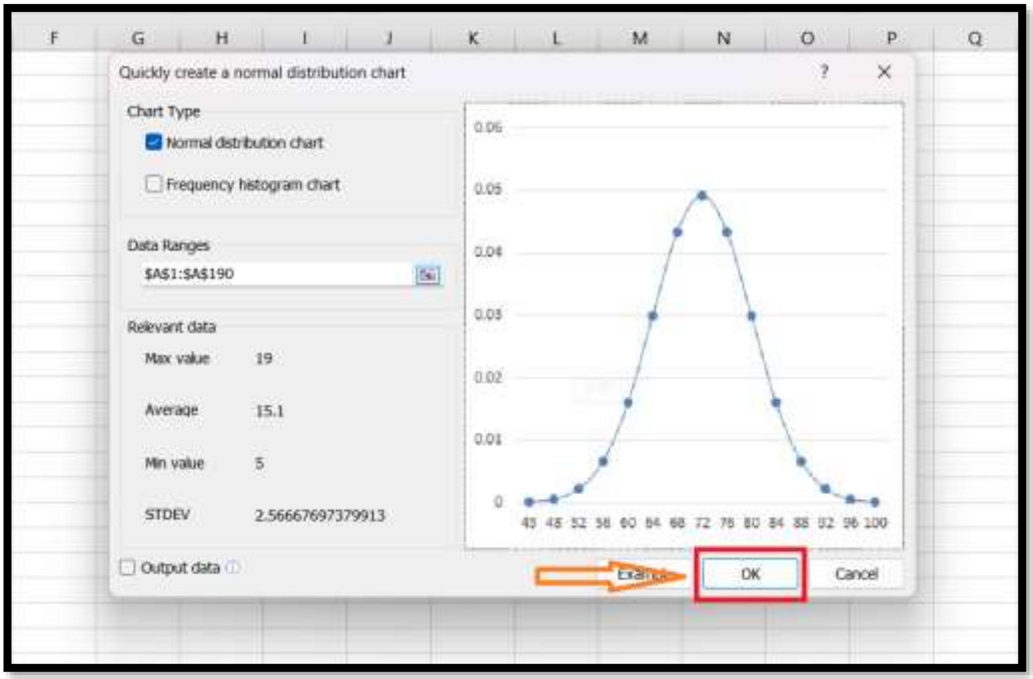
Step 3: Kutools पर click कर Charts का चयन करें।



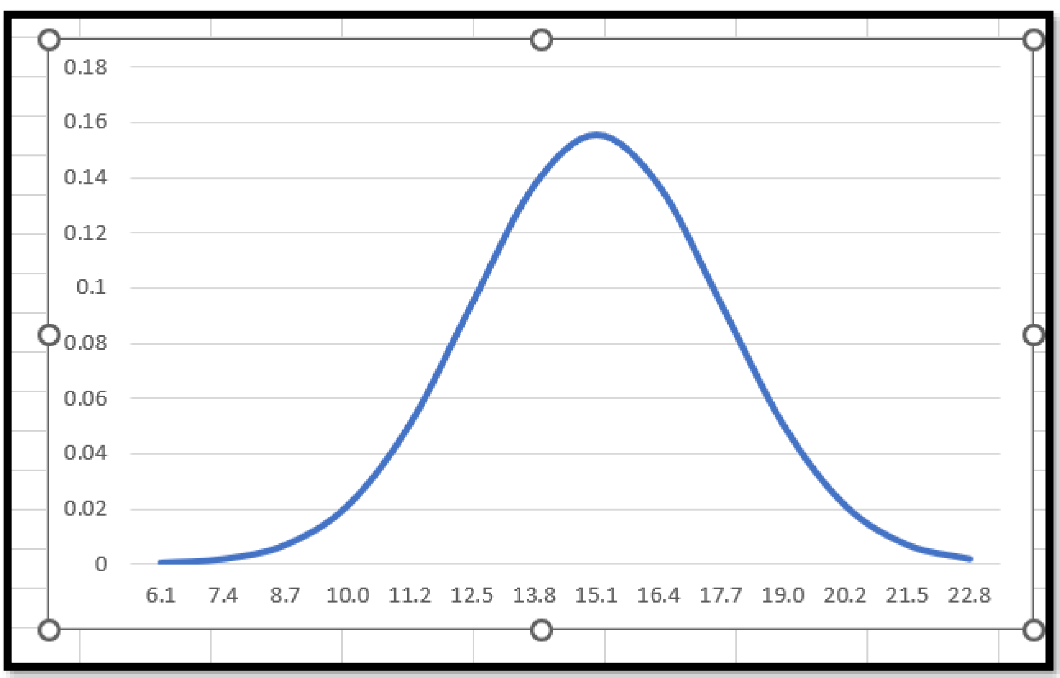
Step 4: Data Distribution पर Click करें तथा Normal Distribution/Bell Curve को चुनें।



Step 5: Ok पर Click करें।



Step 6: अब आपको NPC नजर आएगा।



4.11.6 क्रान्तिक अनुपात (Critical Ratio)

दो समूहों के मध्यमानों के मध्य अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। इसका प्रयोग तब किया जाता है जब समूह के प्राप्तांकों की संख्या 30 या 30 से अधिक होती है। क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित सूत्र के द्वारा की जाती है—

$$t = \frac{(X_1 - X_2)}{\sqrt{\frac{(S_1)^2}{n_1} + \frac{(S_2)^2}{n_2}}}$$

जहाँ–

X_1 = पहले समूह का मध्यमान

X_2 = दूसरे समूह का मध्यमान

n_1 = पहले समूह का आकार

n_2 = दूसरे समूह का आकार

S_1 = पहले समूह का प्रमाप विचलन

S_2 = दूसरे समूह का प्रमाप विचलन

स्वतन्त्रता की कोटि (df) को सूत्र– $df = (N_1+N_2) - 2$ द्वारा ज्ञात किया गया है। क्रान्तिक अनुपात गणना मान की सार्थकता टी- तालिका में .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से तुलना करके ज्ञात किया जाता है।

क्रान्तिक अनुपात की online गणना के चरण—

Online माध्यम से क्रान्तिक अनुपात की गणना निम्नलिखित चरणों में करते हैं—

Step 1: सर्वप्रथम Google chrome browser को open करते हैं।



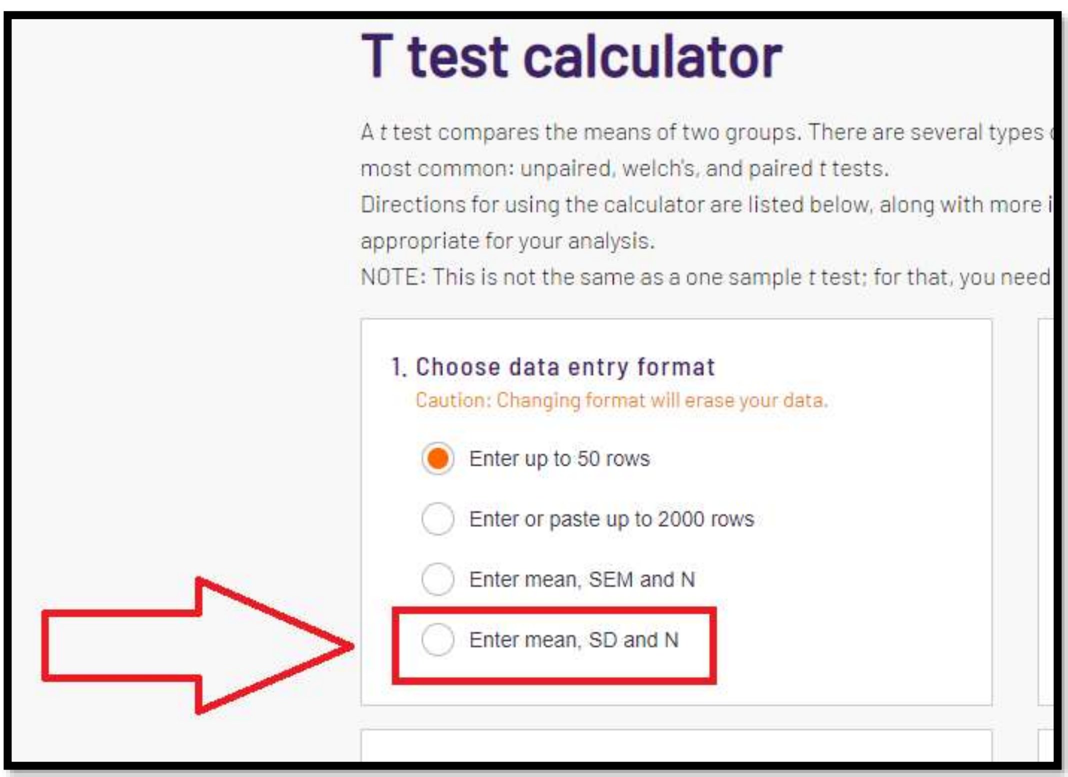
Step 2: Chrome में online t-test calculator search करते हैं।



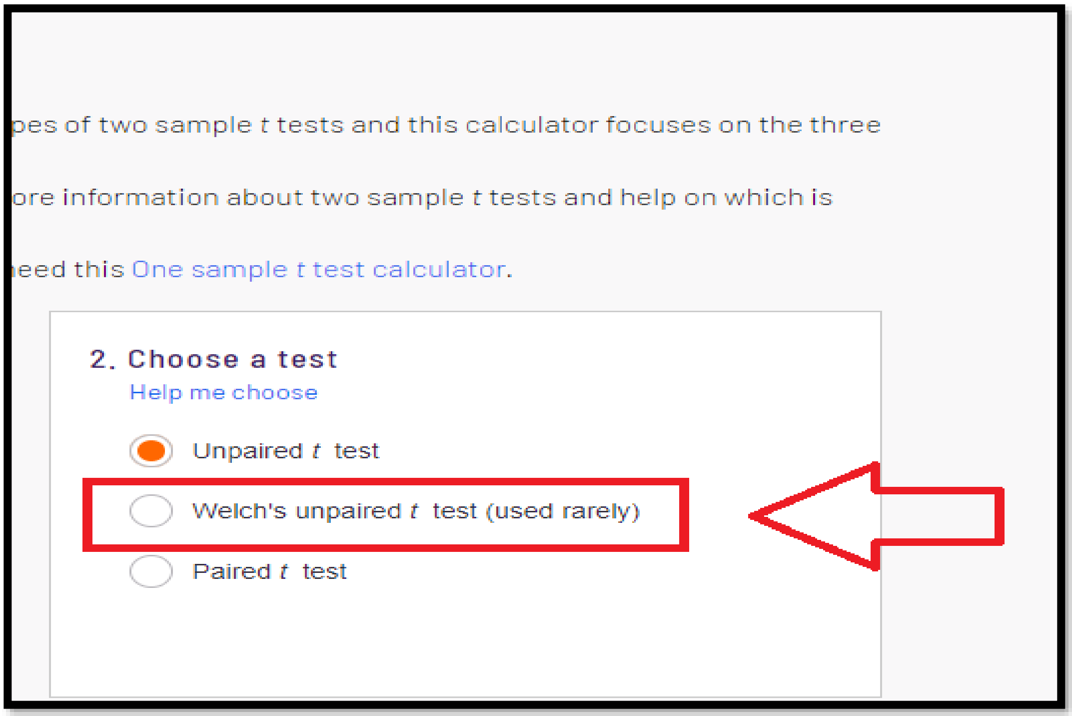
Step 3: विभिन्न search results में से प्रथम calculator (graph pad) को open करते हैं।



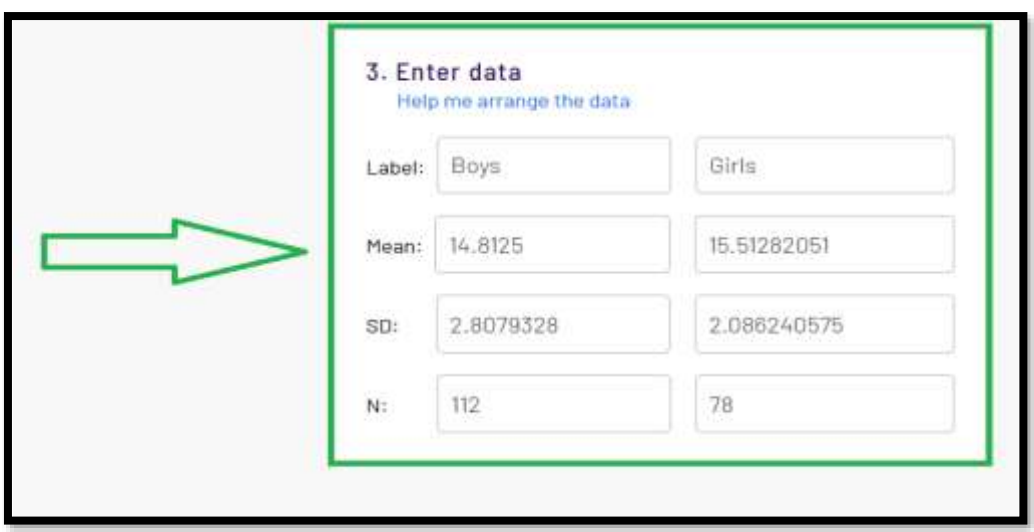
Step 4: Mean, S.D. तथा N Data fill करने वाले option पर क्लिक करते हैं।



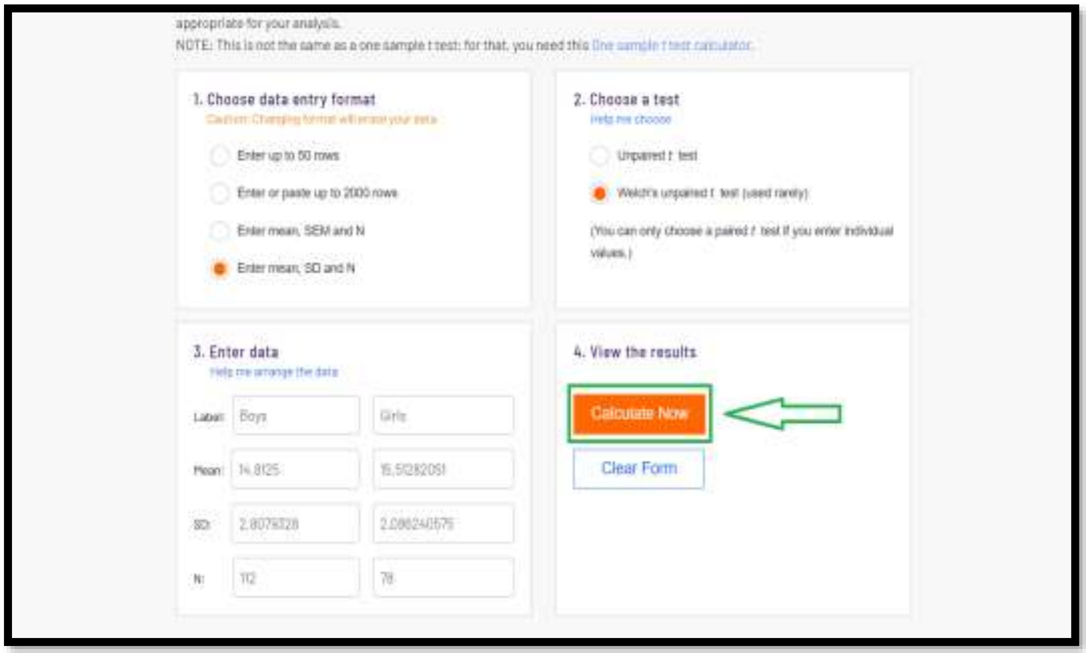
Step 5: Welch's unpaired t-test को चुनते हैं।



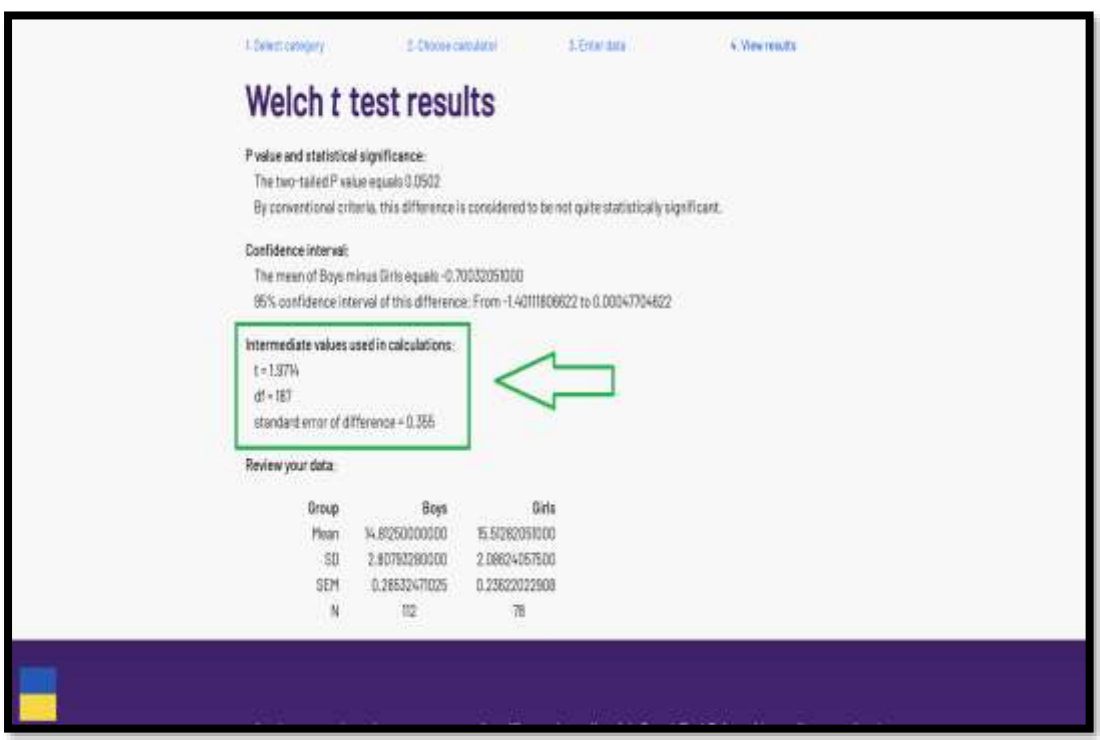
Step 6—आपके सामने data enter करने वाला option आयेगा। यहाँ पर प्रश्न में उपलब्ध data enter करते हैं। Group one में पहले समूह (छात्रों) का data तथा Group two में दूसरे समूह (छात्राओं) का data enter करते हैं।



Step 7— परिणाम देखने के लिए calculate now पर क्लिक करते हैं।



Step 8—आपका परिणाम निम्न प्रकार दिखायी देगा—



4.11.7 दण्ड आरेख (Bar Graph)

जब प्राप्त आँकड़ों को ग्राफ पेपर पर खड़े स्तम्भों के रूप में प्रदर्शित किया जाता है तो उसे दण्ड आरेख या स्तम्भ आरेख कहते हैं। इसका प्रयोग सामान्यतः स्कूलों में छात्रों और शिक्षकों की संख्या और साक्षर-निरक्षरों की संख्या आदि स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। दण्ड आरेख के द्वारा दो या दो से अधिक समूहों की मध्यमान योग्यता को भी स्पष्ट किया जा सकता है। दण्ड आरेख लम्बवत या क्षैतिज किसी भी दिशा में बनाए जा सकते हैं परन्तु सामान्यतः इन्हें लम्बवत ही बनाया जाता है।

अध्याय पञ्चम

* प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन *

5.1 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

5.2 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नश: विश्लेषण

5.3 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति छात्र-छात्राओं में जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

अध्याय पञ्चम

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य वर्णित शोध-विधि द्वारा एकत्रित प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण तथा विवेचन करना है। प्रस्तुत अध्याय में सांख्यिकी गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है।

5.1 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन

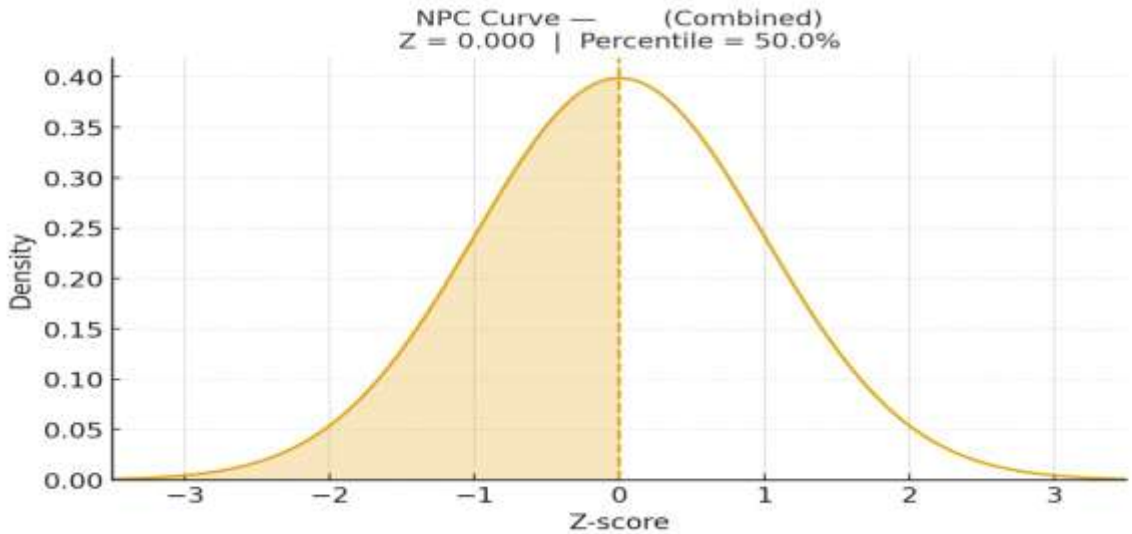
तालिका संख्या 5.1

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता की विश्लेषण तालिका

लिंग	संख्या (N)	मध्यमान (M)	माध्यिका (Md)	प्रमाप विचलन (S.D.)	वैषम्यता (Sk)	कुकुदता (Ku)
छात्र	68	15.20	15.00	2.45	-0.38	3.10
छात्राएँ	32	15.70	16.00	2.10	-0.42	3.25
कुल विद्यार्थी	100	15.30	15.00	2.42	-0.40	3.20

चित्र संख्या 5.1.1

छात्रों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भाव्यता वक्र (NPC)

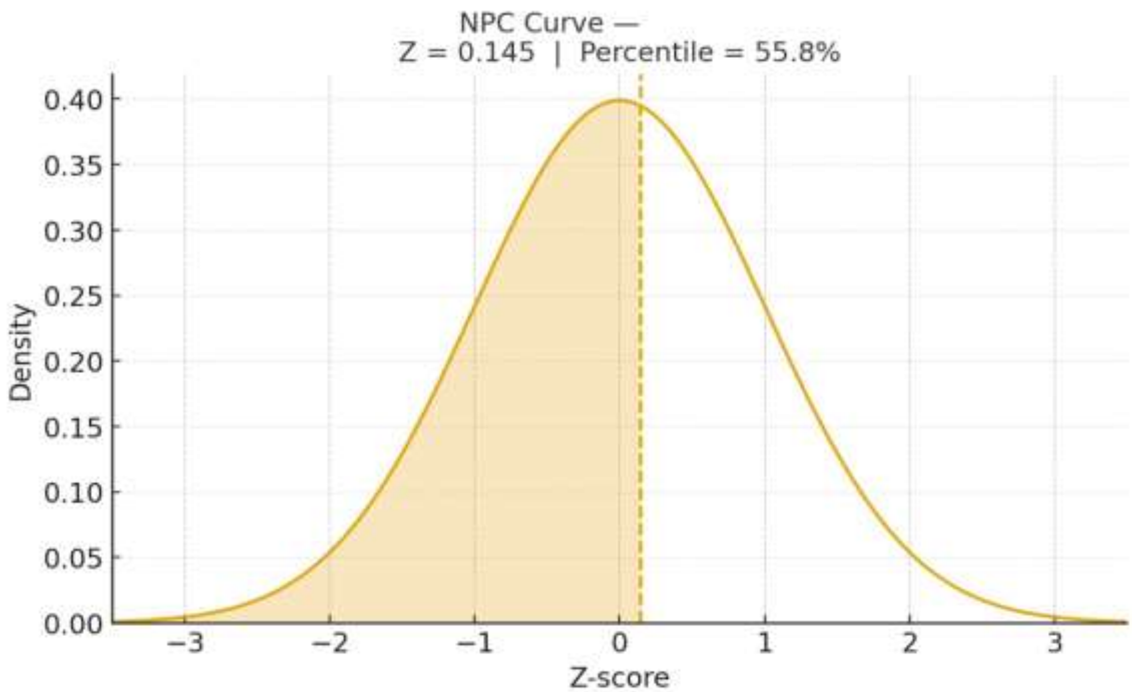


विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्रों का मध्यमान 15.20 तथा प्रमाप विचलन 2.45 है। छात्रों के लिए वैषम्यता का मान -0.38 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 से 0.5 के मध्य होता है है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। अतः वितरण सममित/सन्तुलित है। 1.0 से अधिक या-1.0 से कम का अतिरिक्त कर्टोसिस सामान्य पूँछ व्यवहार से काफी विचलन दर्शाता है। यह सांख्यिकीय प्रक्रिया को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है , अतः वितरण सामान्य वितरण से स्पष्ट रूप से भिन्न है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल छात्रों की वैषम्यता का स्तर सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, जबकि कुकुदता का स्वरूप प्लैटीकुर्टिक है,(सामान्य वितरण से भिन्न है) जो चित्र संख्या 5.1.1 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता है।

चित्र संख्या 5.1.2

छात्राओं की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भाव्यता वक्र (NPC)

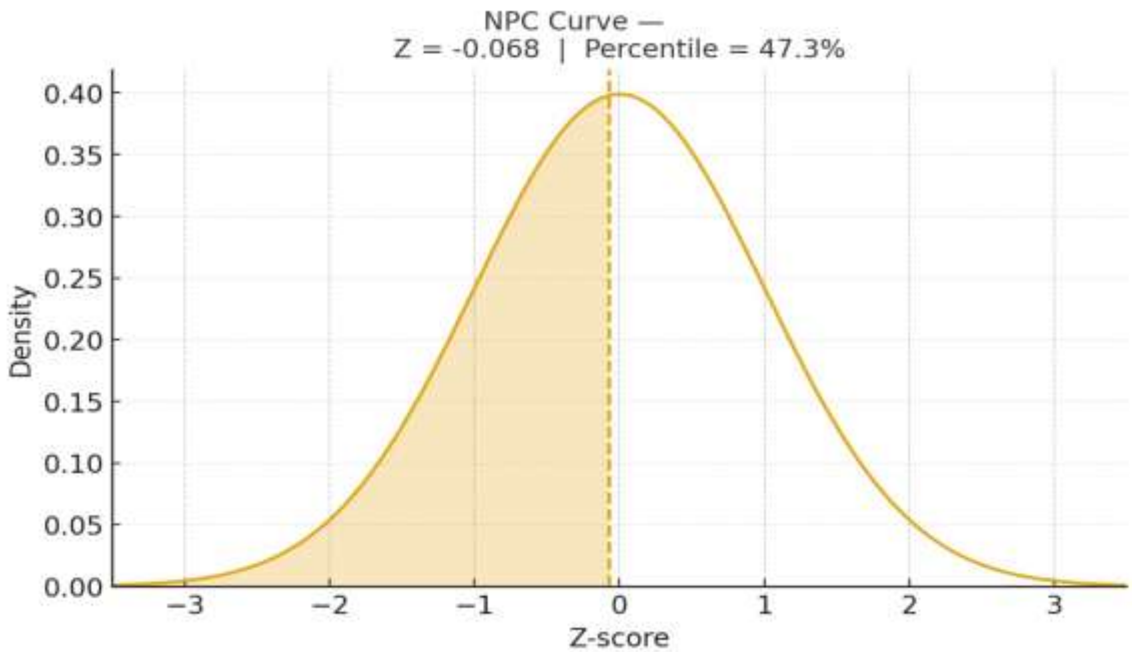


विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि छात्राओं का मध्यमान 15.70 तथा प्रमाप विचलन 2.10 है। छात्राओं के लिए वैषम्यता का मान -0.38 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। अतः वितरण सममित/सन्तुलित है। 1.0 से अधिक या-1.0 से कम का अतिरिक्त कर्टोसिस सामान्य पूँछ व्यवहार से काफी विचलन दर्शाता है। यह सांख्यिकीय प्रक्रिया को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है , अतः वितरण सामान्य वितरण से स्पष्ट रूप से भिन्न है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल छात्रों की वैषम्यता का स्तर सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, जबकि कुकुदता का स्वरूप प्लैटीकुर्टिक है,(सामान्य वितरण से भिन्न है) जो चित्र संख्या 5.1.2 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता है।

चित्र संख्या 5.1.3

कुल विद्यार्थियों की जागरूकता से सम्बन्धित सामान्य सम्भाव्यता वक्र (NPC)



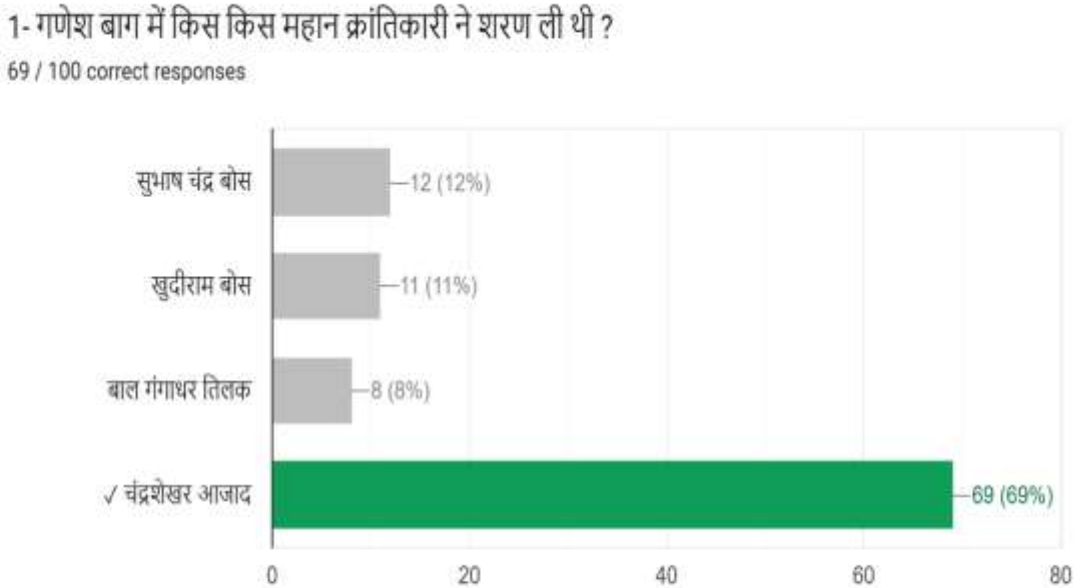
विश्लेषण—तालिका संख्या 5.1 & 5.2 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल विद्यार्थियों का मध्यमान 15.30 तथा प्रमाप विचलन 2.42 है। कुल विद्यार्थियों के लिए वैषम्यता का मान -0.40 है, जब वैषम्यता का मान -0.5 तथा 0.5 के मध्य होता है तब वितरण सममित/सन्तुलित है। अतः वितरण सममित/सन्तुलित माना जाता है। 1.0 से अधिक या-1.0 से कम का अतिरिक्त कर्टोसिस सामान्य पूँछ व्यवहार से काफी विचलन दर्शाता है। यह सांख्यिकीय प्रक्रिया को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकता है , अतः वितरण सामान्य वितरण से स्पष्ट रूप से भिन्न है।

विवेचना—न्यादर्श में कुल विद्यार्थियों की वैषम्यता का स्तर सामान्य वितरण के अनुरूप नहीं है, जबकि कुकुदता का स्वरूप प्लैटीकुर्टिक है,(सामान्य वितरण से भिन्न है) जो चित्र संख्या 5.1.3 में स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। अतः न्यादर्श से प्राप्त निष्कर्षों को जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता है।

5.2 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नश: विश्लेषण

5.2.1 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी में किस किस महान क्रांतिकारी ने शरण ली थी ?

(सही उत्तर- चंद्रशेखर आजाद)



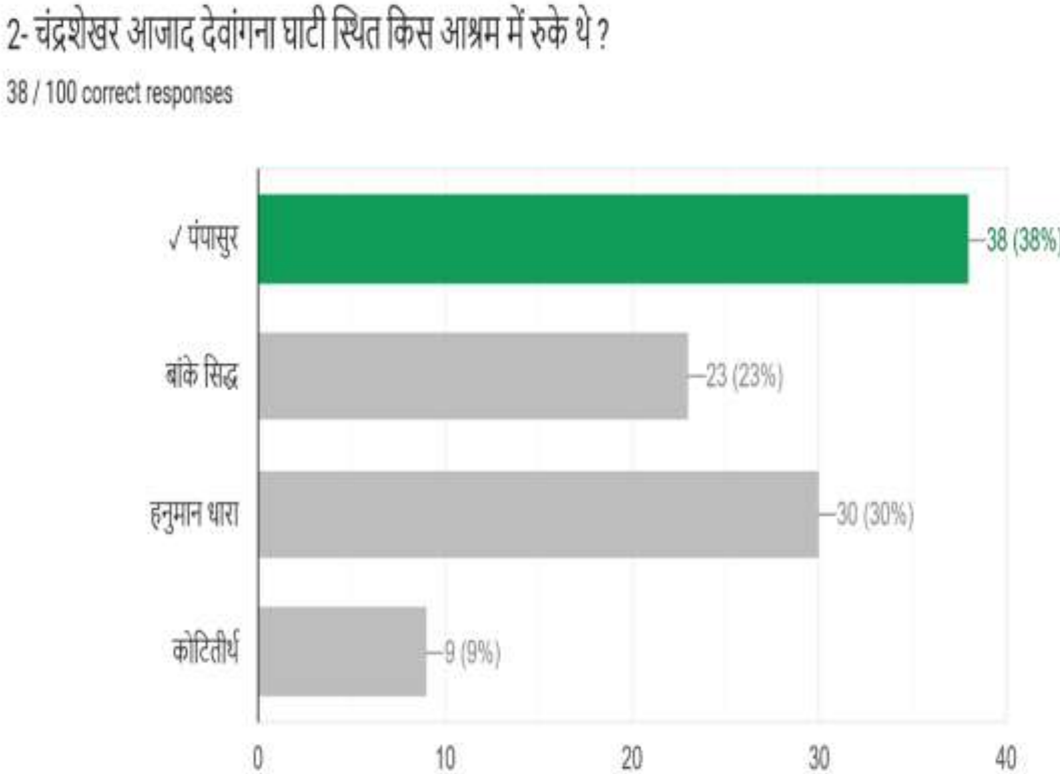
विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 01** "स्वतंत्रता संग्राम सेनानी में किस किस महान क्रांतिकारी ने शरण ली थी ?" के प्रति 100 में से 69 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि , स्वतंत्रता संग्राम सेनानी में चंद्रशेखर आजाद ने शरण ली थी।

इस तथ्य से दो तिहाई विद्यार्थी परिचित हैं। जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक है।

5.2.2 चंद्रशेखर आजाद देवांगना घाटी स्थित किस आश्रम में रुके थे ?

(सही उत्तर- पम्पापुर)

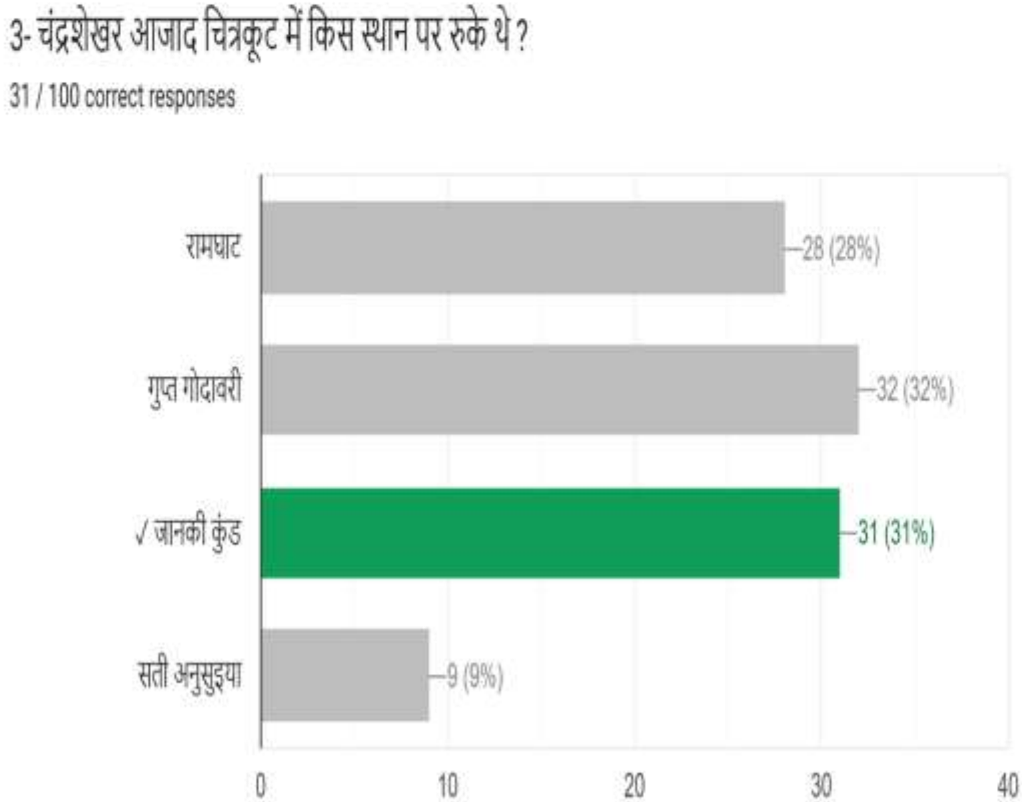


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 02** "चंद्रशेखर आजाद देवांगना घाटी स्थित किस आश्रम में रुके थे ?" के प्रति 100 में से 38 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना— उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चंद्रशेखर आजाद देवांगना घाटी स्थित पम्पापुर आश्रम में रुके थे। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से कुछ विद्यार्थी ही परिचित है। जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.3 चंद्रशेखर आजाद चित्रकूट में किस स्थान पर रुके थे ?

(सही उत्तर- जानकीकुण्ड)

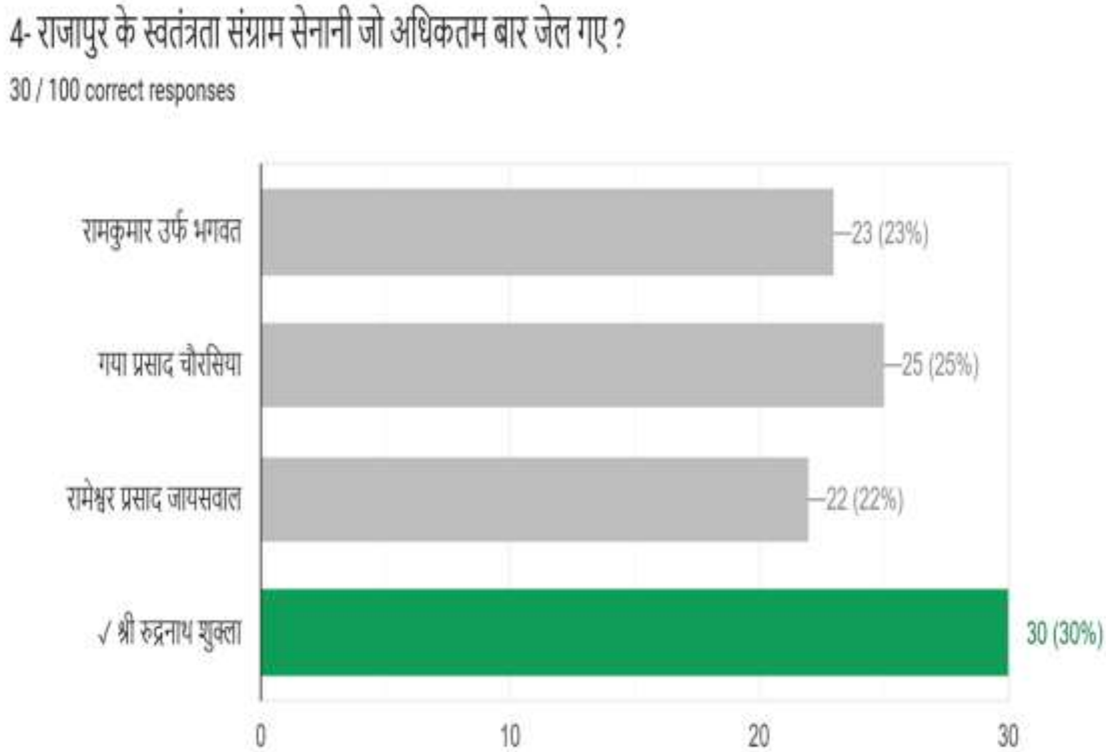


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 03** "चंद्रशेखर आजाद चित्रकूट में किस स्थान पर रुके थे ?" के प्रति 100 में से 31 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चंद्रशेखर आजाद चित्रकूट में जानकी कुंड आश्रम में रुके थे। इस तथ्य से एक तिहाई से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.4 राजापुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जो अधिकतम बार जेल गए ?

(सही उत्तर- श्री रुद्रनाथ शुक्ला)

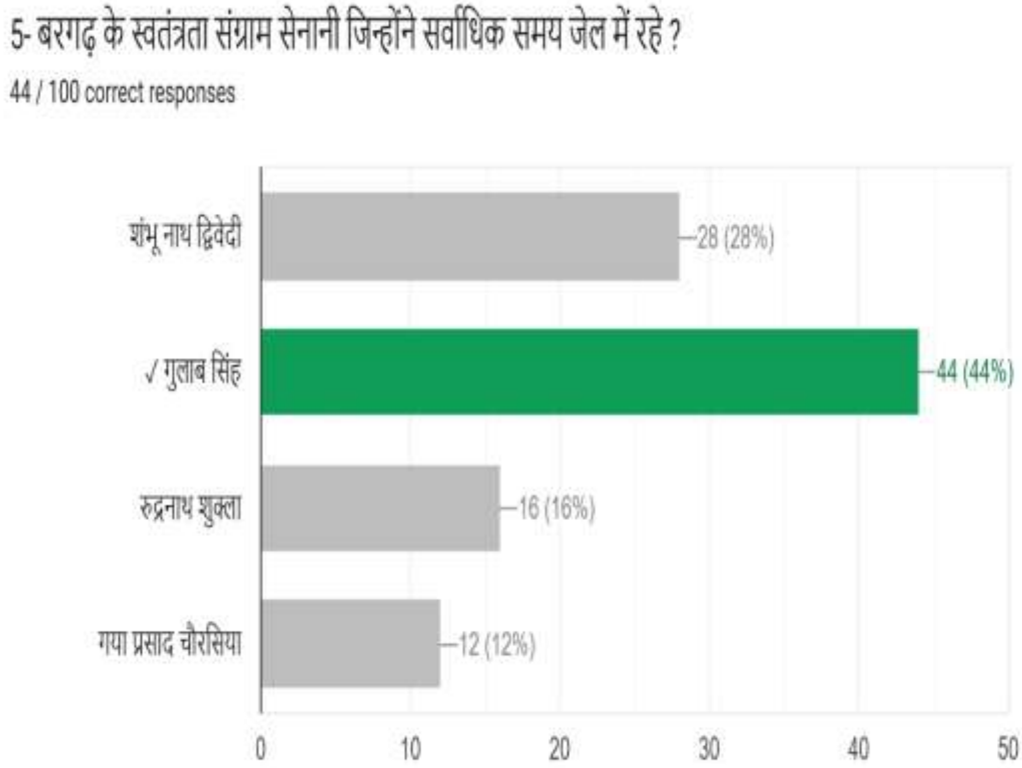


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 04** "राजापुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जो अधिकतम बार जेल गए ?" के प्रति 100 में से 30 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि राजापुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री रुद्रनाथ शुक्ला अधिकतम बार जेल गए थे। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.5 बरगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने सर्वाधिक समय जेल में रहे ?

(सही उत्तर- गुलाब सिंह)

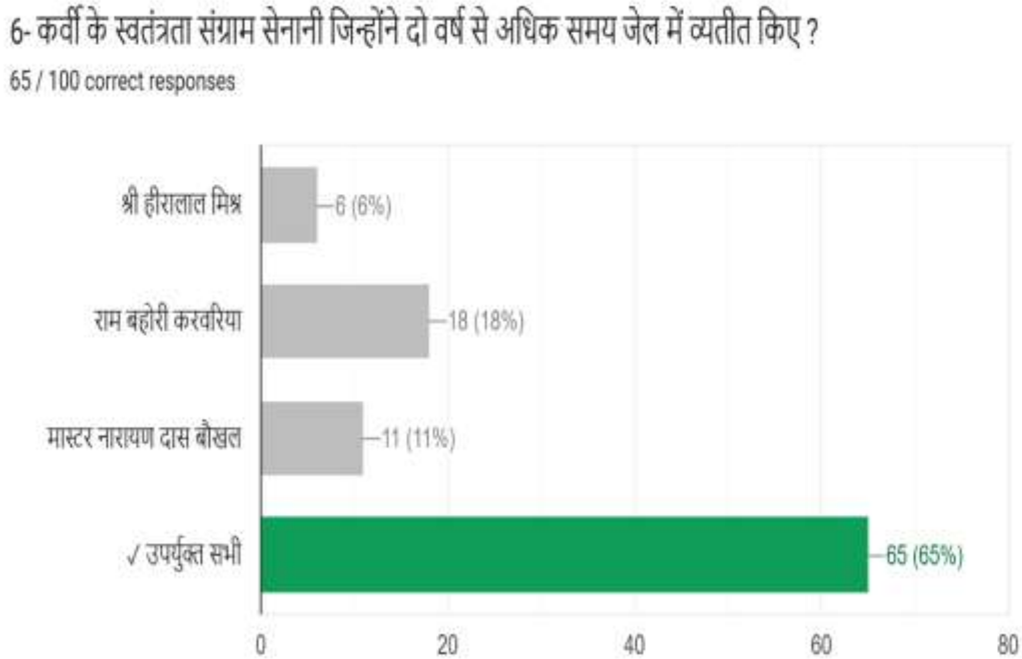


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 05** "बरगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने सर्वाधिक समय जेल में रहे ?" के प्रति 100 में से 44 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बरगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गुलाब सिंह सर्वाधिक बार जेल में रहे हैं। इस तथ्य से आधे से कम विद्यार्थी परिचित है , जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.6 कर्वी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने दो वर्ष से अधिक समय जेल में व्यतीत किए ?

(सही उत्तर- उपर्युक्त सभी)

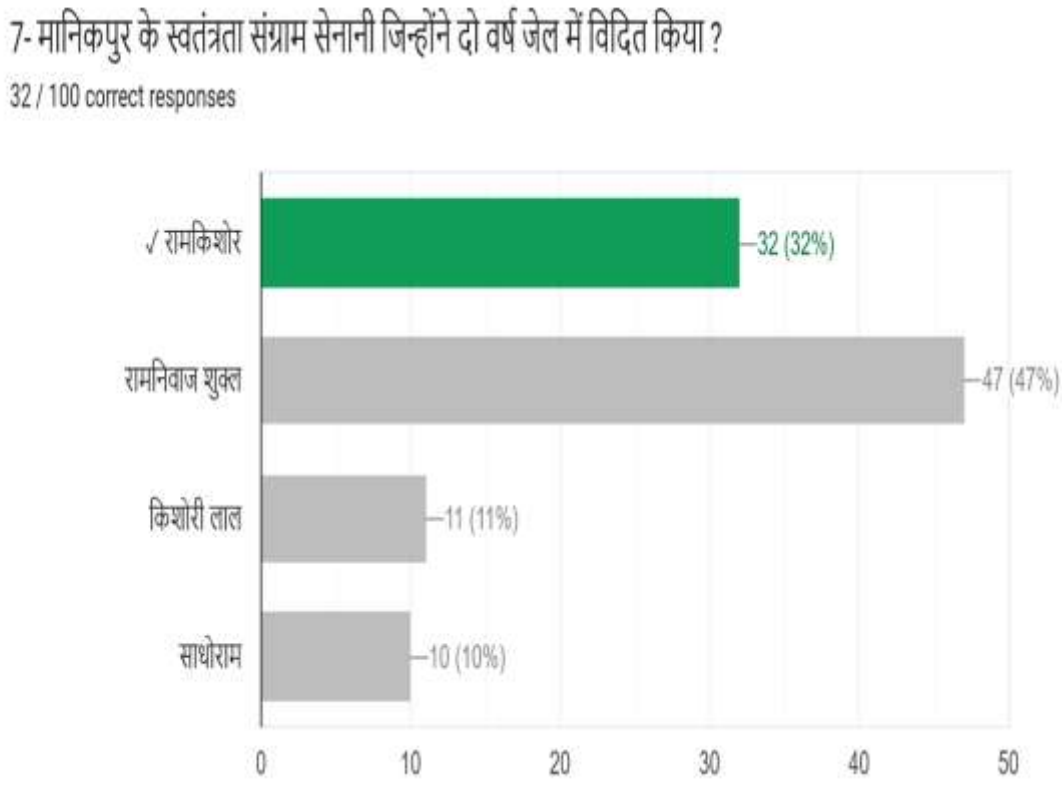


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 06** "कर्वी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने दो वर्ष से अधिक समय जेल में व्यतीत किए ?" के प्रति 100 में से 65 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कर्वी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी इन्होंने 2 वर्ष से अधिक जेल में रहे=हीरालाल मिश्र ,श्री रामबहोरी करवरिया, मास्टर नारायण दास बौखल। इस तथ्य से लगभग दो तिहाई विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक है।

5.2.7 मानिकपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने दो वर्ष जेल में विदित किया ?

(सही उत्तर- रामकिशोर)

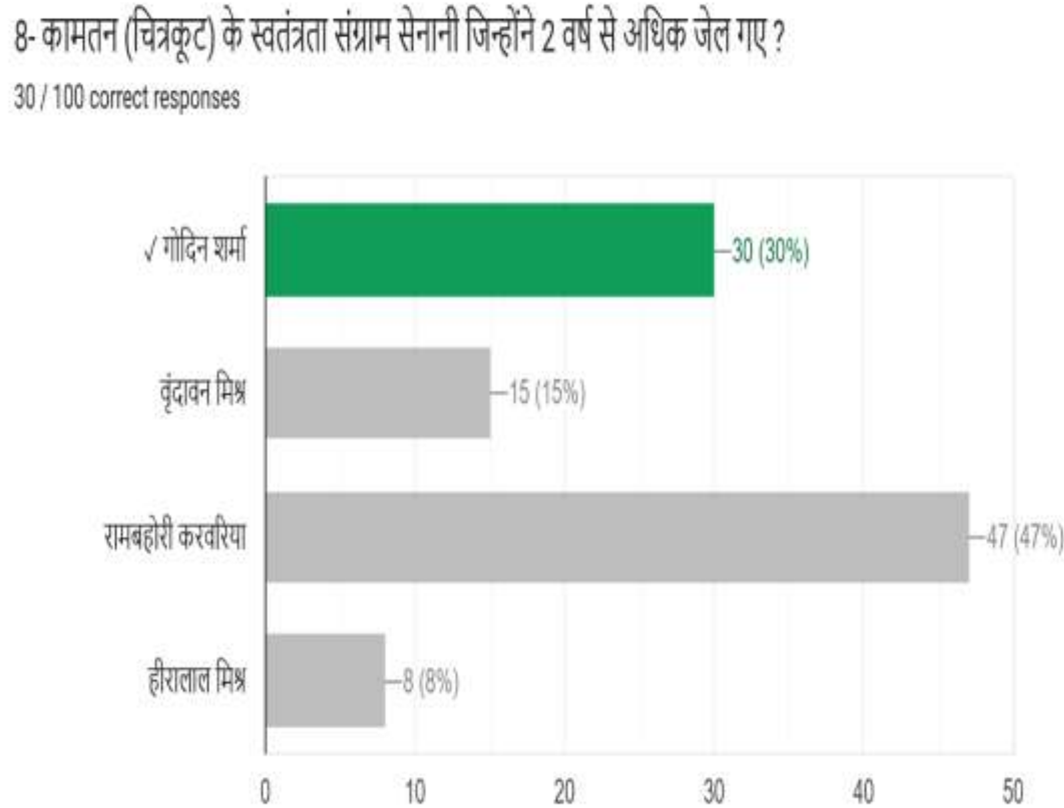


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 07** “मानिकपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने दो वर्ष जेल में विदित किया ?” के प्रति 100 में से 32 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि , मानिकपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राज किशोरी ने दो वर्ष जेल में रहे। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.8 कामतन(चित्रकूट) के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने 2 वर्ष से अधिक जेल गए ?

(सही उत्तर- गोदिन शर्मा)

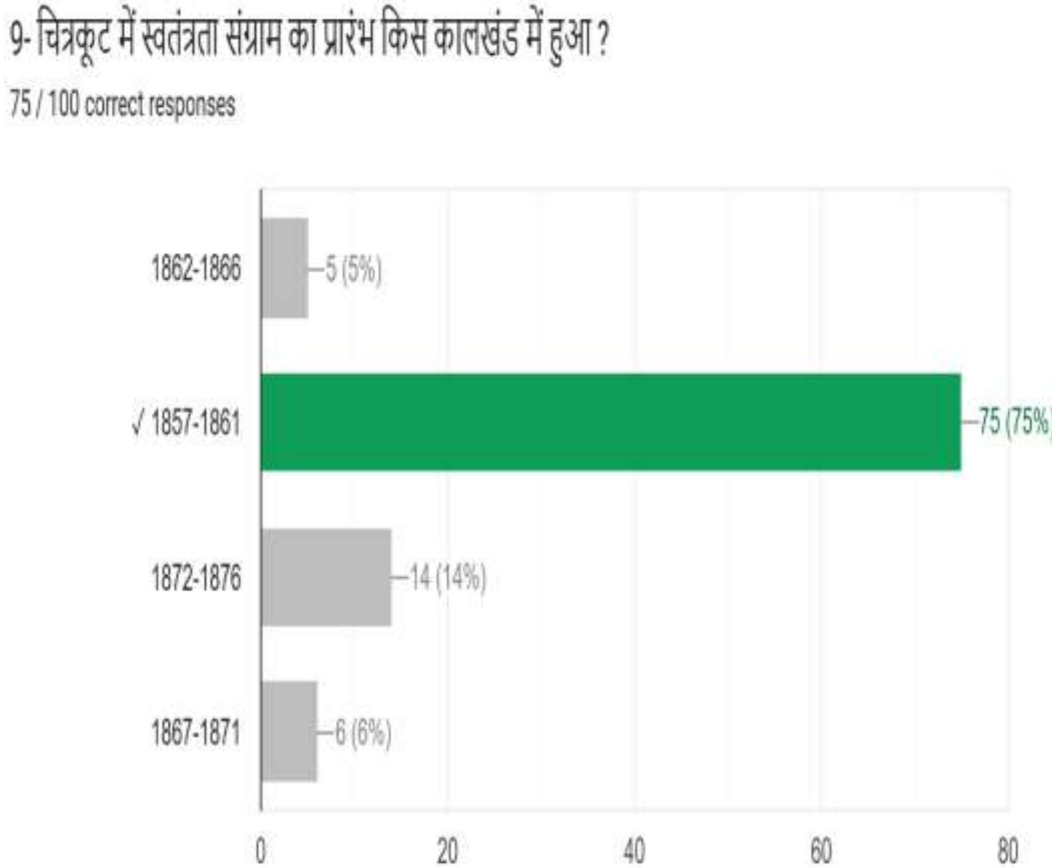


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 08** "कामतन (चित्रकूट) के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने 2 वर्ष से अधिक जेल गए ?" के प्रति 100 में से 30 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कामतन चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गोविंद शर्मा जिन्होंने 2 वर्ष से अधिक जेल में रहे। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.9 चित्रकूट में स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ किस कालखंड में हुआ ?

(सही उत्तर- 1857-1861)

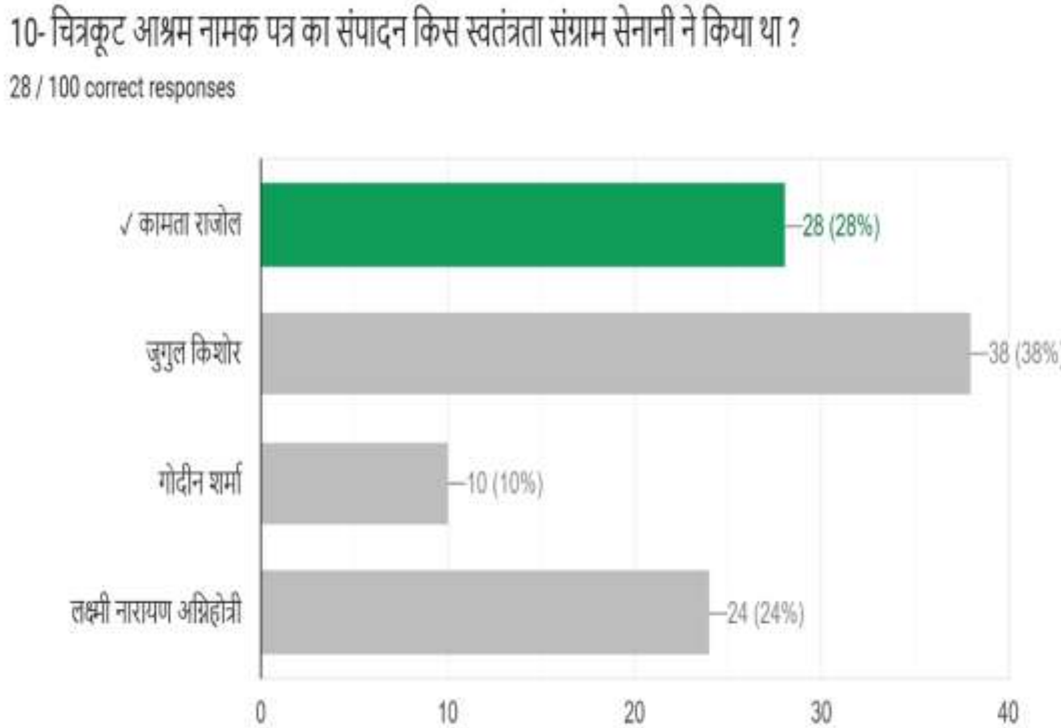


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 09** "चित्रकूट में स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ किस कालखंड में हुआ ?" के प्रति 100 में से 75 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चित्रकूट में स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ 1857 1861 के कालखंड में हुआ है। इस तथ्य से तीन-चौथाई विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक है।

5.2.10 चित्रकूट आश्रम नामक पत्र का संपादन किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने किया था ?

(सही उत्तर- कामता राजौल)



विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 10** "चित्रकूट आश्रम नामक पत्र का संपादन किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने किया था ?" के प्रति 100 में से 28 विद्यार्थी परिचित हैं।

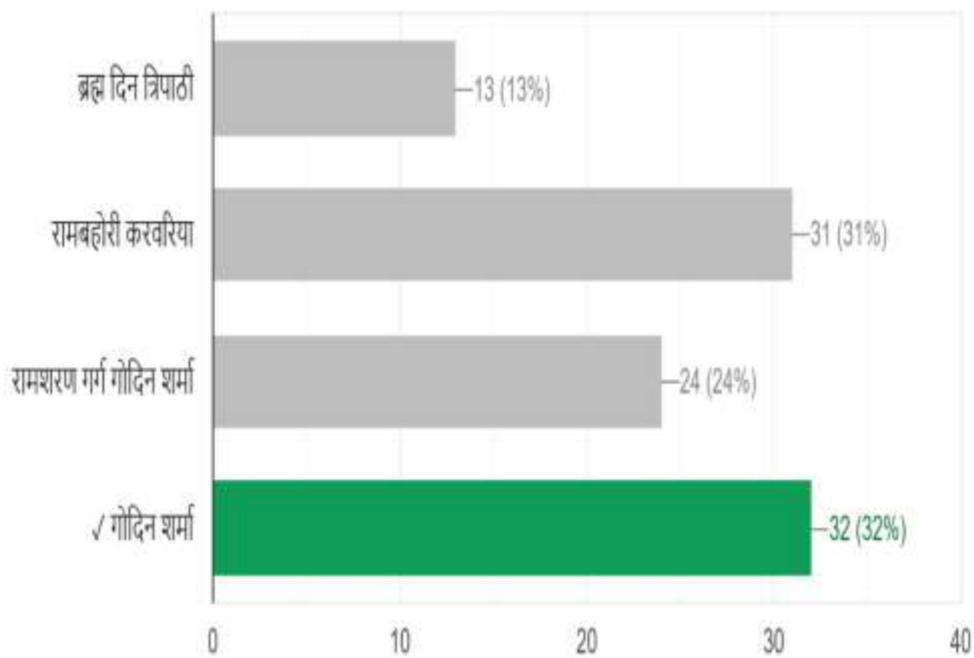
विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि, चित्रकूट आश्रम नामक पत्र का प्रकाशन कामता राजौल ने किया है। इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि एक चौथाई से अधिक विद्यार्थी परिचित हैं। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.11 चित्रकूट का शेर किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ?

(सही उत्तर- गोदिन शर्मा)

11- चित्रकूट का शेर किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ?

32 / 100 correct responses

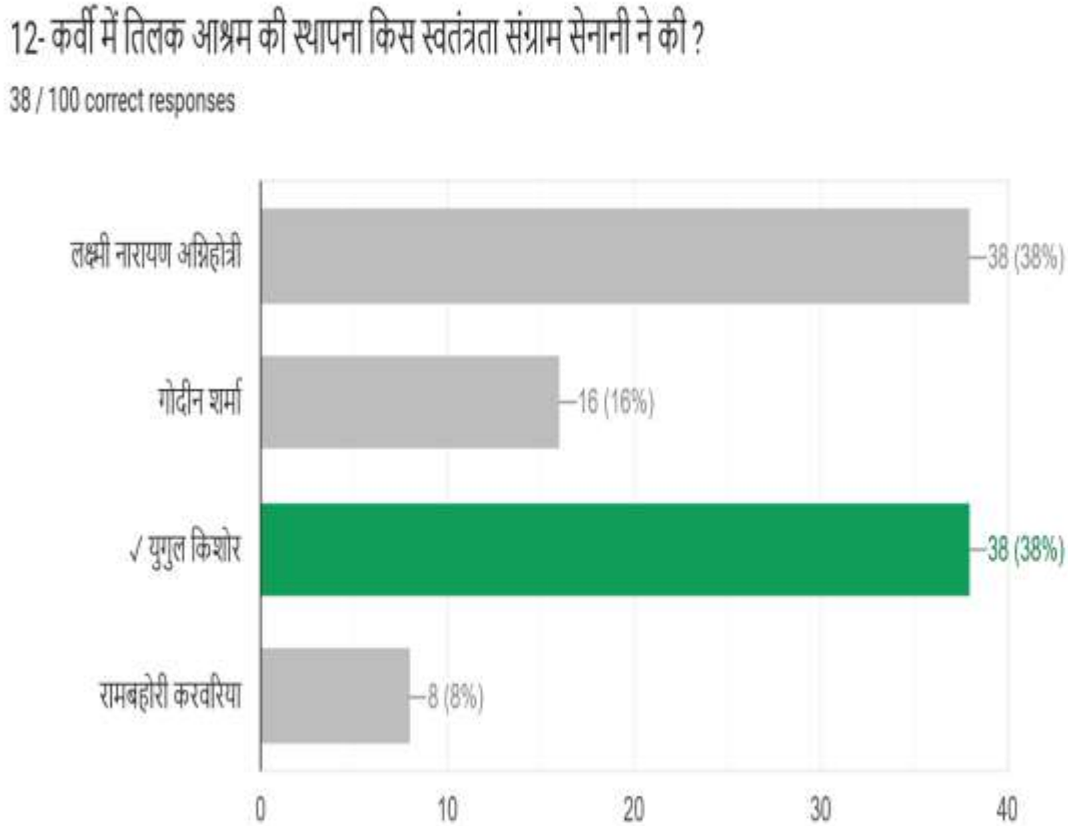


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 11** "चित्रकूट का शेर किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ?" के प्रति 100 में से 32 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चित्रकूट का शेर गोदीन शर्मा को कहा जाता है। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.12 कर्वी में तिलक आश्रम की स्थापना किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने की ?

(सही उत्तर- युगुल किशोर)

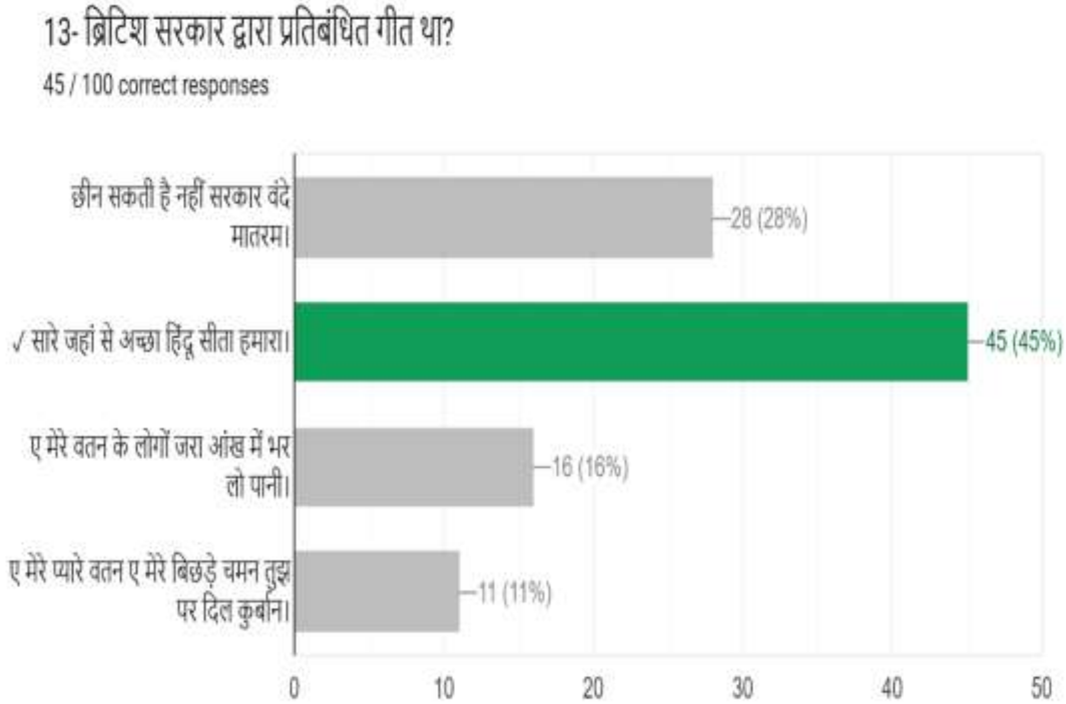


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 12** "कर्वी में तिलक आश्रम की स्थापना किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने की ?" के प्रति 100 में से 38 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कर्वी में तिलक आश्रम की स्थापना युगल किशोर ने की थी । इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से अधिक विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.13 ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित गीत था?

(सही उत्तर- सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा)

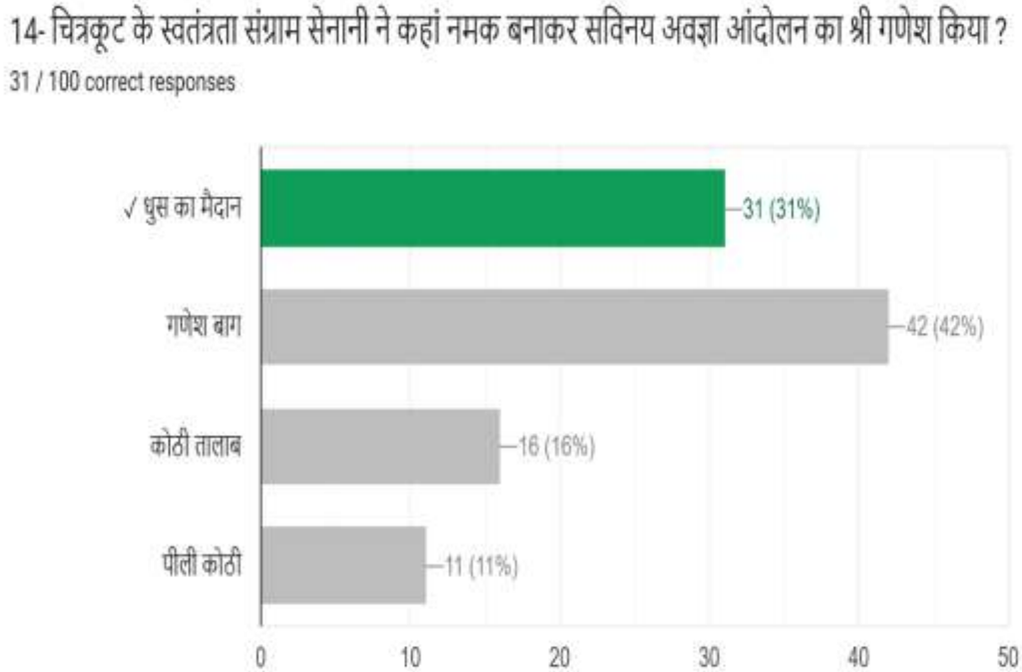


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 13** "ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित गीत था?" के प्रति 100 में से 45 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि, ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित गीत सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा नामक गीत है। इस तथ्य से आधे से कम विद्यार्थी ही परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.14 चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने कहां नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश किया ?

(सही उत्तर- धुस्य का मैदान)

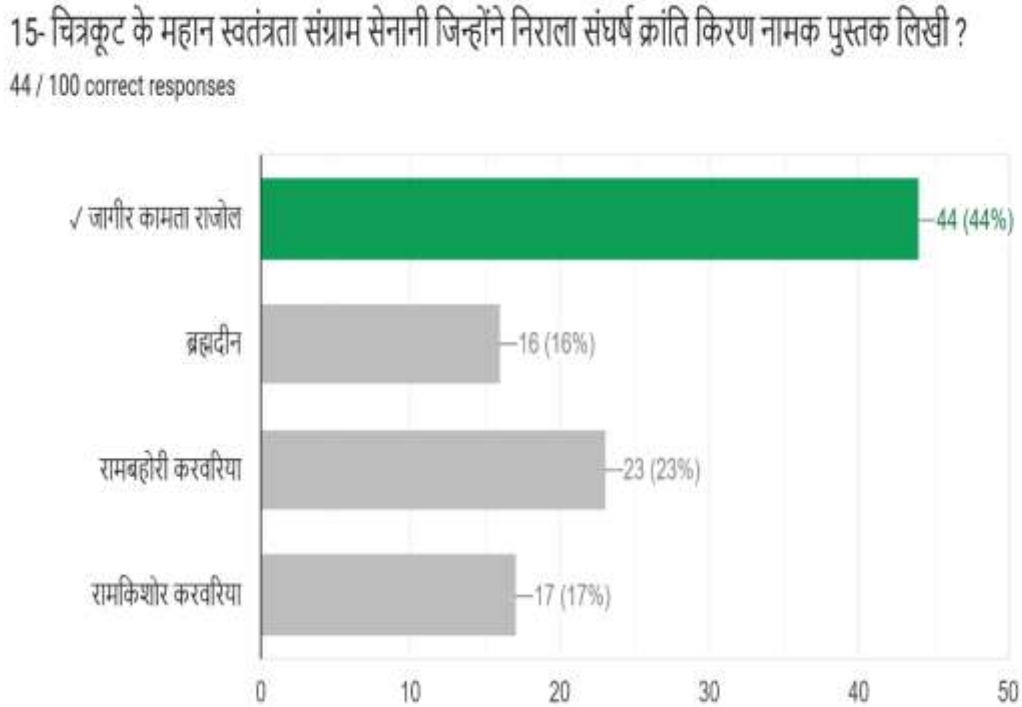


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 14** "चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने कहां नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश किया ?" के प्रति 100 में से 31 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी धुस्य के मैदान में नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश किया है। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.15 चित्रकूट के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने निराला संघर्ष क्रांति किरण नामक पुस्तक लिखी ?

(सही उत्तर- जागीर कामता राजोल)

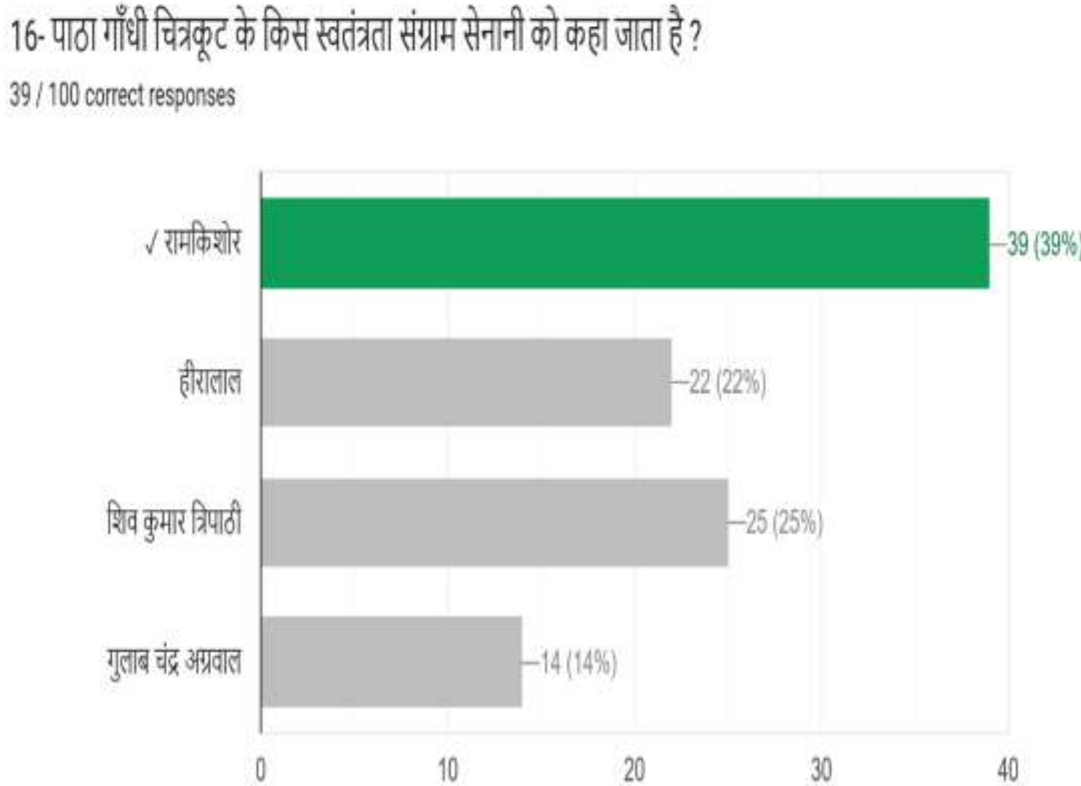


विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 15** "चित्रकूट के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने निराला संघर्ष क्रांति किरण नामक पुस्तक लिखी ?" के प्रति 100 में से 44 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चित्रकूट के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने निराला संघर्ष क्रांति किरण पुस्तक को जागीर कामता राजौल ने लिखी है। इस तथ्य से आधे से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का यह स्तर संतोषजनक नहीं है।

5.2.16 पाठा गाँधी चित्रकूट के किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ?

(सही उत्तर- रामकिशोर)



विश्लेषण—उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट होता है कि **प्रश्न संख्या 16** "पाठा गाँधी चित्रकूट के किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ?" के प्रति 100 में से 39 विद्यार्थी परिचित हैं।

विवेचना—उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चित्रकूट के राजकिशोर को पाठा गांधी के रूप में जाना जाता है। इस तथ्य से मात्र एक तिहाई से कम विद्यार्थी परिचित है। जागरूकता का स्तर संतोषजनक नहीं है।

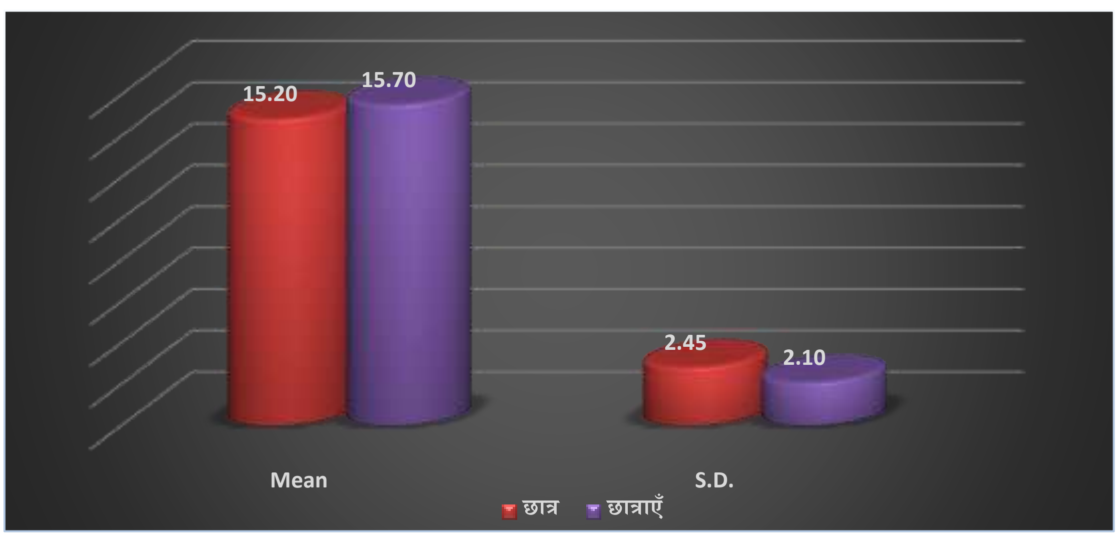
5.3 स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति छात्र-छात्राओं में जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या 5.3

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति छात्र-छात्राओं में जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)	क्रान्तिक अनुपात (CR) गणना मान	't' तालिका मान	सार्थकता स्तर	परिणाम
छात्र	68	15.20	2.45	1.0516	1.984	0.05	सार्थक अन्तर नहीं है
छात्राएँ	32	15.70	2.10				

df=98



चित्र संख्या 5.3

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति छात्र-छात्राओं में जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

विश्लेषण—तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 से स्पष्ट है कि **महाविद्यालयीन छात्रों का मध्यमान 15.20** तथा **महाविद्यालयीन छात्राओं का मध्यमान 15.70** है। गणना द्वारा प्राप्त CR का मान 1.0516 है, जो कि स्वतन्त्रांश 98 के लिए, 0.05 सार्थकता स्तर पर 't' के तालिका मान 1.984 से कम है।

अतः शून्य परिकल्पना " स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है", **0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।**

विवेचना—तालिका संख्या 5.3 एवं चित्र संख्या 5.3 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं में जागरूकता का स्तर समान है। छात्राएं सामान्य रूप से जागरूक हैं।

अध्याय षष्ठ

* निष्कर्ष एवं सुझाव *

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

6.2 अध्ययन के सुझाव

6.3 अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता

6.4 अध्ययन की सीमाएँ

6.5 भावी शोध हेतु सुझाव

अध्याय षष्ठ

निष्कर्ष एवं सुझाव

कोई भी शोध अध्ययन तब तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किसी निष्कर्ष में ना पहुंच जाए अनुसंधान की वैज्ञानिक प्रक्रिया में तथ्यों को सापेक्ष कर निष्कर्ष का सामान्य कारण करके वर्ग विशेष के लिए अनुमोदित करना,अनुसंधान का अंतिम चरण माना गया | एक उत्तम शोध प्रबंध की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ तथा वैज्ञानिक वीडियो द्वारा संग्रहित प्रदत्त पर आधारित हो,उन पर शोधार्थी की व्यक्तिगत धारणाओं एवं अनुमानों का किंचित मात्र भी प्रभाव न पड़े इस अध्याय को निम्न सो सपनो में प्रस्तुत किया गया है-

- अध्ययन के निष्कर्ष
- अध्ययन के सुझाव
- अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता
- अध्ययन की सीमाएं
- भाभी शोध हेतु सुझाव

6.1 अध्ययन के निष्कर्ष

संपूर्ण शोधकर के विश्लेषण एवं व्याख्या के पश्चात मुख्य कार्य उद्देश्यों की पूर्ति करना है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के उद्देश्यों के संदर्भ में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

उद्देश्य 1: स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता संबंधी सम अंकों की समान्य संभाव्यता अध्ययन करना

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित न्यायदर्शों की वैषम्यता तथा कुकुदता के अध्ययन से यह निष्कर्ष वैषम्यता की दृष्टि से वितरण समिति/ संतुलित है जबकि कुकुदता की दृष्टि से समान वितरण से भिन्न है। अतः न्यायदर्श से प्राप्त निष्कर्ष का जनसंख्या पर लागू नहीं किया जा सकता है।

उद्देश्य 2: स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थी जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण करना

शोधकर्ता द्वारा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता प्रश्नावली का निर्माण किया गया,जिसमें 14 बहुविकल्पीय चार विकल्प प्रश्नों को सम्मिलित किया गया। इस जागरूकता प्रश्नावली का प्रशासन गूगल फॉर्म की सहायता से किया गया।

उद्देश्य 3 : स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति महाविद्यालय छात्र छात्रों की जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया । स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं की जागरूकता का स्तर समान है।

उद्देश्य 4 : स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का प्रश्नवार विश्लेषण करना।

निम्न प्रश्न / तत्वों के संदर्भ में अधिकांश विद्यार्थी अवगत हैं –

- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी में चंद्रशेखर आजाद ने शरण ली थी। (प्रश्न १)
- कर्वी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी इन्होंने 2 वर्ष से अधिक समय जेल में रहे हीरालाल मिश्र ,श्री राम बहोरी करवरिया, मास्टर नारायण दास बौखल (प्रश्न 6)

निम्न प्रश्न/ तत्वों के संदर्भ में लगभग आधे विद्यार्थी अवगत है-

- ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित गीत सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा नामक गीत (प्रश्न 13)
- मानिकपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राजकिशोर ने दो वर्ष जेल में रहे (प्रश्न 7)
- कामतन चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गोविंद शर्मा जिन्होंने 2 वर्ष से अधिक जेल में रहे (प्रश्न 8)
- स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ 1857 1861 के कालखंड में हुआ (प्रश्न 9)
- चित्रकूट आश्रम नामक पत्र का प्रकाशन कामता राजौल ने किया है (प्रश्न10)
- चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी धुष्य के मैदान में नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश किया है(प्रश्न 14)
- चित्रकूट के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने निराला संघर्ष क्रांति किरण पुस्तक को जागीर कामता राजौल ने लिखी है (प्रश्न 15)
- चित्रकूट के राजकिशोर को पाठा गांधी के रूप में जाना जाता है (प्रश्न 16)

निम्न प्रश्न / तत्वों के संदर्भ में लगभग एक तिहाई विद्यार्थी अवगत है-

- चंद्रशेखर आजाद देवांगना घाटी स्थित पंपापुर आश्रम में रुके थे (प्रश्न 2)
- बरगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी गुलाब सिंह सर्वाधिक बार जेल में रहे हैं (प्रश्न 3)
- राजापुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री रुद्रनाथ शुक्ला अधिकतम बार जेल गए थे (प्रश्न 4)
- चित्रकूट का शेर गोविंद शर्मा को कहा जाता है (प्रश्न 11)
- कर्वी में तिलक आश्रम की स्थापना युगल किशोर ने की थी (प्रश्न 12)

6.2 अध्ययन के सुझाव

स्वतंत्रता संग्राम सेनानीके प्रति महाविद्यालयीन पर्याप्त जागरूक नहीं है। अतः जागरूकता संवर्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं-

- विद्यालयों में समय-समय पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित सांस्कृतिक कार्यक्रम किए जाए।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित ऐतिहासिक विरासतों का संरक्षण किया जाए।
- विद्यार्थियों में जागरूकता के लिए समय-समय पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित संगोष्ठी और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों परपाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित स्थलों को पर्यटन के रूप में विकसित किया जाए।
- विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित स्थलों के शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया जाना चाहिए।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यापक प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए।
- अध्ययन के सुझाव स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के योगदान से संबंधित जानकारी इतिहास विषय के पूरक पाठ पुस्तक के रूप में चलाई जानी चाहिए।
- स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की फोटो जनपद के सरकारी कार्यालय एवं शिक्षण संस्थानों में लगाई जानी चाहिए। बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन इत्यादि में।
- जनपद के विभिन्न चौराहों पर स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की प्रतिभाएं लगाई जानी चाहिए।
- स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नाम पर विभिन्न सड़कों / मार्गों का नामकरण किया जाना चाहिए।

- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की जयंती एवं बलिदान दिवस पर विद्यालयों में सार्वजनिक रूप से कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
- स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की याद में भारत सरकार द्वारा डाक टिकट एवं सिक्के चलाए जाने हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।
- स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नाम से शिक्षा के क्षेत्र में मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति / पुरस्कार दिया जाना चाहिए।
- स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की स्मृति में विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं एवं मेले का आयोजन किया जाना चाहिए।
- विद्यालय में स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित भाषण निबंध नाटक इत्यादि की प्रतियोगिताएं आयोजित किया जाना चाहिए।
- जनपद की सरकारी वेबसाइटों पर स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का विवरण प्रदर्शित किया जाना चाहिए।
- उच्च शिक्षा में स्थानीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से संबंधित शोधकर को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से जुड़े विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी घटना क्रम का उल्लेख करते हुए शिलालेख / बोर्ड लगाए जाने चाहिए।

6.3 शैक्षिक उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति शिक्षा जगत, विद्यार्थियों, शिक्षकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों एवं समाज के लोगों के दृष्टिकोण को विकसित में सहायक होंगे।

प्रस्तुत अध्ययन में चित्रकूट जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर विस्तृत चर्चा की गयी है, साथ ही पर्यटन जैसे विश्वव्यापी महत्व वाले विषय पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही स्थानों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष से सम्बन्धित चर्चा की गयी है | उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऐतिहासिक धरोहरों के प्रति विद्यार्थियों की अल्प जानकारी को भी प्रकाश में लाया गया है। प्रस्तुत अध्ययन विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यक्रम निर्माताओं, प्रशासकों, इतिहासकारों, पुरातत्वविदों इत्यादि के लिए अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

1. विद्यार्थियों के लिए

- विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के विषय में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- विद्यार्थी अपनी क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को जान सकेंगे।
- विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के गहन अध्ययन के प्रति रुचि विकसित कर सकेंगे।
- विद्यार्थी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के प्रति आकर्षित होकर खाली समय पर उनसे संबंधित स्थलों भ्रमण हेतु जा सकेंगे।

2. शिक्षकों के लिए

- शिक्षक क्षेत्रीय धरोहर के महत्व को समझकर विद्यार्थियों को बता सकते हैं।
- विद्यार्थियों के मन में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के प्रति रुचि जागृत उत्पन्न कर सकते हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियों को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शैक्षिक भ्रमण हेतु ले जा सकते हैं।
- शिक्षक विद्यार्थियो को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के प्रति जागरुक कर सकते हैं।
- शिक्षक अभिभावकों को शैक्षिक भ्रमण के महत्व का ज्ञान करा सकते हैं।

3. पाठ्यक्रम निर्माताओं के लिए

- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु नीति बनाने की आवश्यकता है।
- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी संबंधित स्थलों के शैक्षिक भ्रमण को उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में विशेष महत्व दिया जाना चाहिए।
- इतिहास विषय के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम में चित्रकूट जनपद के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को पूरक पाठ्य पुस्तक के रूप में सम्मिलित किया जा सकता है।

4. प्रशासकों के लिए

जिले के प्रशासक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करा सकते हैं।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के शैक्षिक भ्रमण हेतु दिशा निर्देश जारी कर सकते हैं।

कर्वी नगर के प्रशासक चित्रकूट बस स्टैण्ड एवं रेलवे स्टेशन में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से सम्बन्धित बोर्ड लगवा सकते हैं।

कर्वी नगर के मुख्य चौराहों पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी से सम्बन्धित बोर्ड लगवाए जा सकते हैं।

प्रस्तुत शोध में दिए गये सुझावों के आधार पर देश तथा प्रदेश की पर्यटक वेबसाइट्स में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी का उल्लेख किया जा सकता है।

5. अध्ययन की सीमाएँ

- अध्ययन में चित्रकूट जिले के रामभद्राचार्य एवं बुंदेलखंड झांसी से सम्बद्ध गोस्वामी तुलसीदास आप छात्र में सम्मिलित हुए।
- समय और धन के अभाव में अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण का मानकीकरण संभव नहीं हो पाया है।
- अध्ययन में आंकड़े एकत्रित करने के लिए विद्यार्थियों का चयन उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

6. भावी शोध हेतु सुझाव

शोध अध्ययन के क्षेत्र में सत्य की खोज निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी शोधकार्य पूर्ण व अन्तिम नहीं होता वरन् यह एक ऐसी श्रृंखला जिसमें एक कड़ी के सम्पन्न होने के साथ ही दूसरी कड़ी की शुरुआत होती है। कोई भी अध्ययन एक निश्चित परिधि तक सीमित रहता है किन्तु उसी क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किए जा सकते हैं ताकि समस्या का अधिक स्पष्ट निरूपण हो सके। शोध अध्ययन के अधिक स्थिर एवं विश्वसनीय परिणाम प्राप्त करने के लिए एक ही शोध समस्या पर कई शोध अध्ययनों का किया जाना आवश्यक होता है। शोध समस्या के लिए अधिक समय व धन की आवश्यकता होती है जो कि केवल एक शोधार्थी के लिए सम्भव नहीं होता, जिसके कारण वह एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर कार्य नहीं कर पाता। एक शोध समस्या पर किया गया शोधकार्य, दूसरे शोधार्थी द्वारा किए गये शोध अध्ययन के लिए मार्गदर्शन एवं सुझाव का कार्य करता है। इस शोधकार्य के आधार पर भावी अध्ययनों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं-

- वर्तमान शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के गणेश बाग तक सीमित है, भावी शोध अध्ययन में अन्य जनपदों/राज्यों के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

- प्रस्तुत अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की जागरूकता तक सीमित है, भावी अध्ययन में प्राथमिक माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन असम्भाव्य विधि से किया गया है, भावी अनुसन्धान में सम्भाव्य विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत अध्ययन के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता लिंग अनुसार तुलनात्मक अध्ययन किया गया है भावी शोध में संकायानुसार प्रशिक्षण स्तरानुसार ग्रामीण शहरी स्वतंत्रत पुरातंत्र,हिंदी मध्यम पब्लिक अंग्रेजी माध्यम इत्यादि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में नया आदर्श के रूप में 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया था जिसका वितरण सामान संभवत वक्र के अनुसार नहीं पाया गया अतः भावी शोध में ऐसे बड़े न्यादर्श को लिया जा सकता है, जिसका वितरण सामान संभाव्यता वक्र के अनुसार हो।
- भावी शोध में स्थानी खेल प्रतिभाओं समाज सुधार को धार्मिक विकृतियों इत्यादि के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।
- भावी शोध में चित्रकूट जनपद की भौगोलिक ऐतिहासिक एवं वानस्पतिक विरासत के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अवस्थी, निधि (2005) ग्रामीण और नगरीय परिवारों की जनसंख्या नियन्त्रण के प्रति जागरूकता का पी-एच०डी० थी सिस छत्रपति शाहजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/270538>

मिश्रा, मधुरिमा (2009)। महिलाओं में पर्यावरण प्रदूषण के प्रति जागरूकता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (कानपुर नगर के संदर्भ में)। पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।
<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/257977>

सेना, अर्चना (2010) | पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण उन्मूलन के प्रति जनमानस की जागरूकता एवं भाका अध्ययना पी-एच०डी० थीसिस, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर-
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/230163>

साह, सरिता (2016)। क्षेत्रीय इतिहास अध्ययन के परम्परागत मौखिक स्रोतों की ऐतिहासिकताः छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में। पी-एच०डी० थीसिस, शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दर्ग (छत्तीसगढ़)। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/245803>

सिंह, लक्ष्मण (2016)। अलीगढ़ मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षणरत् शिक्षकों की पर्यावरण सम्बन्धी जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन। पी-एच०डी० थीसिस, डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।<https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/328345>

खण्डेलवाल, आरती (2018) | सिरोही जिले के बी० एड० महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की धिकारों के प्रति जागरूकता एवं अभिवत्ति का अध्ययना पी-एच०डी० थीसिस, पैसिफिक अकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन एण्ड रिसर्च यूनिवर्सिटी, उदयपुर।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/321972>

गुप्ता, एस. ची & गुप्ता, अलका (2019)। उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धान्त एवं व्यवहार (Rev. Ed.) प्रयागराजः शारदा पुस्तक भवन।
https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10753/384677>

चौरसिया, पूजा (2019)। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कालिन्जर दुर्ग की ऐतिहासिक विरासत के प्रति जागरूकता का अध्ययन। एम० एड० लघु शोध प्रबन्ध, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

<https://archive.org/details/ilovepdf-merged-4-1/mode/2up?view=theater>

कुमार, दीपक (2021)। विद्यार्थियों महफा दर्ग के प्रति जागरूकता का अध्ययन अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

चौरसिया, प्रिन्सी (2018)। स्नातक स्तर पर महोबा नगर की दुर्लक्ष ऐतिहासिक विरासतों के प्रति जागरूकता का अध्ययन। अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध-शिक्षा, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।

अद विक्रम (2019)। माध्यमिक स्तर के हिंदी अध्यापकों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति कता एवं अध्यापक की शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन। पी-एच०डी० थीसिस बनारस हिंद विद्यालय, बनारसा <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/296838>

पाठक पी०डी० (2017)। शिक्षा में मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्या आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

पाठक, योगेश (2011)। पूर्वी उत्तर प्रदेश के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का सूचना क्रांति परंपरागत विषयों तथा पर्यावरण जागरूकता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन। पी-एच०डी० थीसिस वीर बहादर सिंह पॉचल विश्वविद्यालय, जौनपुर। <https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/17819>

परिशिष्ट

I- चित्रकूट जनपद का मानचित्र

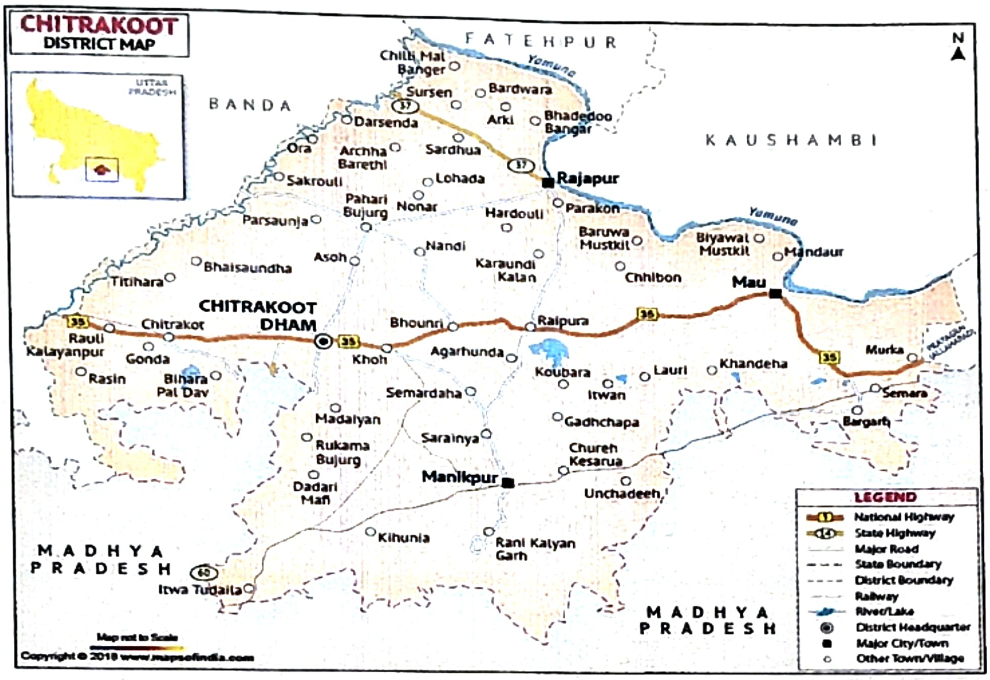
II- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से सम्बन्धित समाचार

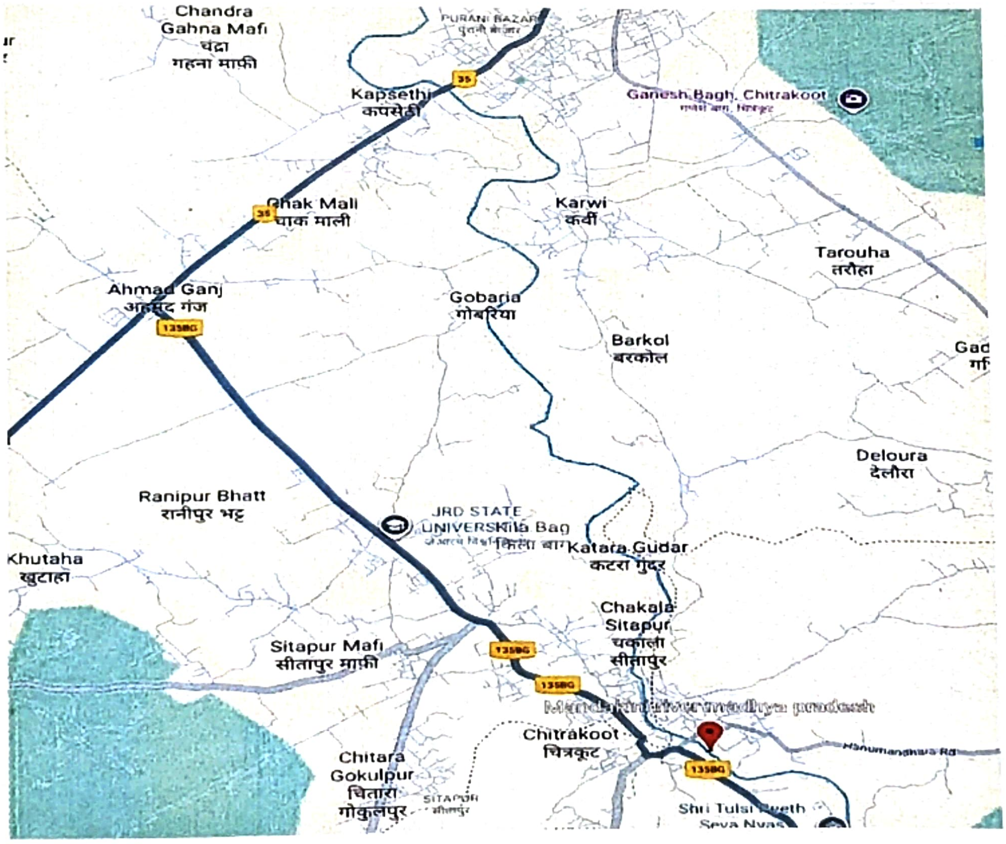
III- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली

IV-जीवनवृत्त

परिशिष्ट - I

I- चित्रकूट जनपद का मानचित्र





परिशिष्ट -II

II- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से सम्बन्धित समाचार

Independence Day 2025: कहानी 5 युवा स्वतंत्रता सेनानियों की, कोई 23 तो कोई 25 की उम्र में देश पर हुआ कुर्बान

स्पेशल डेस्क, अमर उजाला Published by: अस्मिता त्रिपाठी Updated Fri, 15 Aug 2025 05:45 AM IST

सार

Independence Day 2025: स्वतंत्रता संग्राम में देशवासी अपनी आजादी के लिए लड़े।आजादी की इस लड़ाई में कई युवा स्वतंत्रता सेनानी भी कूद गए थे। इन्होंने ने बहुत कम उम्र में देश के लिए अपनी जान न्योछावर कर दी थी।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं उनके उत्तराधिकारी देश की हैं धरोहर: प्रेमचंद अग्रवाल

जब स्वतंत्रता सेनानियों ने शब्दों से भर दिया जोश



परिशिष्ट -III

III- स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता प्रश्नावली:

प्रस्तुत प्रश्नावली विद्यार्थियों में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता के अध्ययन से संबंधित है। इसमें चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति जागरूकता संबंधी प्रश्न /कथन दिए गए हैं। दिए गए विकल्पों में से किसी एक पर सही का चिन्ह लगाए। आपके द्वारा दी गई जानकारी केवल शोध कार्य में प्रयुक्त की जाएगी। अतः आप निष्पक्ष रूप से अपने विचार प्रकट करें।

* Indicates required question

1. नाम * — 1 point

____

2. कक्षा *

____

3. पिता का नाम *

____

4. महाविद्यालय * — 1 point

____

5. 1- गणेश बाग में किस किस महान क्रांतिकारी ने शरण ली थी ? * — 1 point

Mark only one oval.

- ◯ सुभाष चंद्र बोस
- ◯ खुदीराम बोस
- ◯ बाल गंगाधर तिलक
- ◯ चंद्रशेखर आजाद

(116)

6. 2- चंद्रशेखर आजाद देवांगना घाटी स्थित किस आश्रम में रुके थे ? * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) पंपासुर
- ( ) बांके सिद्ध
- ( ) हनुमान धारा
- ( ) कोटितीर्थ

7. 3- चंद्रशेखर आजाद चित्रकूट में किस स्थान पर रुके थे ? * Dropdown 1 point

Mark only one oval.

- ( ) रामघाट
- ( ) गुप्त गोदावरी
- ( ) जानकी कुंड
- ( ) सती अनुसुइया

8. 4- राजापुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जो अधिकतम बार जेल गए ? * 1 point

Mark only one oval.

- ( ) रामकुमार उर्फ भगवत
- ( ) गया प्रसाद चौरसिया
- ( ) रामेश्वर प्रसाद जायसवाल
- ( ) श्री रुद्रनाथ शुक्ला

9. 5- बरगढ़ के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने सर्वाधिक समय जेल में रहे ? * 1 point

Mark only one oval.

- शंभू नाथ द्विवेदी
- गुलाब सिंह
- रुद्रनाथ शुक्ला
- गया प्रसाद चौरसिया

10. 6- कर्वी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने दो वर्ष से अधिक समय जेल में व्यतीत किए ? * 1 point

Mark only one oval.

- श्री हीरालाल मिश्र
- राम बहोरी करवरिया
- मास्टर नारायण दास बौखल
- उपर्युक्त सभी

11. 7- मानिकपुर के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने दो वर्ष जेल में विदित किया ? * 1 point

Mark only one oval.

- रामकिशोर
- रामनिवाज शुक्ल
- किशोरी लाल
- साधोराम

(176)

12. 8- कामतन (चित्रकूट) के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने 2 वर्ष से अधिक जेल गए ? * 1 point

Mark only one oval.

- गोदिन शर्मा
- वृंदावन मिश्र
- रामबहोरी करवरिया
- हीरालाल मिश्र

13. 9- चित्रकूट में स्वतंत्रता संग्राम का प्रारंभ किस कालखंड में हुआ ? * 1 point

Mark only one oval.

- 1862-1866
- 1857-1861
- 1872-1876
- 1867-1871

14. 10- चित्रकूट आश्रम नामक पत्र का संपादन किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने किया था ? * 1 point

Mark only one oval.

- कामता राजोल
- जुगुल किशोर
- गोदीन शर्मा
- लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री

15. 11- चित्रकूट का शेर किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ? * 1 point

Mark only one oval.

- ब्रह्म दिन त्रिपाठी
- रामबहोरी करवरिया
- रामशरण गर्ग गोदिन शर्मा
- गोदिन शर्मा

16. 12- कर्वी में तिलक आश्रम की स्थापना किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने की ? * 1 point

Mark only one oval.

- लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री
- गोदीन शर्मा
- युगुल किशोर
- रामबहोरी करवरिया

17. 13- ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित गीत था? * 1 point

Mark only one oval.

- छीन सकती है नहीं सरकार वंदे मातरम।
- सारे जहां से अच्छा हिंदू सीता हमारा।
- ए मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी।
- ए मेरे प्यारे वतन ए मेरे बिछड़े चमन तुझ पर दिल कुर्बान।

(122)

18. 14- चित्रकूट के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ने कहां नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश किया ? * 1 point

Mark only one oval.

- धुस का मैदान
- गणेश बाग
- कोठी तालाब
- पीली कोठी

19. 15- चित्रकूट के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जिन्होंने निराला संघर्ष क्रांति किरण नामक पुस्तक लिखी ? * 1 point

Mark only one oval.

- जागीर कामता राजोल
- ब्रह्मदीन
- रामबहोरी करवरिया
- रामकिशोर करवरिया

20. 16- पाठा गाँधी चित्रकूट के किस स्वतंत्रता संग्राम सेनानी को कहा जाता है ? * 1 point

Mark only one oval.

- रामकिशोर
- हीरालाल
- शिव कुमार त्रिपाठी
- गुलाब चंद्र अग्रवाल

परिशिष्ट - IV

जीवन वृत्त

व्यक्तिगत सूचना



नाम : राम निहोरे

पिता का नाम : श्री राम विलास

माता का नाम : श्रीमती फूलमती

जन्मतिथि : 07 अक्टूबर 1989

पता : ग्राम-नयापुरवा, पोस्ट- रुकमा खुर्द, तहसील-मानिकपुर, जिला-चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)

पिन कोड : 210205

मोबाइल नंबर : 8887440736

ईमेल : ram1989nihore@gmail.com

क्रम संख्या	परीक्षा का नाम	बोर्ड/विश्वविद्यालय का नाम	वर्ष	प्राप्तांक	श्रेणी	प्रतिशत
1	हाई स्कूल	यू०पी० बोर्ड इलाहाबाद	2005	372	प्रथम	62%
2	इंटरमीडिएट	यू०पी० बोर्ड इलाहाबाद	2007	337	प्रथम	67%
3	स्नातक	सी०एस०जे० एम० विश्वविद्यालय कानपुर	2011	795	द्वितीय	58.88%
4	शिक्षा स्नातक	बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी	2022	845	प्रथम	70.41

घोषणा- मैं एतत् द्वारा घोषणा करता हूं कि उपरोक्त सभी जानकारी मेरे संज्ञानानुसार सर्वोत्तम रूप से सत्य है |

दिनांक-
23/11/25
स्थान- अतर्रा (बांदा)

हस्ताक्षर
(राम निहोरे)

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता का अध्ययन



"दुश्मन की गोलियों का सामना हम करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे,"

'यदि कोई युवा मातृभूमि की सेवा नहीं करता है, तो उसका जीवन व्यर्थ है.'

-चंद्रशेखर आजाद

लड़ो लड़ नहीं सकते, बोलो बोल नहीं सकते, लिखो लिख नहीं सकते, साथ दो साथ नहीं दे सकते, काम करने वालो का मनोबल बढ़ाओ यदि वो भी नहीं कर सकते हो, जो कर रहे हैं, उनका मनोबल मत तोड़ों क्योंकि वो तुम्हारे हिस्से की लड़ाई लड़ रहा है।

-खुदी राम बोस





"तर्क किए बिना किसी बात को, आँख मूंद कर मान लेना भी एक प्रकार की.. मानसिक गुलामी है।"

"जो गलत है उसका विरोध हमेशा सीना ठोककर कीजिये इतिहास आपको बागी कह सकता है गुलाम नहीं"

-भगत सिंह

 मूल्य- 99₹

9 789356 809895